ISSN 2454-504X 16-28 फ़रवरी, 2025 राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका RNI No. DELHIN/2002/08663

₹ 15

दूसरा मत

दूसरा मत कामयाबी के 22 साल

www.doosramat.com

YOUTUBE DOOSRA MAT

जहां सच बोलते हैं शब्द

गले पड़ गई 'हार'

B.D. COLLEGE, PATNA

(NAAC ACCREDITED GRADE 'B')

(A CONSTITUENT UNIT OF PATLIPUTRA UNIVERSITY, PATNA)

Email: principalbdcollegepatna@gmail.com | https://bdcollegepatna.co.in

Achievements : AT A GLANCE

- B.D. College, Patna is Co-ED College.
- B.D. College, Patna produced several Topper is BSEB's Inter
- Examination and University's UG +PG Examination. (MBA/MCA/BCA/BBM/B.SC- IT/IMB/BIO-TECHNOLOGY).
- B.D. College, Patna is consistently winner in University level Sports (Cricket + Badminton).
- NCC and NSS unit of this College tremendously accomplished social work in pandemic Covid- 19.
- B.D. College, Patna offers various Traditional and Vocational course under UG and PG Level.
- Last Year 65 (Sixty Five) students of this College got job under Campus Selection by various MNC Like - Wipro / HP / P&G.
- College have well settled and equipped E-Library for our Students.
- College have well settled and equipped Language Lab for our Students.
- College have well and updated Gym for our Students.
- Free High Speed WI - FI Facility is available for our Students.
- College have modern Computer Lab.
- College offer free classes for personality development, English Spoken.
- For poor and weaker Students College is providing special Remedial Classes.
- Exaursion is organized on regular basis by the College for the academic Purpose.
- College and Campus is under surveillance of CCTV Cameras.

PROF (DR.) VIVEKANAND SINGH
PRINCIPAL

B.S. COLLEGE, DANAPUR

Estd. : 1954

PATNA - 800012

(A Constituent Unit of Patliputra University, Patna-20

Prof. Sharad Kumar Yadav
Hon'ble Vice-Chancellor
Patliputra University

Prof. (Dr.) Madhu Prabha Singh
Principal

UG Level Regular Courses

- Hindi
- English
- Urdu
- History
- Pol. Science
- Psychology
- Economics
- Philosophy
- Physics
- Chemistry
- Mathematics
- Botany
- Zoology

PG Level Regular Courses

- History
- Pol. Science
- Psychology
- Economics
- Physics
- Chemistry
- Mathematics
- Botany
- Zoology

Vocational Courses

- M.B.A
- M.C.A
- B. Lis.
- B.B.A.
- B.C.A.
- B. Sc. I.T.
- B.T.T.M.
- B.Com. (Self Finance Course)

Salient Features :

- Highly Qualified and Experienced Faculty
- NCC Unit
- NSS Unit
- Automated Library
- Conference Hall
- Wi-Fi Campus
- Ragging Free Campus
- Language Lab
- Smart Classes & Interactive Learning
- Canteen Facility
- Computer Lab
- Science Lab
- CCTVs Equipped Campus
- Girls Common Room
- Sports Ground
- Purified Cold Water
- Cultural & Social Activities

Website : bscollegedanapur.ac.in

E-mail ID : bscollegednr@gmail.com

दूसरा मत
जहां सच बोलते हैं शब्द

RNI No. DELHIN/2002/08663

वर्ष: 24, अंक: 04

16-28 फ़रवरी, 2025

संपादक
ए आर आज़ाद

संपादकीय सलाहकार
मन्त्रेश्वर झा (IAS R.)
(पूर्व प्रमुख सलाहकार, योजना आयोग, भारत सरकार)

प्रमुख परामर्शी एवं प्रमुख क़ानूनी सलाहकार
न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद
(अवकाश प्राप्त न्यायधीश, पटना उच्च न्यायालय)

प्रमुख सलाहकार
जियालाल आर्य (IAS R.)
(पूर्व गृह सचिव एवं पूर्व चुनाव आयुक्त बिहार)

ब्यूरो प्रमुख
रुफी शमा

राजनीतिक संपादक
देवेंद्र कुमार प्रभात

बेगूसराय ब्यूरोचीफ
सह ब्यूरो बिहार
एस आर आज़मी

ब्यूरो ऑफिस बिहार
बजरंगबली कॉलोनी, नहर रोड,
जज साहब के मकान के सामने, फुलवारी शरीफ,
पटना, बिहार-801505

संपादकीय एवं पंजीकृत कार्यालय
81-बी, सैनिक विहार, फ़ेज़-2, मोहन गार्डेन,
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
Email: doosramat@gmail.com
MOBILE. 9810757843
Whatsapp. 9643709089

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
ए आर आजाद द्वारा 81-बी, सैनिक विहार, फ़ेज़-2, मोहन गार्डेन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली-110059 से प्रकाशित एवं शालीमार ऑफसेट प्रेस, 2622, कूचा चेलान, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 से मुद्रित।
संपादक-ए आर आज़ाद

*पत्रिका में छपे सभी लेख, लेखकों के निजी विचार हैं, इनसे संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। पत्रिका में छपे लेखों के प्रति संपादक की जवाबदेही नहीं होगी।
सभी विवादों का समाधान दिल्ली की हद में आने वाली सक्षम अदालतों में ही होगा।*

**उपरोक्त कुछ पद अवैतनिक हैं।*

आवरण

32
आप का आपदाकाल

महापुरुष

12
रामकृष्ण परमहंस

विचार

... राजनीति में भागीदारी
40

बेबाक

42
चीन : विकास यह होता है !

प्रसंगवश

22
... बेटी बचाना होगा

ज़ायक़ा

24
बनारसी मलइयो

जायज़ा

46
... बदलती सियासी तस्वीर

दृष्टिकोण : ...से मिलेगी वैश्विक पहचान 08
दृष्टिपथ : सनातन धर्म का आमुख 10
शख़्सियत : पं. दीनदयाल उपाध्याय 14
व्यक्तित्व : साधक बाबा आमटे 16
विमर्श : किताबों के मेले में 56
दिशा : शिक्षा में सकारात्मक बदलाव 60
कहानी : भीष्म साहनी- ओ हरामजादे 62

SRI ARVIND MAHILA COLLEGE, PATNA

(A Constituent Unit of Patliputra University, Patna)
www.samcpatna.ac.in | samcpatna0612@gmail.com

NAAC ACCREDITED
GRADE 'B'

NAAC
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

The Glory of Shri Arvind Mahile College

श्री अरविन्द महिला कॉलेज अपनी स्थापना के उपरांत से लगातार पटना के नारी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। स्व० जगदीश जमैयार संस्थापक एवं स्व० कृष्णा जमैयार प्रथम प्राचार्या का महाविद्यालय के स्थापना एवं विकास के लिये किये गये प्रयास सराहनीय हैं। स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता, शिक्षित स्त्रियों की सामाजिक उपयोगिता पटना की लड़कियों को पढनें का समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से श्री अरविन्द महिला कॉलेज की स्थापना 15 अगस्त 1960 में किया गया था । नारी शिक्षा के क्षेत्र में श्री अरविन्द महिला कॉलेज एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान के रुप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में पूर्णतः सफल रहा है।

A Centre of Value-Based Education

- कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय के सभी विषयों में इंटर, स्नातक एवं
- स्नाकोत्तर स्तर तक की पढाई
- बी०बी०एम०, बी०सी०ए० एवं बी०लिस० की पढ़ाई
- बीकॉम की सेल्फ फाइनेंस नामांकन सुविधा
- वाई फाई कैम्पस
- छात्रावास की सुविधा
- स्मार्टबोर्ड युक्त कक्षाएं
- ऑनलाईन नामाकन एवं परीक्षा
- विशाल खेलकूद मैदान
- स्टेडियम
- एकेडमिक कैलेण्डर
- तीन आधुनिक सुसज्जित आडिटोरियम
- सुसज्जित कॉमन रूम
- जिम (व्यायामशाला) की सुविधा
- आधुनिक सुसज्जित प्रयोगशालाएं
- सोलर ऊर्जा
- ऑटोमेटेड लाइब्रेरी
- रेनवाटर हारवेस्टिंग प्लांट
- एन०सी०सी०
- एन०एस०एस०
- पालना घर
- नियमित खेलकूद सक्रियता
- रैम्प की सुविधा.
- नियमित कैरियर काउंसिलिंग
- मासिक न्यूज बुलेटिन

Prof. (Dr.)Sadhana Thakur
Principal

दूसरा मत

महाशिवरात्रि
की
हार्दिक
शुभकामनाएं

पढ़ें और पढ़ाएं
दूसरा मत

एक शुभचिंतक, दिल्ली

अब डर काहे का

ए आर आज़ाद

देश की राजनीति की दिशा क्या बदली, देश के हालात ही बदलते चले गए। सियासत का शोर अब विचलित करने लगा है। सियासत शब्द में अब न तो कोई कशिश रह गई है। और न ही कोई चुम्बकीय गुण। सियासत बाज़ारू औरत बन गई है, जिसे वो सब पा सकता है, जिसने लाज, शर्म, हया और अच्छा-बुरा का फर्क़ मिटा दिया हो। और वो भी बखूबी पा सकता है - जिसने अपने ज़मीर और अपनी अंतर्रात्मा से समझौता कर लिया हो। पैसा और धन तो इसकी पहली शर्त है। यही वजह है कि सियासत के बाज़ारू होते ही धन कुबेर के लिए सियासत रेड कारपेट की तरह बिछ गई है। अब सियासत में जो लोग आदर्श और ईमानदारी खोज रहे हैं, वो किसी मुग़ालते में जी रहे हैं। अब सियासी दलों में आत्मा ही नहीं बची है। बेजान लोग सियासत की स्टियरिंग पकड़े हुए हैं। और इस बेजान हालत में सियासत को रिवर्स गीयर में ले जा रहे हैं। और इसी ग़लती को सही क़रार देने के लिए ही राजनीति का यह पूरा तानाबाना बुना गया है।

देश की राजनीति यूं ही चलती रही तो फिर सवाल लाज़मी हो जाता है कि यह सियासत देश को किस सूरत में ले जाकर दम लेगी? आज किसी को किसी चीज़ का डर ही नहीं सताता है। हत्ता कि एजेंसी तक में अब लिहाज़ और शऊर बाक़ी नहीं रह गया है। जिसके हाथ में लाठी उसने भैंस पर दावा ठोकना शुरू कर दिया है। संविधान तो जुमला बनाकर रख दिया गया है। संविधान सिर्फ़ और सिर्फ़ शपथ लेने और क़समें खाने तक के लिए महदूद रह गया है। यह सच आईने की तरह साफ़ है। इसलिए कि सरकारी एजेंसियां भी अब संविधान के दायरे में नहीं बल्कि अपने लाभ के दायरे में रहकर काम करने लगी है। चुनाव आयोग तक संविधान की धज्जियां उड़ाता हुआ देखा गया है। कई बार रंगे हाथों पकड़ा गया है। लेकिन अदालत तक घसीटने के बावजूद अदालत भी उससे क़ानून के दायरे में अदावत करती हुई नज़र नहीं आई है। अदालत जब मुजरिम और जुल्म करने वालों के साथ अदावत करना छोड़ दे या यूं कहें कि उससे अदावत की जगह मुहब्बत करने लगे, तो समझने के लिए काफ़ी है कि पूरे कुएं में ही भांग पड़ा हुआ है। इंसाफ़ पसंद लोग इंसाफ़ किस तरह पाएंगे, यह एक ऐसा सवाल है, जो अब यक्ष प्रश्न बनता जा रहा है। लोग तिकड़म करके पाक-साफ़ होकर निकल जा रहे हैं। अदालतें कहीं मौन हो जाती हैं तो कहीं गौण हो जाती हैं। इस खेल में इंसाफ़ से विश्वास डिगने लगता है। न्याय से भरोसा टूटने लगता है। अगर ऐसा ही लगातार होता चला गया, तो फिर इस देश की सियासत और इस देश की सरकारी एजेंसियों और अदालतों में फिर क्या फ़र्क़ रह जाएगा?

जिस तरह से अदालत में तारीख़ पे तारीख़ एक रवायत बनती गई। ठीक उसी तरह से आज जनमानस के बीच झूठ पर झूठ और नाइंसाफ़ी पर नाइंसाफ़ी का बोध उसकी पीठ और दिल का बोझ बनता जा रहा है। जनमानस कब तक इस बोझ को अपने कंधों पर उठाता रहेगा और भारी मन से ये सब देखता रहेगा, कहना मुश्किल है। लेकिन यह समय सबको मिलकर सोचने का है। कम से कम भारत इस तरह से तो नहीं विश्वगुरु बन सकता है!

सत्ता मदमस्त होती है। उस पर नकेल कसने का काम विपक्ष करता है। विपक्ष का काम या तो राजनीतिक दल करते हैं या फिर पत्रकार। लेकिन राजनीतिक दल तो अब इस लायक़ रह ही नहीं गए। सवाल उठता है कि तो क्या पत्रकार रह गए हैं? ज़्यादातर पत्रकारों ने तो पहले से ही अपने आपको गिरवी रख दिया है। इसलिए वह जब अपनी भूमिका में ही नहीं है, तो फिर विपक्ष की भूमिका में कहां से आ सकता है? मीडिया ने तो देश को ही तबाह कर दिया है। मीडिया को लेकर चौथे स्तंभ का जो एक भ्रम था, उस भ्रम से भी उसने परदा उठा दिया है। नतीजे में मीडिया के सच परोसने का जो डर हाकिम से लेकर राजनेताओं तक में था, वो ख़त्म हो गया है। यानी अब सबको यह आभास होने लगा है कि अब डर काहे का?

जय हिन्द! जय भारत!! ●

‘विद्या शक्ति’से मिलेगी वैश्विक मंचों पर पहचान

दीप्ति अंगरीश

‘भारतं देवभूमिं च यत्र ज्ञानं विज्ञानं च।
नित्यमेव समृद्धं च शाश्वतं च महत्तया॥’

यह श्लोक भारत की प्राचीन ज्ञान-विज्ञान परंपरा को संक्षेप में व्यक्त करता है। यदि इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि भारत न केवल प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, बल्कि इसकी जड़ों में ज्ञान और विज्ञान गहराई से रचे-बसे हैं। इन क्षेत्रों में भारत का योगदान अद्वितीय रहा है—अतीत में भी और वर्तमान में भी।

प्राचीन काल में भारत ने गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और विभिन्न विज्ञानों में महत्वपूर्ण खोजें की थीं। आज भी भारतीय वैज्ञानिक और गणितज्ञ वैश्विक स्तर पर अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पहचाने जाते हैं। वर्तमान समय में, जब वैश्विक प्रतिस्पर्धा तेजी से बढ़ रही है, हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है। यह प्रतिस्पर्धा हमें सिखाती है कि निरंतर आगे बढ़ने और बिना थके लक्ष्य प्राप्त करने से ही सफलता संभव है।

काशी तमिल संगमम भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं का एक अद्वितीय संगम है, जो देश की विद्या शक्ति को उजागर करता है। यह आयोजन उत्तर और दक्षिण भारत की प्राचीन विद्वत्ता, कला, दर्शन और भाषा की समृद्ध विरासत को जोड़ने का प्रभावी माध्यम है। काशी तमिल संगमम मात्र एक सांस्कृतिक उत्सव नहीं है, बल्कि यह भारत की शैक्षिक और बौद्धिक समृद्धि को प्रदर्शित करने वाला एक महत्वपूर्ण मंच है, जो देश की एकता और विविधता दोनों का उत्सव मनाता है।

इस संगमम में काशी और तमिलनाडु के बीच गहरे सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंधों को

उजागर किया जाता है, जो यह दशार्ता है कि भारत की विद्या परंपरा केवल किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे देश में समान रूप से प्रवाहित होती है। संस्कृत और तमिल जैसी प्राचीन भाषाओं के ज्ञान, साहित्य और आध्यात्मिकता के आदान-प्रदान के माध्यम से यह संगमम भारत की विद्या शक्ति का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है, खासतौर पर गणित और विज्ञान के क्षेत्रों में। ये दोनों ही विषय आधुनिक समाज के लिए अनिवार्य हैं। उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह बेहद जरूरी है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को और सशक्त बनाएं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ₹विद्या शक्ति₹ पहल शुरू की गई है, जो छात्रों को केवल उच्च गुणवत्ता की शिक्षा ही नहीं, बल्कि उन्हें हर दिशा में सशक्त बनाने के लिए तैयार है। यह पहल भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए तैयार है, जो विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाएगी और उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करेगी।

'विद्या शक्ति' का उद्देश्य छात्रों को गणित और विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक साधन, प्रशिक्षण, और प्रेरणा प्रदान करना है। यह पहल भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक नई क्रांति लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह छात्रों को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में समान रूप से गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करेगी, जिससे वे वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना सकें।

'विद्या शक्ति' के तहत, छात्रों को स्मार्ट क्लासरूम्स, इंटरएक्टिव डिजिटल कंटेंट, और वास्तविक जीवन से जुड़े परियोजनाओं के माध्यम से गणित और विज्ञान की शिक्षा दी जाएगी। इसके अलावा, छात्रों को न केवल बुनियादी शिक्षा दी जाएगी, बल्कि उन्हें वैज्ञानिक अनुसंधान, नवाचार, और प्रौद्योगिकी में भी विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। यह पहल छात्रों को केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रखेगी, बल्कि उनके भीतर समस्या समाधान की क्षमता, रचनात्मक सोच और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को भी बढ़ावा देगी।

इस पहल में स्मार्ट लर्निंग प्लेटफॉर्म्स, इंटरनेशनल साइंस और मैथ्स ओलंपियाड्स, और गणितीय मॉडलिंग व प्रयोगशाला आधारित शिक्षा जैसे कार्यक्रमों को शामिल किया जाएगा, जिससे हमारे विद्यार्थी वैश्विक स्तर पर अपने कौशल का प्रदर्शन कर सकेंगे। इसके साथ ही, इस पहल के माध्यम से विद्यार्थियों को अनुसंधान और तकनीकी क्षेत्र में नए प्रयोग करने के अवसर मिलेंगे, जो उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए पूरी तरह से तैयार करेगा।

यह पहल न केवल छात्रों को अकादमिक रूप से सशक्त बनाएगी, बल्कि उन्हें व्यावहारिक जीवन में सफलता हासिल करने के लिए आवश्यक उपकरण भी प्रदान करेगी। इसके माध्यम से भारत के छात्र विश्वभर में अपनी पहचान बना सकेंगे और अपने कौशल से दुनिया में एक नया मुकाम स्थापित करेंगे।

'विद्या शक्ति' के माध्यम से भारत को विज्ञान और गणित के क्षेत्र में दुनिया का सबसे अग्रणी राष्ट्र बनाने का सपना अब साकार होने की दिशा में है। भारत के हर छात्र को यह अवसर मिलेगा कि वह अपनी पूरी क्षमता के साथ दुनिया के किसी भी कोने में अपनी पहचान बना सके और भारत को गर्व महसूस करवा सके। यह पहल न केवल एक शिक्षा प्रणाली का रूपांतरण है, बल्कि यह भारतीय युवाओं को नई दिशा देने का काम करेगी, जिससे भारत फिर से अपने ऐतिहासिक विज्ञान और गणित के योगदान को वैश्विक मंच पर सबसे प्रमुख स्थान दिला सके।

कहना गलत नहीं होगा कि ₹विद्या शक्ति₹ पहल केवल शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए नहीं है, बल्कि यह भारतीय छात्रों को वह आत्मविश्वास, ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करेगी जिससे वे न केवल अपने देश में, बल्कि दुनिया भर में अपनी पहचान बना सकें। यह पहल भारत को विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अग्रणी बनाएगी और भारत को वैश्विक शिक्षा जगत में एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होगी। ●

(लेखिका वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सनातन धर्म का आमुख

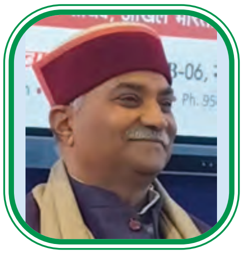

डॉ. बालमुकुंद पांडेय
संगठन सचिव, इतिहास संकलन योजना

श्रीमद्भगवद्गीता मानवीय समाज व ब्रह्मांडीय चेतना को समझने में हमें मौलिक दृष्टि प्रदान करती हैं। भारत सांस्कृतिक उत्सवों का देश हैं, जो अपने सांस्कृतिक सौंदर्य से मानवीय समाज को उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक योजित करता है। भारत के करोड़ों ज्ञान पिपासु श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय ज्ञान परंपरा का अनूठा ग्रंथ है। यह सनातन धर्म और शील की चर्चा करता है। यह ज्ञानराशि भारतीय ज्ञान परंपरा की संवाहिका और सनातन धर्म को उन्नयित करने वाली है। हजारों वर्षों से यह मानवीय समुदाय का मार्गदर्शन कर रही है। यह मानवीय समुदाय को प्रेम, भाईचारा, न्यायप्रियता, सत्यनिष्ठ होकर कार्य करने और शांतिपूर्ण माहौल में 'सच्चिदानंद' की प्राप्ति का पाठ पढ़ाती है।

श्रीमद्भगवद्गीता का बार-बार अध्ययन करके मानसिक और आध्यात्मिक शरीर को शुद्ध किया जा सकता है। इस महाकाव्य के आध्यात्मिक प्रभाव से मन की एकाग्रता का उन्नयन होता हैं। पाशविक और आसुरी शक्तियों का विनाश होता है, शरीर पर आत्मा का प्रबल नियंत्रण होता है। इसके आध्यात्मिक प्रभाव से आस-पास के लोगों और गतिशील दुनिया को समझने और स्वयं की सामान्य इच्छा को बढ़ाने में सहयोग मिलता है। यह ग्रंथ हमें उन पाशविक शक्तियों के बीच तनातनी को गंभीरता से समाप्त करने में मदद करता है। यह ग्रंथ व्यक्ति को वासना(काम, क्रोध, मद और लोभ) को विजित करने,

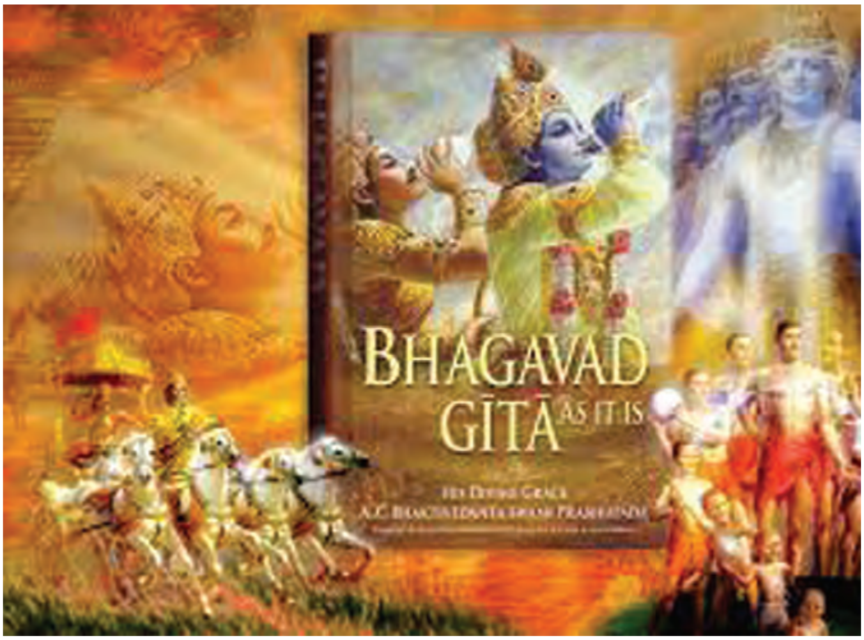

लालच की प्रवृत्ति को समूल नष्ट करने में सहायता प्रदान करता है। व्यक्ति को आत्म नियंत्रित विवेक, ईश्वर प्रदत्त ज्ञान और विवेक का अनुभव प्रदान करता है। व्यक्ति को ऐसी ईश्वर प्रदत विवेक प्रदान करता है, जिससे उसके व्यवहार, चरित्र, पर्यावरण और व्यक्तित्व में गुणात्मक उन्नयन होता है। श्रीमद्भगवद्गीता के स्वाध्याय से मनुष्य में विवेक जाग्रत होता है। इस विवेक से वह समस्त सांसारिक समस्याओं को शमित करके अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ सकता है।

समकालीन समय में भारतीय ज्ञान परंपरा ने यह प्रमाणित किया है कि इसमें वैश्विक नेतृत्व और विशिष्टता का गुण है। इसमें वह गुरुता है, जिससे यह वैश्विक नेतृत्व प्रदान कर सकता है। इस ज्ञान परंपरा को संतों, संन्यासियों, प्रचारकों और महामंडलेश्वरों ने अपने व्यक्तिगत जीवन में अनुसरित किया है। सनातन धर्म के मूल तत्व वैश्विक स्तर पर अपनी मौलिक उपादेयता के कारण सदैव से प्रासंगिक रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता मानवीय समाज को प्रेम, भाईचारा साथ ही राजनीति, इतिहास एवं संस्कृति के विविध पक्षों से भी परिचित कराता है। इससे मानवीय समाज में व्यक्तियों में परस्पर प्रेम-राग प्रस्फुटित होता है। यह संपूर्ण हिंदू समाज के वैचारिक मंथन की साकार अभिव्यक्ति है। समकालीन समय में श्रीमदभगवद्गीता बौद्धिक - सांस्कृतिक परंपरा और भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण भूमिका को निभा रही है।

श्रीमद्भगवद्गीता में दैवीय संपदा और आसुरी संपदा से युक्त व्यक्तियों का उल्लेख है। यह ज्ञानराशि व्यक्तियों को ज्ञान, भक्ति एवं कर्म से जोड़कर मानसिक ऊर्जा उत्पन्न कर रही है, जिससे व्यक्ति अपने सनातन धर्म, सांस्कृतिक विरासत एवं राष्ट्रीय गौरव को पहचान करके समाज को नूतन दिशा दे सके।

प्रकृति में वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है, जो सुख और दुःख में साम्य स्थिति बनाए रखे। सत्य का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है। सत्य और असत्य के विषय कोऋषियों और साधु संतों ने महसूस किया है। इस ब्रह्मांड में जो कुछ भी मौजूद है, वह सब सनातन ज्ञान परंपरा में कहीं न कहीं है। यह ज्ञान राशि भयविहीन और तनावमुक्त होकर अपने कर्तव्यों के पालन करने का संदेश देती है। ●

(लेखक अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, झंडेवालान केशवकुंज के राष्ट्रीय संगठन सचिव हैं)

महान साधक थे रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं। 19 वीं शताब्दी में श्री रामकृष्ण परमहंस एक रहस्यमयी और महान योगी पुरुष थे। जिन्होंने काफी सरल शब्दों में अध्यात्मिक बातो को सामान्य लोगो के सामने रखा। जिस समय हिन्दू धर्म बड़े संकट में फंसा हुआ था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्मं में एक नयी उम्मीद जगाई।

रामकृष्ण के जीवन में अनेक गुरु आए पर अन्तिम गुरुओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक थी भैरवी जिन्होने उन्हे अपने कापालिक तंत्र की साधना करायी और दूसरे थे श्री तोतापुरी उनके अन्तिम गुरु। गंगा के तट पर दक्षिणेश्वर के प्रसिद्व मंदिर में रहकर रामकृष्ण मां काली की पूजा किया करते थे। गंगा नदी के दूसरे किनारे रहने वाली भैरवी को अनुभुति हुई कि एक महान संस्कारी व्यक्ति रामकृष्ण को उसकी दीक्षा की आवश्यकता हैं। गंगा पार कर वो रामकृष्ण के पास आयी तथा उन्हे कापालिक दीक्षा लेने को कहा। रामकृष्ण ने भैरवी द्वारा बतायी पद्धति से लगातार साधना कर मात्र तीन दिनों में ही सम्पूर्ण क्रिया में निपुण हो गए।

रामकृष्ण के अन्तिम गुरु तोतापुरी थे जो सिद्ध तांत्रिक तथा हठ योगी थे। उन्होने रामकृष्ण को दीक्षा दी। रामकृष्ण को दीक्षा दी गई परमशिव के निराकार रुप के साथ पूर्ण संयोग की। पर आजीवन तो उन्होने मां काली की आराधना की थी। वे जब भी ध्यान करते तो मां काली उनके ध्यान में आ जाती और वे भावविभोर हो जाते। जिससे निराकार का ध्यान उनसे नहीं हो पाता था।

तोतापुरी ध्यान सिद्ध योगी थे। उनको अनुभव हुआ कि रामकृष्ण के ध्यान में मां काली प्रतिष्ठित हैं। उन्होने शक्ति सम्पात से रामकृष्ण को निराकार ध्यान में प्रतिष्ठित करने के लिये बगल में पड़े एक शीशे के टुकड़े को उठाया

और उसका रामकृष्ण के आज्ञाचक्र पर आघात किया, जिससे रामकृष्ण को अनुभव हुआ कि उनके ध्यान की मां काली चूर्ण-विचूर्ण हो गई हैं और वे निराकार परमशिव में पूरी तरह समाहित हो चुके हैं। वे समाधिस्थ हो गये। ये उनकी पहली समाधी थी जो तीन दिन चली। तोतापुरी ने रामकृष्ण की समाधी टूटने पर कहा। मैं पिछले 40 वर्षो से समाधि पर बैठा हूं पर इतनी लम्बी समाधी मुझे कभी नही लगी।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में कामारपुकुर नामक गांव में 18 फरवरी 1836 को एक निर्धन निष्ठावान ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनके जन्म पर ही ज्योतिषियों ने रामकृष्ण के महान भविष्य की घोषणा कर दी थी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुन इनकी माता चन्द्रा देवी तथा पिता खुदिराम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इनको बचपन में गदाधर नाम से पुकारा जाता था। पांच वर्ष की उम्र में ही वो अदभुत प्रतिभा और स्मरणशक्ति का परिचय देने लगे। अपने पूर्वजों के नाम व देवी-देवताओं की स्तुतियां, रामायण, महाभारत की कथाएं इन्हे कंठस्थ याद हो गई थी।

1843 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का पूरा भार इनके बड़े भाई रामकुमार पर आ पड़ा था। रामकृष्ण जब नौ वर्ष के हुए इनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय निकट आया। उस समय एक विचित्र घटना हुई। ब्राह्मण परिवार की परम्परा थी कि नवदिक्षित को इस संस्कार के पश्चात अपने किसी सम्बंधी या किसी ब्राह्मण से पहली शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। एक लुहारिन जिसने रामकृष्ण की जन्म से ही परिचर्या की थी। बहुत पहले ही उनसे प्रार्थना कर रखी थी कि वह अपनी पहली भिक्षा उसके पास से प्राप्त करे। लुहारिन के सच्चे प्रेम से प्रेरित हो बालक रामकृष्ण ने वचन दे दिया था।

अतः यज्ञोपवीत के पश्चात घर वालों के लगातार विरोध के बावजूद इन्होने ब्राह्मण परिवार में प्रचलित प्रथा का उल्लंघन कर अपना वचन पूरा किया और अपनी पहली भिक्षा उस लुहारिन से प्राप्त की। यह घटना सामान्य नही थी। सत्य के प्रति प्रेम तथा इतनी कम उम्र में सामाजिक प्रथा के इस प्रकार उपर उठ जाना रामकृष्ण की आध्यात्मिक क्षमता और दूरदर्शिता को ही प्रकट करता है।

रामकृष्ण का मन पढ़ाई में न लगता देख इनके बड़े भाई इन्हे अपने साथ कलकत्ता ले आये और अपने पास दक्षिणेश्वर में रख लिया। यहां का शांत एवं सुरम्य वातावरण रामकृष्ण को अपने अनुकूल लगा। 1858 में इनका विवाह शारदा देवी नामक पांच वर्षीय कन्या के साथ सम्पन्न हुआ। जब शारदा देवी ने अपने अठारहवें वर्ष मे पदार्पण किया तब श्री रामकृष्ण ने दक्षिणेश्वर के अपने कमरे में उनकी षोड़शी देवी के रुप में आराधना की। यही शारदा देवी रामकृष्ण संघ में माताजी के नाम से परिचित हैं।

रामकृष्ण परमहंस के पास जो कोई भी जाता वह उनकी सरलता, निश्चलता, भोलेपन और त्याग से इतना अभिभूत हो जाता कि अपना सारा पांडित्य भूलकर उनके पैरों पर गिर पड़ता था। गहन से गहन दार्शनिक सवालों के जवाब भी वे अपनी सरल भाषा में इस तरह देते कि सुनने वाला तत्काल ही उनका मुरीद हो जाता। इसलिए दुनियाभर की तमाम आधुनिक विद्या, विज्ञान और दर्शनशास्त्र पढ़े महान लोग भी जब दक्षिणेश्वर के इस निरक्षर परमहंस के पास आते तो अपनी सारी विद्वता भूलकर उसे अपना गुरु मान लेते थे।

इनके प्रमुख शिष्यों में स्वामी विवेकानन्द, दुर्गाचरण नाग, स्वामी अद्भुतानंद, स्वामी ब्रह्मानंदन, स्वामी अद्यतानन्द, स्वामी शिवानन्द, स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी योगानन्द थे। श्री रामकृष्ण के जीवन के अन्तिम वर्ष कारुण रस से भरे थे। 15 अगस्त 1886 को अपने भक्तों और स्नेहितों को दुख के सागर में डुबाकर वे इस लोक में महाप्रयाण कर गए।

रामकृष्ण परमहंस महान योगी, उच्चकोटि के साधक व विचारक थे। सेवा पथ को ईश्वरीय, प्रशस्त मानकर अनेकता में एकता का दर्शन करते थे। सेवा से समाज की सुरक्षा चाहते थे। रामकृष्ण का सारा जीवन अध्यात्म-साधना के प्रयोगों में बीता। वे लगातार कई घंटों तक समाधि में लीन हो जाते थे। चैबीस घंटे में बीस-बीस घंटों तक वे उनसे मिलनेवाले लोगों का दुख-दर्द सुनते और उसका समाधान भी बताते।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के भोले प्रयोगवाद में वेदांत, इस्लाम और ईसाइयत सब एक रूप हो गए थे। निरक्षर और पागल तक कहे जाने वाले रामकृष्ण परमहंस ने अपने जीवन से दिखाया था कि धर्म किसी मंदिर, गिरजाघर, विचारधारा, ग्रंथ या पंथ का बंधक नहीं है। रामकृष्ण परमहंस मुख्यतः आध्यात्मिक आंदोलन के प्रणेता थे। जिन्होंने देश में राष्ट्रवाद की भावना को आगे बढ़ाया। उनकी शिक्षा जातिवाद एवं धार्मिक पक्षपात को नकारती हैं।

विभिन्न धर्मों के माध्यम से रामकृष्ण के रहस्यमय अनुभवों ने उन्हें यह सिखाने के लिए प्रेरित किया कि विभिन्न धर्म पूर्ण ज्ञान और आनंद तक पहुँचने के अलग-अलग साधन हैं और विभिन्न धर्म पूर्ण सत्य की समग्रता को व्यक्त नहीं कर सकते हैं लेकिन इसके पहलुओं को व्यक्त कर सकते हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये उनके परम-शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने एक मई 1897 को बेलुड़ में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इस मिशन की स्थापना के केंद्र में वेदान्त दर्शन का प्रचार-प्रसार है। रामकृष्ण मिशन के उद्देश्य मानवता के सर्वांगीण कल्याण के लिए काम करना, विशेष रूप से गरीबों और दलितों के उत्थान के लिए।

रमेश सर्राफ धमोरा

(लेखक के अपने विचार हैं।)

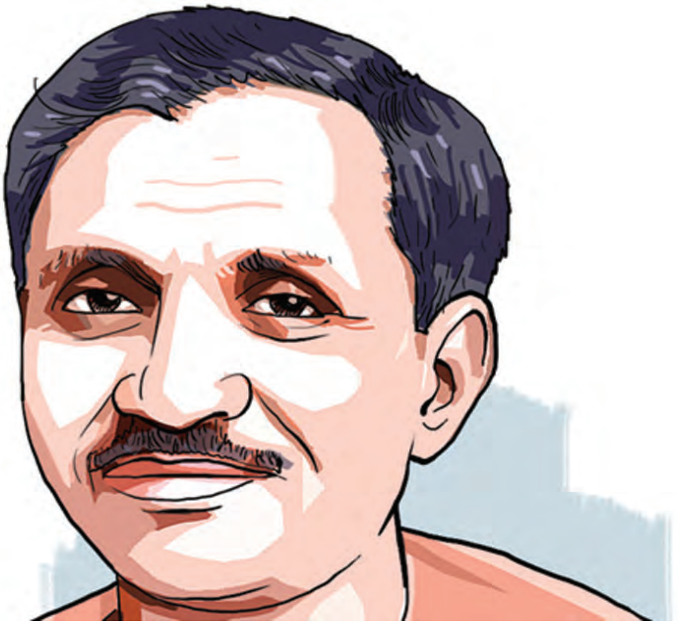

पं दीनदयाल उपाध्याय: पथ प्रदर्शक

हेमेन्द्र क्षीरसागर
वरिष्ठ पत्रकार

भारत के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले पं दीनदयाल उपाध्याय, कुशल संगठक, बौद्धिक चिंतक और भारत निर्माण के स्वप्नद्रष्टा के रूप में आज तलक कालजयी हैं। माता रामप्यारी और पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय के घर 25 सितम्बर, 1916 को मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम में जन्मे पं दीनदयाल उपाध्याय हम सबके प्रेरणास्रोत और मातृभूमि के सच्चे उपासक थे। उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास का समूचा दर्शन दिया। अपनी संस्कृति, संस्कारों, परंपराओं, जीवन मूल्यों के आधार पर देश निर्माण का विचार दिया। विश्व के विकास और कल्याण की सभी संभावनाएं उनके द्वारा दिए गए एकात्म मानव दर्शन में है। जिसकी प्रासंगिकता मानकर सारा विश्व इस मानवीय सिद्धांत पर शोध कर रहा है। ताकि एक मामूली से कद काठी के व्यक्ति ने इतना मार्मिक और सारगर्भित विमर्श समय रहते कैसा उद्वेलित कर दिया।

पं दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन भारतीय चिंतन की दो अवधारणा पर आधारित है। पहली वसुधैव कुटुंबकम्-का सिद्धांत और दूसरी चार पुरुषार्थ। उन्होंने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसके विकास के लिए चार पुरुषार्थ की अवधारणा को स्पष्ट किया। उनका मानना था कि व्यक्ति में प्रतिभा भी है और उसकी आवश्यकताएं भी है लेकिन उसका मन व्यापक होता है। वह भ्रमित हो सकता है। मनुष्य सकारात्मक दिशा में बड़े इसके लिए मन का संतुलन और अनुशासन जरूरी है। यह बुद्धि और विवेक से ही संभव है। इसके लिए चार पुरुषार्थ आवश्यक है इनमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का समावेश है। यदि चार पुरुषार्थ की मयार्दा में व्यक्ति को उसके विकास के सभी अवसर प्रदान किए जाए तो संसार इस श्रेष्ठ स्वरूप को प्राप्त कर सकता है इस्-ाकी कल्पना वेदों में है। यह पूर्ण यानी एकात्म मानव की कल्पना है जिसे पंडित दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद दर्शन के रूप में दिया। जो सारे जगत में अलौकिक है।

पंडित जी के अनछूए जीवन प्रेरक प्रसंग प्रेरणापुंज हैं। सतुत्य, किशोर-ावस्था में एक बार सब्जी बाजार गए और सब्जी बेचने वाली वृद्धा को चवन्नी का भुगतान कर दिया। घर लौटते समय उन्होंने जेब टटोली, तो देखा कि वह वृद्धा को खूंटी चवन्नी दे आए हैं। उनका मन इतना दुखी और द्रवित हो गया कि वह दौड़ते हुए उस वृद्धा के पास गए और उसे क्षमा प्रार्थना के साथ खूंटी चवन्नी वापस लेकर खरी चवन्नी दे दी। क्रम में मध्यप्रदेश जाने के लिए पं

दीनदयाल जी दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर खड़ी गाड़ी के थर्ड क्लास के डिब्बे में बैठ चुके थे। गाड़ी जाने में अभी आधा घंटा शेष था जिसके कारण डिब्बे में बहुत कम यात्री बैठे थे। इसी समय दो औरतें डिब्बे में आई और भीख मांगने लगी। पुलिस के एक सिपाही ने उन्हें देखा और उन्हें गाली देते हुए मारने लगा। पंडित जी कुछ समय तक इस दृश्य को देखते रहे लेकिन अचानक उठ कर उन्होंने पुलिस के सिपाही को पीटने से रोकने का प्रयत्न किया। पुलिस के सिपाही ने अभद्रता से कहा- ह्लयह औरतें चोर हैं और यह तुम्हें तुम्हें परेशानी में डाल सकती हैं। जाओ और अपनी सीट पर बैठो यह मेरा काम है और उसे करने में दखल मत दो।ह्व पंडित जी यह वाक्य सुनते ही क्रोधित हो उठे। शायद जीवन में पहली और अंतिम बार वे इस क्रोधावेश में दिखे थे। उन्होंने पुलिस के सिपाही का हाथ पकड़ते हुए कहा- मैं देखता हूं कि तुम उन्हें कैसे मारते हो। अदालत उन्हें उनके और सामाजिक कार्यों के लिए दंड दे सकती है लेकिन एक स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार को देखना मेरे लिए असहनीय है। पुलिस के सिपाही ने अपनी ड्यूटी को माना और क्षमा की प्रार्थना की। ऐसे एक अबला की रक्षा करने वाले मानवस्पर्शी, संवेदनशील मानवधर्मी थे दीनबंधु दीनदयाल।

आज राष्ट्रवाद का जो स्वरूप दिखाई दे रहा है उसके नींव डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पंडित जी के साथ मिलकर दशकों पहले रखी थी। उन्होंने अपना जीवन देश को समर्पित कर दिया। कार्यकुशलता समर्पण को देखकर डॉक्टर मुखर्जी ने कहा था कि यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाते तो मैं पूरे हिंदुस्तान को बदल देता। वह अंतिम व्यक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति का विकास चाहते थे। एक चौपाई बोलते थे परहिस सरिस धर्म नाहिं भाई... दूसरों की भलाई करने से बड़ा कोई धर्म नहीं होता। पंडित जी ने कहा था हमें सबके लिए काम करना है। जो गरीब है, सबसे पीछे और सबसे नीचे है वह दरिद्र ही अपना भगवान है। उसकी सेवा ही भगवान की सेवा है। पंडित जी का इस भावना और विचार को क्रियान्वित करने आज मानव कल्याण की विविध योजनाएं चलाई जा रही है। पंडित जी के बताए गए मार्ग पर चलकर हम एक शक्तिशाली, गौरवशाली, वैभवशाली और संपूर्ण भारत का निर्माण करेंगे। पथ प्रदर्शक, आदर्श नायक, राष्ट्र के महानिमार्ता पं दीनदयाल उपाध्याय को एक बार पुनः नमनङ्क! वीभत्स, साल 1978 की 10 फरवरी को दीनदयाल लखनऊ से पटना जा रहे थे। इसके लिए वे सियालदाह एक्सप्रेस में बैठे लेकिन 11 फरवरी को अलग सुबह तकरीबन 2 बजे, जब ट्रेन मुगलसराय स्टेशन पर पहुंची, तो वह ट्रेन में नहीं थे। स्टेशन के नजदीक ही उनका पार्थिव देह था। व्यथा अंत्योदय और एकात्म मानववाद के प्रणेता पं दीनदयाल उपाध्याय का महाप्रयाण आज भी एक रहस्यमय है? ●

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

कुष्ठ रोग निवृत्ति के साधक, बाबा आमटे

आनंदवन, चंद्रपुर, महाराष्ट्र में मुरलीधर देवीदास बाबा आमटे का जन्म एक संपन्न देशस्थ ब्राह्मण परिवार में 26 दिसंबर, 1914 को हुआ था। महाराष्ट्र के हिंगणघाट शहर में उनके पिता देवीदास आमटे एक औपनिवेशिक सरकारी अधिकारी थे। मुरलीधर आमटे ने बचपन में ही बाबा उपनाम प्राप्त कर लिया था। बाबा आमटे आठ बच्चों में सबसे बड़े थे। एक धनी जमींदार के सबसे बड़े बेटे के रूप में उनका बचपन एक सुखद बचपन था। लेकिन वे हमेशा भारतीय समाज में व्याप्त वर्ग असमानता से अवगत थे।

बकायदा, कानून में प्रशिक्षित उन्होंने वर्धा में एक सफल कानूनी अभ्यास विकसित किया। वह जल्द ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल होने के लिए औपनिवेशिक सरकार द्वारा कैद किए गए भारतीय नेताओं के लिए एक बचाव वकील के रूप में काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए आश्रम सेवाग्राम में कुछ समय बिताया और गांधीवाद के अनुयायी बन गए। उन्होंने चरखा का उपयोग करके सूत काता। जब गांधी को पता चला कि डॉ. आमटे ने कुछ ब्रिटिश सैनिकों के भद्दे तानों से एक लड़की का बचाव किया था, तो गांधी ने उन्हें नाम दिया-

अभय साधक सत्य का निडर खोजी।

एक दिन बाबा आमटे की मुलाकात एक जीवित लाश और कुष्ठ रोगी तुलसीराम से हुई। तुलसीराम की दुर्दशा देखकर डर से काँप उठे। बाबा आमटे एक सोच और समझ बनाना चाहते थे कि कुष्ठ रोगियों की सही मायने में मदद तभी की जा सकती है जब समाज ‘मानसिक कुष्ठ’ से मुक्त हो। इस सोच को दूर करने के लिए उन्होंने एक बार खुद को एक मरीज के बेसिली का इंजेक्शन लगा लिया। ताकि यह साबित हो सके कि यह बीमारी अत्यधिक संक्रामक नहीं थी। उन दिनों, कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता था। यहां तक कि उन्होंने एक प्रयोग के तहत एक कोढ़ी के जीवाणुओं को अपने शरीर में इंजेक्ट होने दिया ताकि यह साबित किया जा सके कि कुष्ठ रोग अत्यधिक संक्रामक नहीं है। पुनर्वासित और ठीक हुए रोगियों के लिए उन्होंने व्यावसायिक प्रशिक्षण और हस्तशिल्प के विनिर्माण की व्यवस्था की।

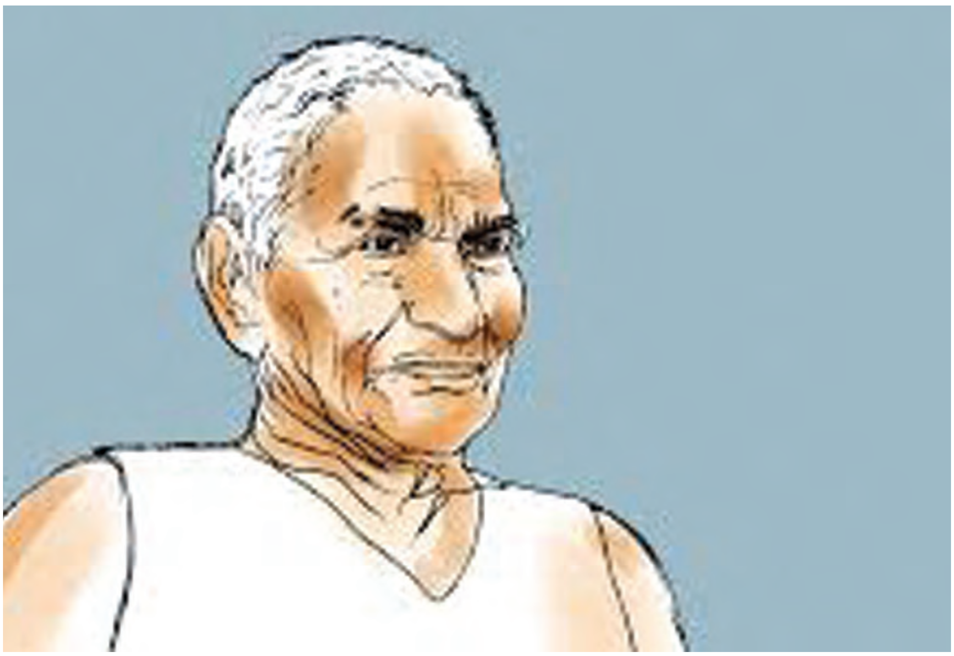

स्तुत्य, बाबा आमटे ने संघर्ष किया और कुष्ठ रोग के उपचार को लेकर कलंक और अज्ञानता को दूर करने की कोशिश की। निवृत्ति के साधक, बाबा आमटे ने महाराष्ट्र में कुष्ठ रोगियों, विकलांगों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के इलाज और पुनर्वास के लिए तीन आश्रमों की स्थापना की। उन्होंने ने एक पेड़ के नीचे आनंदवन में एक कुष्ठ रोग अस्पताल शुरू किया। वर्ष 1985 में उन्होंने शांति के लिए पहला निट इंडिया मिशन शुरू किया। 72 साल की उम्र में उन्होंने कन्याकुमारी से कश्मीर तक 3000 मील से अधिक की दूरी पैदल चलाई। उन्होंने वर्ष 1990 में नर्मदा बचाओ आंदोलन में भी भाग लिया। आनंदवन छोड़ दिया और सात साल तक नर्मदा के तट पर रहे।

वस्तुतः भारत सरकार ने 1971 में बाबा आमटे को पद्मश्री, डां अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, गांधी शांति पुरस्कार, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, टेम्पलटन पुरस्कार और जमनालाल बजाज पुरस्कार सहित कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं। भारत के आधुनिक गांधी बाबा आमटे का 9 फरवरी 2008 को महाराष्ट्र के आनंदवन में देवलोक गमन निधन हो गया। ●

हेमेन्द्र क्षीरसागर

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

युगपुरुष और युगस्रष्टा सिद्ध संत थे रैदास

ललित गर्ग

महामना संत रविदास कहो या रैदास-भारतीय संत परम्परा, भक्ति आंदोलन और संत-साहित्य के जहां महान हस्ताक्षर है, वहीं वे अलौकिक-सिद्ध संत, समाज सुधारक, साधक और कवि हैं। दुनियाभर के संत-महात्माओं में उनका विशिष्ट स्थान है। सद्गुरु रामानंद के पारस स्पर्श ने चर्मकार रैदास को भारत वर्ष का महान चमत्कारी एवं सिद्धात्मा संत बना दिया था। वे निर्गुण रंगी चादरिया रे, कोई ओढ़े संत सुजान को चरितार्थ करते हुए सद्भावना और प्रेम की गंगा को प्रवाहित किया। मन चंगा तो कठौती में गंगा, यह संत शिरोमणि रैदासजी का अमर सूक्ति भक्ति दोहा है, जो आज भी भारत के घर-घर में लोकप्रिय है। वे कबीर के समसामयिक कहे जाते हैं। उन्होंने जीवनपर्यन्त छुआछूत, ऊंच-नीच, जातिवाद जैसी कुरीतियों का विरोध करते हुए समाज में फैली तमाम बुराइयों के खिलाफ पुरजोर आवाज उठाई और उन कुरीतियों के खिलाफ निरंतर कार्य करते रहे। समस्त भारतीय समाज को भेदभाव से ऊपर उठकर मानवता और भाईचारे की सीख देने वाले 15वीं सदी के महान समाज सुधारक संत रैदासजी को जो चेतना प्राप्त हुई, वह तन-मन के भेद से प्रतिबद्ध नहीं है, मुक्त है। उन्होंने अपनी सिद्धियों के जरिए समाज में व्याप्त आडंबरों, अज्ञानता, झूठ, मक्कारी और अधार्मिकता का भंडाफोड़ करते हुए समाज को जागृत करने और नई दिशा देने का प्रयास किया।

रैदासजी ने समता और समरसता की शिक्षा भी दी, और हमेशा दलितों, वंचितों की विशेष रूप से चिंता भी की। स्पष्ट है कि रैदासजी जैसे महान भक्त जाति, क्षेत्र तथा व्यवसाय आदि बंधनों से मुक्त थे। इसलिए रैदासजी हर जाति, वर्ग तथा व्यवसाय के लोगों के लिए पूजनीय है। श्रीकृष्ण, श्रीराम, महावीर, बुद्ध के साथ-ही-साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतों-आदि शंकराचार्य, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा में रविदासजी ने भी धर्म की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य किया। जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद के खिलाफ वातावरण बनाया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके दोहों-विचारों से अस्पर्शित रहा हो। अपनी कथनी और करनी से मृतप्रायः मानव जाति के लिए रविदासजी ने संजीवनी बूंटी का कार्य किया। इतिहास गवाह है, इंसान को ठोंक-पीट कर इंसान बनाने की घटना रविदासजी के काल में, रविदासजी के ही हाथों, उनकी रचनाओं-विचारों एवं कार्यों से हुई।

रविदासजी के जन्म को लेकर कई मत हैं। लेकिन उनके जन्म पर एक दोहा खूब प्रचलित है- 'चौदस सो तैंसीस कि माघ सुदी पन्दरास, दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री गुरु रविदास'- इस पंक्ति के अनुसार गुरु रविदास का जन्म माघ मास की पूर्णिमा को रविवार के दिन 1433 को हुआ था। इसलिए हर साल माघ मास की पूर्णिमा तिथि को रविदास जयंती के रूप में मनाया जाता है। रैदास पंथ का पालन करने वाले लोगों में रविदास जयंती का एक विशेष महत्व है। रविदासजी का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी के गोवर्धनपुर गांव में एक मोची परिवार में हुआ था। मध्यकाल की प्रसिद्ध संत मीराबाई भी रविदासजी को अपना आध्यात्मिक गुरु मानती थीं। रविदासजी ने लोगों को एक नई राह दिखाई कि घर-गृहस्थी में रहकर और गृहस्थ जीवन जीते हुए भी शील-सदाचार और पवित्रता का जीवन जिया जा सकता है तथा आध्यात्मिक ऊंचाइयों को प्राप्त किया जा सकता है। अपनी सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद भी रविदासजी भक्ति आंदोलन, हिंदू धर्म में भक्ति और समतावादी आंदोलन में एक प्रमुख पुरोधा पुरुष के रूप में उजागर हुए।

जूते बनाने का कार्य करने वाले संत रैदास ने आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित करने के लिए समाधि, ध्यान और योग के मार्ग को अपनाते हुए असीम ज्ञान प्राप्त किया और अपने इसी ज्ञान के जरिए पीड़ित मानवता, समाज एवं दीन-दुखियों की सेवा कार्य में जुट गए। जूते बनाने के कार्य से उन्हें जो भी कमाई होती, उससे वे संतों की सेवा किया करते और उसके बाद जो कुछ बचता, उसी से परिवार का निर्वाह करते थे। रैदासजी श्रीराम और श्रीकृष्ण भक्त परंपरा के कवि और संत माने जाते हैं। उनके प्रसिद्ध दोहे आज भी समाज में प्रचलित हैं जिन पर कई धुनों में भजन भी बनाए गए हैं। जैसे, प्रभुजी तुम चंदन हम पानी- इस प्रसिद्ध भजन को सभी गुनगुनाते हैं। क्योंकि उन्होंने कभी धन के बदले आत्मा की आवाज को नहीं बदला तथा शक्ति और पुरुषार्थ के स्थान पर कभी संकीर्णता और अकर्मण्यता को नहीं अपनाया। रैदासजी के उच्च आदर्श और उनकी वाणी, भक्ति एवं अलौकिक शक्तियों से प्रभावित होकर अनेक राजा-रानियों, साधुओं-महात्मा तथा विद्वज्जनों ने उनको सम्मान दिया है। जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप रूढ़ियों एवं आडम्बरों में जकड़ा एवं अधंकारमय था तब संत गुरु रविदास एक रोशनी बनकर समाज को दिशा दी। वे ईश्वर को पाने का एक ही मार्ग जानते थे और वो है 'भक्ति'। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय का सामान्य से सामान्य व्यक्ति हो या कोई विशिष्ट व्यक्ति हो -सभी में विशिष्ट गुण खोज लेने की दृष्टि उनमें थी। गुणों के आधार

से, विश्वास और प्रेम के आधार से व्यक्तियों में छिपे सद्गुणों को वे पुष्प में से मधु की भांति उजागर करने में सक्षम थे। परस्पर एक-दूसरे के गुणों को देखते हुए, खोजते हुए उनको बढ़ाते चले जाना रविदासजी के सर्वधर्म समभाव या वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन का द्योतक है।

पवित्रता, मानवीयता, आत्मनिर्भरता, सहिष्णुता और एकता रैदासजी के मुख्य धार्मिक संदेश थे। हिंदू धर्म के साथ ही सिख धर्म के अनुयायी भी गुरु रविदास के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं। यही कारण है कि रविदासजी की 41 कविताओं को सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव ने पवित्र ग्रंथ आदिग्रंथ या गुरुग्रंथ साहिब में शामिल कराया था। गुरु रविदासजी ने शिक्षा के महत्व पर जोर दिया और अपने शिष्यों को उच्चतम शिक्षा पाने के लिए प्रेरित किया। रविदासजी कवि मात्र ना होकर युगपुरुष और युगस्त्रष्टा कहलाए। न तो किसी शास्त्र विशेष पर उनका भरोसा रहा और ना ही उन्होंने जीवन भर स्वयं को किसी शास्त्र में बांधा। रविदासजी ने समाज की दुखती रग को पहचान लिया था। वे जान गए थे कि हमारे सारे धर्म और मूल्य पुराने हो गए हैं। नई समस्याएँ नए समाधान चाहती हैं। नए प्रश्न, नए उत्तर चाहते हैं। नए उत्तर, पुरानेपन से छुटकारा पाकर ही मिलेंगे।

रविदासजी एक सिद्ध एवं अलौकिक संत थे। एक कथा के अनुसार रविदासजी बचपन में अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। उनमें से एक साथी अगले दिन खेलने नहीं आता है तो रविदासजी उसे ढूंढ़ते हुए उसके घर तक पहुंच जाते हैं। उसकी मृत्यु हो गई और वे मृत शरीर को देखकर बहुत दुखी होते हैं और अपने मित्र को बोलते हैं कि उठो ये समय सोने का नहीं है, मेरे साथ खेलो। इतना सुनकर उनका मृत साथी खड़ा हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि संत रविदासजी को बचपन से ही आलौकिक शक्तियां प्राप्त थी। संत गुरु रविदास ने स्वयं को ही पग-पग पर परखा और निथारा। स्वयं को भक्त माना और उस परम ब्रह्म परमात्मा का दास कहा। वह अपने और परमात्मा के मिलन को ही सब कुछ मानते। शास्त्र और किताबें उनके लिये निरर्थक और पाखण्ड था, सुनी-सुनाई तथा लिखी-लिखाई बातों को मानना या उन पर अमल करना उनको गंवारा नहीं। इसीलिये उन्होंने जो कहा अपने अनुभव के आधार पर कहा, देखा और भोगा हुआ ही व्यक्त किया, यही कारण है कि उनके दोहे इंसान को जीवन की नई प्रेरणा देते थे। रविदासजी शब्दों का महासागर हैं, ज्ञान का सूरज हैं। उनके बारे में जितना भी कहो, थोड़ा है, उन पर लिखना या बोलना असंभव जैसा है। सच तो यह है कि बूंद-बूंद में सागर है और किरण-किरण में सूरज। उनके हर शब्द में गहराई है, सच का तेज और ताप है। मीराबाई के आमंत्रण पर संत रैदासजी चित्तौड़गढ़ आ गये लेकिन यहां भी उनकी गंगा भक्ति तनिक भी कम नहीं हुई। वहीं पर उनका 120 वर्ष की आयु में निर्वाण हुआ। भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में संत रैदासजी गंगा भक्ति इतिहास में एक अमिट आलेख एवं सुनहरा पृष्ठ है। ●

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

अस्तित्व को नई सांसें देने वाला सांस्कृतिक उत्सव

▸▸दीप्ति अंगरीश
वरिष्ठ पत्रकार

आज की तेज रफ्तार दुनिया में हर व्यक्ति आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है। इस प्रतिस्पर्धा के बीच, हम खुद को विकसित करने और आर्थिक समृद्धि पाने के प्रयास में अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। क्या हमने कभी सोचा है कि इस भागदौड़ में हमने अपनी परंपराओं, संस्कृति और मूल पहचान को कितना पीछे छोड़ दिया है?

'न दीनं न च पापं न हरं न वा सदा। किंतु सच्चं धर्मं च सदा समाश्रयेत॥'

यह श्लोक हमें याद दिलाता है कि धर्म और सत्य को आधार बनाने वाला व्यक्ति स्थिर और अडिग रहता है, ठीक वैसे ही जैसे मजबूत जड़ें किसी वृक्ष को हर परिस्थिति में स्थिर बनाए रखती हैं। लेकिन जब जड़ें ही कमजोर पड़ जाएं, तो कोई भी पेड़ कितने दिन खड़ा रह सकता है? यही कारण है कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना आवश्यक है, और इसी दिशा में संगमम हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजोने का कार्य करता है। यह हमें अपने अस्तित्व से जोड़ता है, हमें बताता है कि हम कौन हैं और हमारी पहचान क्या है।

तमिलनाडु के छोटे से गांव से आए बालाचंद्रन पहली बार काशी आए , लेकिन यहां की गलियों, मंदिरों और घाटों में उन्हें अपनेपन का एहसास हो रहा था। उनकी दादी हमेशा काशी यात्रा की इच्छा रखती थीं, परंतु अस्वस्थता के कारण वे नहीं आ सकीं। बालाचंद्रन ने सोचा, 'काश, वे भी यहां आ पातीं!' लेकिन जब वे आयोजन स्थल पर पहुँचे, तो उनकी भावनाएँ उमड़ पड़ीं। मंच पर तमिल और हिंदी भाषा में स्वागत गान गूंज रहा था। वाराणसी रेलवे स्टेशन पर तमिलनाडु से आए श्रद्धालुओं का 'हर हर महादेव' और 'वणक्कम काशी' के साथ स्वागत किया गया। पारंपरिक ढोल-नगाड़ों की ध्वनि और पुष्प वर्षा से हर यात्री का हृदय भर उठा। बालाचंद्रन ने आयोजन के दौरान नटराज की नृत्य प्रस्तुति देखी, तो मंत्रमुग्ध हो गए। दूसरी ओर, काशी के स्थानीय लोग तमिल भक्तों के भजन और कोलम कला को देखकर आनंदित हो उठे। यहां कोई उत्तर भारतीय था, कोई दक्षिण भारतीय, लेकिन सब एक ही भावना से ओत-प्रोत थे—एक भारत, श्रेष्ठ भारत।

काशी-तमिल संगमम का आयोजन हुआ, जो इस बात का प्रमाण है कि कैसे ऐसे आयोजनों के माध्यम से हम अपनी जड़ों को फिर से तलाश सकते हैं। यह केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि भारत की विविधता में एकता का जीवंत उदाहरण है। विशेष रूप से युवाओं के लिए, ऐसे संगम जरूरी हैं ताकि वे अपने गौरवशाली अतीत को समझें, अपनी संस्कृति की समृद्धि को महसूस करें और उसे आगे बढ़ाने का संकल्प लें।

संगमम हमें यह एहसास कराता है कि भारत की विभिन्न संस्कृतियां और परंपराएं, भले ही अलग-अलग प्रतीत होती हों, परंतु वे एक ही धारा की सहायक नदियां हैं, जो अंततः एक ही महासागर में मिलती हैं। संगमम यह दर्शाता है कि भारत की आत्मा एक है, चाहे वह उत्तर का काशी हो या दक्षिण का मदुरै।

यह आयोजन युवाओं में अपनी परंपराओं के प्रति जागरूकता पैदा करता है, जिससे वे अपनी जड़ों को और मजबूत कर सकते हैं। भारत की विविध संस्कृतियों को जोड़ने का काम करता है, जिससे हम एक-दूसरे की परंपराओं को समझते और स्वीकारते हैं। संगीत, नृत्य, शिल्प और साहित्य के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का परिचय होता है, जिससे समाज में समरसता और आपसी सम्मान बढ़ता है। यह कार्यक्रम युवाओं को अपनी संस्कृति को संरक्षित करने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

अब समय आ गया है कि युवा अपनी जड़ों की तलाश करें और उन आयोजनों का हिस्सा बनें जो उन्हें अपनी संस्कृति से जोड़ते हैं। संगमम केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक चेतना है, जो हमें हमारी पहचान से परिचित कराता है। यह एक ऐसा मंच है जो संवाद, सहिष्णुता और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है। जब युवा अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझेंगे और उसे संजोएंगे, तभी वे एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत की नींव रख सकेंगे। संगमम से जुड़ना, अपनी जड़ों से जुड़ना है—और जब जड़ें मजबूत होंगी, तो अस्तित्व को सांसें स्वतः ही मिलती रहेंगी। ●

(लेखिका पत्रकार हैं।)

बहू लाने के लिए बेटी बचाना होगा

प्रियंका सौरभ
वरिष्ठ पत्रकार

हरियाणा में एक कहावत है, 'बेटी नहीं बचाओगे, तो बहू कहां से लाओगे?' हालांकि यह मान लेना गलत है कि सभी बेटियां भावी दुल्हन हैं, फिर भी यह मुहावरा एक ऐसे राज्य में लिंग-चयनात्मक गर्भपात के गंभीर परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित करने में प्रभावी है, जो दशकों से 'बेटियों की कमी' से जूझ रहा है। स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आय में प्रगति के बावजूद भारत का जन्म के समय लिंग अनुपात (एसआरबी) कम बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5, 2019-21) द्वारा एसआरबी को प्रति 1,000 लड़कों पर 929 लड़कियां बताया गया। यह एनएफएचएस-4 (2015-16: प्रति 1,000 लड़कों पर 919 लड़कियां) की तुलना में थोड़ा सुधार है, लेकिन यह अभी भी एक निरंतर लिंग पूर्वाग्रह दिखाता है। ऐतिहासिक रूप से कुछ राज्यों में, विशेष रूप से उत्तरी और पश्चिमी भारत में अधिक विषम अनुपात रहे हैं।

1994 के गभार्धान पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (पीसीपीएनडीटी) अधिनियम के बावजूद, जन्मपूर्व लिंग निर्धारण तकनीकों द्वारा लिंग-पक्षपाती लिंग चयन संभव हो गया है। धनी आर्थिक समूहों और उच्च जातियों में पुरुषों के प्रति झुकाव वाली एसआरबी की दर अधिक है, जो यह दर्शाता है कि मौद्रिक प्रोत्साहन अकेले पर्याप्त निवारक नहीं हो सकते हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के लागू होने के बाद से हिमाचल प्रदेश, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में एस-ारबी में सुधार हुआ है। दक्षिणी और पूर्वी राज्यों में एसआरबी में गिरावट आ रही है, जिन्हें आम तौर पर बेहतर लिंग अनुपात के लिए जाना जाता है। यह एक चिंताजनक प्रवृत्ति है। हालांकि दिल्ली के आसपास के राज्यों में सुधार हुआ है, लेकिन दिल्ली में भी एसआरबी में गिरावट देखी गई है। जबकि यहां बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के लिए बुनियादी लक्ष्य और रणनीतियां थीं।

पीसीपीएनडीटी अधिनियम को और अधिक सख्ती से लागू करके लिंग के आधार पर लिंग चयन को प्रतिबंधित करना होगा। लड़कियों की शिक्षा, सुरक्षा और जीवन रक्षा को बढ़ाना होगा। बाल विवाह में देरी करना और महिलाओं की शैक्षिक प्राप्ति को बढ़ाना जरूरी है। पितृसत्तात्मक मान्यताओं से निपटने के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रयासकरने होंगे। लिंग-चयनात्मक गर्भपात को रोकने के लिए, पीसीपीएनडीटी अधिनियम को मजबूत किया जाना चाहिए। वित्तीय प्रोत्साहन जैसे कि हरियाणा के लाडली और आपकी बेटी हमारी बेटी जैसे कार्यक्रम परिवारों को लड़कियों की मदद करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शैक्षिक सशक्तिकरण, छात्रवृत्ति और बुनियादी ढांचे के समर्थन के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा के लिए धन मुहैया कराना प्रभावी कदम है। उच्च विषमता वाले क्षेत्रों के बाहर सीमित प्रभावशीलता बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का प्रभाव अलग-अलग है; कुछ दक्षिणी और पूर्वी राज्यों में एसआरबी में गिरावट देखी जा रही है। इसका मतलब है कि उच्च विषमता वाले राज्यों में केंद्रित हस्तक्षेप पर्याप्त नहीं हैं।

बेटे को प्राथमिकता देने वाले सामाजिक मानदंडों में यह कथन शामिल है कि 'बेटी की परवरिश पड़ोसी के बगीचे में पानी देने जैसा है।' दृष्टिकोण बदलने के लिए सिर्फ वित्तीय प्रोत्साहन से ज्यादा की जरूरत है। कम महिला श्रम शक्ति भागीदारी अभी भी दुनिया में सबसे कम है, यहाँ तक कि बेहतर शैक्षिक मानकों के साथ भी।

के माध्यम से जमीनी स्तर पर भागीदारी बढे। शिक्षकों, धार्मिक नेताओं और समुदाय के प्रभावशाली सदस्यों को पितृसत्तात्मक परंपराओं का विरोध करने के लिए प्रोत्साहित करें। लैंगिक समानता के बारे में बातचीत में अधिक पुरुषों को शामिल करें। बेटियों के मूल्य की कहानी को बदलने वाले अभियानों को अपना ध्यान ₹बालिकाओं की सुरक्षा₹ से बदलकर 'बालिकाओं को सशक्त बनाने' पर केंद्रित करने की आवश्यकता है। परिवार की सफलता के लिए बेटियों को संपत्ति के रूप में उत्थानकारी संदेशों को प्रोत्साहित करें। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम ने बेटे को प्राथमिकता देने के मुद्दे पर सफलतापूर्वक जागरूकता बढ़ाई है, लेकिन अपर्याप्त कार्यान्वयन और निगरानी के कारण, यह अपने वर्तमान स्वरूप में अपने मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहा है।

आर्थिक असुरक्षा का अनुभव करने वाली महिलाएं पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं का विरोध करने में कम सक्षम हैं। ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2024 के अनुसार, भारत वेतन समानता के मामले में वैश्विक स्तर पर 127वें स्थान पर है, जहां पुरुषों द्वारा अर्जित प्रत्येक 100 रुपये के लिए महिलाएँ केवल 39.8 रुपये कमाती हैं। सशर्त नकद प्रोत्साहन (जैसे, सशर्त नकद हस्तांतरण) प्रणालीगत परिवर्तन के बजाय नीति का केंद्र बिंदु हैं। लाडली योजना से लैंगिक पूर्वाग्रह के अंतर्निहित कारणों को दूर नहीं किया गया है। रोजगार, संपत्ति के अधिकार और वित्तीय स्वायत्तता के क्षेत्रों में संरचनात्मक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को कैचफ्रेज से आगे बढ़ना चाहिए।

लिंग-संवेदनशील नीतियों को मजबूत किया जा रहा है। 'लड़कियों को बचाने' के बजाय, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को नेतृत्व, वित्तीय समावेशन और रोजगार में ₹महिलाओं को सशक्त बनाने₹ पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। प्रोत्साहन देकर अधिक महिलाओं को उद्यमिता और करियर को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करें। रोजगार अंतराल और वेतन असमानताओं को संबोधित करें लैंगिक वेतन अंतर को कम करने के लिए समान वेतन कानून लागू करें। मातृत्व लाभ, लचीले कार्य कार्यक्रम और चाइल्डकैअर सहायता प्रदान करके अधिक लोगों को काम करने के लिए प्रोत्साहित करें। पीसीपीएनडीटी अधिनियम के प्रवर्तन को बढ़ाना, डायग्नोस्टिक क्लीनिकों की निगरानी करना और अवैध लिंग निर्धारण के खिलाफ सख्त कदम उठाना कानूनी और सामाजिक सुधारों को मजबूत करने के सभी तरीके हैं। सरकार के स्थानीय स्तर पर जवाबदेही प्रणाली को मजबूत करें। संपत्ति और विरासत पर महिलाओं के अधिकार सुनिश्चित करें।

उत्तराधिकार अधिकारों को न्यायसंगत बनाए रखें, खास तौर पर उन क्षेत्रों में जहाँ बेटियों को अभी भी समान संपत्ति का स्वामित्व नहीं दिया जाता है। महिलाओं को परिवारों में एक साथ संपत्ति रखने के लिए प्रोत्साहित करें। समुदाय द्वारा संचालित व्यवहार और जुड़ाव में बदलाव लाएं। स्थानीय नेताओं

जिला और राज्य स्तर की बैठकों की कमी के कारण योजना पिछले कुछ वर्षों में बनी गति खो रही है। इसलिए जिला और राज्य स्तर पर कार्य समितियों का प्रतिनिधित्व समुदाय स्तर के कार्यकर्ताओं से किया जाना चाहिए, महिला छात्राओं की सामना की जाने वाली कठिनाइयों, जैसे शौचालयों की कमी, के बारे में जागरूक होना चाहिए और प्रभावी निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली होनी चाहिए, जो यह दिखाए कि योजनाएं अपने लक्ष्यों की दिशा में कितनी अच्छी तरह काम कर रही हैं। भारत में, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ लिंग आधारित भेदभाव को दूर करने के लिए एक उल्लेखनीय नीतिगत हस्तक्षेप रहा है। हालांकि इसने कुछ क्षेत्रों में एसआरबी के सुधार में योगदान दिया है, लेकिन महिलाओं की आर्थिक उन्नति में निहित पितृसत्तात्मक मान्यताओं और संरचनात्मक बाधाओं के कारण इसका प्रभाव अभी भी सीमित है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि महिलाओं को पुरुषों के समान आर्थिक, सामाजिक और कानूनी अवसरों तक समान पहुंच हो, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को अपनी संरक्षणवादी रणनीति को अधिकार-आधारित सशक्तिकरण पर केंद्रित रणनीति से बदलना होगा। तभी हम सशर्त प्रोत्साहनों से आगे बढ़ पाएंगे और स्थायी समानता प्राप्त कर पाएंगे, जिससे लिंग अंतर कम हो जाएगा। सांस्कृतिक मान्यताओं में गहराई तक समाए होने के कारण अक्सर महिलाओं को सशक्त बनाने वाले कानूनों को लागू करना मुश्किल हो जाता है, जैसे संपत्ति के स्वामित्व का अधिकार, स्थानीय नेताओं और प्रभावशाली लोगों के नेतृत्व में समुदाय की भागीदारी की आवश्यकता होती है ताकि पितृसत्तात्मक मानदंडों पर सवाल उठाया जा सके और उन्हें बदला जा सके। हालाँकि इसके लिए नारेबाजी और सशर्त नकद प्रोत्साहनों की तुलना में अधिक सूक्ष्म प्रयासों की आवश्यकता होती है, लेकिन बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना निश्चित रूप से एक सकारात्मक कदम रही है। पितृसत्तात्मक मानदंडों के तहत लैंगिक समानता के लिए बातचीत करने से शायद कोई फायदा न हो। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। ●

द्रविड़ संस्कृति के लोगों के हृदय में बसता है बनारसी मलइयो

दीप्ति अंगरीश

दो संस्कृतियों का मिलन कितना सुंदर होता है, यह देखना और समझना है तो आजकल काशी से बेहतर कोई स्थान नहीं है। सनातन में दो पुरातन संस्कृतियों के लोग एक-दूसरे को समझ रहे हैं। ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान के साथ ही अब जायका भी भा रहा है।

मलाइयो के मुरीद

इस साल 15 फरवरी से 24 फरवरी तक काशी तमिल संगमम का आयोजन किया गया है। काशी यानी बनारस में एक मिष्ठी जायका है जो काशी में तमिलनाडु वालों को लुभा रहा है। यह मिष्ठी जायका है मलाइयो का। जब मलाइयो बनारस के लंका मोहल्ले की पहलवान लस्सी वाले की दुकान की है, तो स्वाद मानो अधिक ही बढ़ जाता है। इस दुकान में मलाइयो खाने वालों में ठेठ बनारसी बाबुओं का नहीं तमिलनाडू वालों की भीड़ लगी रहती है।

मलाइयो का जायका

यहां बात स्वाद की है। सर्दियों में वैसे भी मीठा खाने की तलब बढ़ जाती है। सर्दी वाली कितनी मिठाइयों का तांता है, जिसमें गुलाब जामुन, गाजर का हलवा, मूंग दाल का हलवा आदि है, लेकिन इन सभी में अलग से इतराती है मखमली मिष्ठी मलाइयो। अब सर्दी जा रही है, जितना इस मौसम में चटोरी जुबान को मीठा-मीठा मजा दें पाएं, उतना साल भर तंदरुस्ती रहेगी। बुजुर्गों का कहना है कि जितना खाया पीया सर्दी के मौसम में लगता है, उसका सका-रात्मक प्रभाव शरीर में लंबे समय तक रहता है।

मलाइयो और द्रविड़

अब आप काशी तमिल संगमम 2025 में

जाने का मन बना रहे हैं, तो बता दें कि बनारस की मलाइयो जरूर खाएं। इस मीठे स्वाद को चखने के अलावा, यहां आपको बनारस और काशी के संस्कृतियों को करीब से जानने को मिलेगा। यानी सुबह-शाम संगमम में रहिए और समय मिलते ही खूब सारा मलाइयो खाएं। यकीन मानिए, मलाइयो के आप मुरीद बन जाएंगे। ऐसा सिर्फ के साथ नहीं बहुतेरों के साथ हुआ। बीते साल जब यह आयोजन किया गया, हजारों की संख्या में तमिलों ने मलइयो का स्वाद जाना। उम्मीद है कि इस बार भी बहुतेरे मिठाई दुकान पर मलाइयो जरूर खोजेंगे और फिर चखेंगे। खासतौर से यहां आने वाले चेन्नई, कन्याकुमारी, मदुरई आदि शहरों से आ रहे लोग।

मलाइयो और प्रकृति

बात करते हैं मलाइयो के स्वरूप से सेहत की। बनारस की खासियत है सर्दी की स्पेशल मिठाई मलइयो। मलइयो सिर्फ ठंड के दिनों में मिलती है और मिठाई बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री से इतर इसमें प्रकृति का योगदान है। इसमें ओस की बूंदों का प्रयोग होता है। यह मिठाई आपको कुल्हड़ में मिलेगी। ओस की बूंदों और दूध के झाग से बनी मलाइयो को बनाया भी अनोखे तरीके से है। चीनी मिले दूध को रातभर ओस में रखने के बाद इससे निकला झाग ही मलइयो होता है। इसे बनाने के लिए कच्चे दूध को रात भर खौलाकर खुले आसमान के नीचे रखते हैं। फिर सर्दियों में ओस की बूंदों से इसमे झाग पैदा हो जाता है और सुबह इसके केसर, इलायची, दूध, पिस्ता, बादाम आदि ड्राई फ्रूट्स डालकर बड़ीकृबड़ी मथनी से मथा जाता है। क्यों है ना यह बनारसी साड़ी से मलाइयो एकदम अनोखी।

मलाइयो और सेहत

सेहत के प्रति आप सर्तक है, तो मलाइयो है सेहत का खजाना। कारण ओस की बूंदों में मिनरल्स होते हैं, जो आंख की रोशनी बढ़ाने के साथ त्वचा के लिए भी फायदेमंद होता है। इसमें डाले गए सूखे मेवे में कई खनिज तत्व होते हैं, जो हड्डी स्वास्थ्य, रोग प्रतिकारक क्षमता बढ़ाना, वजन प्रबंधन, हृदय स्वास्थ्य, रक्त शर्करा नियंत्रण, बेहतर मूड, रक्तचाप नियंत्रण, पाचन स्वास्थ्य और एंटीऑक्सीडेंट गुण। ●

(लेखिका पत्रकार हैं।)

विचारोत्तेजक विमर्श
आदिवासी कहां हैं हमारे जीवन में ?

राजेश बादल
वरिष्ठ पत्रकार

आदिवासी एक तरह से हमारे पुरखों के ही वंशज हैं। फर्क यह कि हम तथाकथित सभ्यता का लबादा ओढ़े इमारतों के जंगल में रहने चले आए और वे प्रकृति की गोद में घने जंगलों में रहते रहे। हमने नई संस्कृति के नाम पर तरह तरह के कुटैव पाल लिए और वे निश्छल, निर्मल जल की तरह समय की धारा में बहते रहे। फिर भी उन्होंने हमारे आधुनिक भारत को अपना लिया ,मगर हम अपने इन पंद्रह करोड़ आदिवासी भाइयों को तहे दिल से अंगीकार नहीं कर सके। इसके बावजूद वे देश के विकास में अपने ढंग से हमारे संग कदम से कदम मिलाते हुए साथ चल रहे हैं। इस प्रक्रिया में हम तो अपनी अनेक पुरानी परंपराएं , आदर्श और नैतिक मूल्य तो भुला बैठे , लेकिन इस आदिवासी विरासत को आधुनिकीकरण के फेर में कहीं खो न दें,जो वे सदियों से सहेज रहे हैं। हमें इस पर मंथन करना जरूरी है।

निष्कर्ष के तौर पर यह कुछ बिंदु भारत के इकलौते इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में दो दिन पहले संपन्न आदिवासी साहित्य उत्सव -25 में उभरकर आए। भारत के लगभग सभी प्रदेशों से विद्वान, आदिवासी साहित्य और उनकी जिंदगी के जानकार,विशेषज्ञ इस उत्सव में शिरकत करने आए थे। तीन दिन चले इस उत्सव में अनेक सत्र हुए। इन स्तरों में विविध जनजातीय विषयों पर विमर्श हुआ। एक सत्र की अध्यक्षता मुझे भी करने का अवसर मिला। इसका विषय था -आदिवासी फिल्म निर्माण - स्वर और सरोकार। सत्र में कर्नाटक से डॉक्टर शांता नायक,केरल से श्रीमती ए बिंदु ,बंगाल से डॉक्टर देवयानी मुखर्जी और मध्यप्रदेश के मुकेश दरबार ने अपने विचार प्रकट किए। बिंदु जी ने आदिवासी मसलों पर अधिक गहराई से काम करने पर जोर दिया तो शांता कुमार ने बंजारा जनजाति की परंपराओं तथा उन पर आधुनिकता के नाम पर हो रहे आक्रमण को रेखांकित किया। देवयानी ने जानी मानी आदिवासी चित्रकार भूरीबाई पर अपनी फिल्म के बारे में बताया तो मुकेश दरबार ने गैर आदिवासी होते हुए भी उनके लिए अपने काम की विस्तार से जानकारी दी।विचार विमर्श के बाद अन्य विद्वान अतिथियों ने अपने प्रश्नोत्तर से सत्र

को अत्यंत रोचक बना दिया। इन विद्वानों में जाने माने कवि,लेखक और स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी समुदाय के योगदान पर गहन शोध करने वाले डॉक्टर सुधीर सक्सेना,शैलचित्रों पर अरसे से काम कर रहीं अंतर्राष्ट्रीय जानकार डॉक्टर मीनाक्षी पाठक, बस्तर के जन जीवन पर अनेक पुस्तकों के लेखक राजीव रंजन तथा आधी सदी से जनजाति विषयों पर प्रामाणिक पुरुष डॉक्टर बसंत निरगुणे समेत अनेक विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे।

इसी सत्र में मैंने अपनी फिल्म चला गया चेन्द्रू दिखाई। यह फिल्म नौ दस साल पहले बनाई गई थी। यह फिल्म छत्तीसगढ़ के मुरिया आदिवासी चेन्द्रू और टेम्बू की दोस्ती की दास्तान है। टेम्बू एक बाघ था। चेन्द्रू उसके साथ खेलते खेलते बड़ा हुआ। इस अनूठी दोस्ती पर 1956 में स्वीडन के एक फिल्म निमार्ता ने फिल्म बनाई और करोड़ों रूपए कमाए। बाद में वह चेन्द्रू को अपने साथ स्वीडन ले गया। वहाँ चेन्द्रू और टेम्बू को एक बड़े पिंजरे में रखा गया। लोग उसे टिकट लेकर देखने आते। फिल्म निमार्ता ने उसे साल भर इसी तरह रखा और बेशुमार दौलत कमाई। क्रूरता देखिए कि वह इन दोनों को फ्लाइट से ले गया ,लेकिन लौटते समय समंदर के रास्ते पानी के जहाज से भेज दिया। खारे पानी के वातावरण में लंबे समय तक रहने के कारण टेम्बू के फेफड़ों में संक्रमण हो गया और वह जहाज पर ही बीमार हो गया। उसका इलाज कराने में चेन्द्रू असमर्थ था। उसने एक सर्कस मालिक को टेंबू दे दिया। बाद में टेम्बू की सर्कस में मौत हो गई। चेन्द्रू अपने गाँव लौट आया। कोई 45 साल वह गुमनामी में रहा। मैंने उसे 26 साल पहले खोजा और अपने चैनल में दिखाया। इसके बाद देश ने फिर इस आदिवासी महानायक को याद किया। लेकिन प्रदेश सरकार ने उसके लिए कुछ नहीं किया। करीब दस साल पहले चेन्द्रू ने गुमनामी में दम तोड़ दिया। इस फिल्म का दर्दनाक अंत सबको दुखी कर देता है।यही है हमारी संवेदना का एक क्रूर पक्ष। मैंने अपने संबोधन में बताया कि राज्य सभा टीवी का एक्जीक्युटिव डायरेक्टर रहते हुए हम लोगों ने आदिवासी जनजीवन पर ; मैं भी भारत - धारावाहिक का निर्माण किया था। यह भारत में आदिवासियों पर अपने किस्म का अनूठा दस्तावेजीकरण था। इसके अलावा लगभग 32 आदिवासी जनजातियों के बारे में मैंने वीडियो दस्तावेजीकरण किया था। और आदिवासी विषयों पर पचास से अधिक मेरी लघु फिल्में हैं। मैंने मानव संग्रहालय का आभार माना कि वह इस तरह के आयोजन करता है। उत्सव के आयोजन में संग्रहालय के निदेशक अमिताभ पांडे और उनके सहयोगी डॉक्टर सुधीर श्रीवास्तव तथा हेमंत बहादुर सिंह परिहार की भूमिका सराहनीय हैं। चित्र इसी अवसर के हैं।●

बढ़ेगा चंबल नदी में घड़ियालों का 'कुनबा'

प्रदीप कुमार वर्मा
स्तंभकार

पूर्वी राजस्थान सहित उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के साझा चंबल के बीहड़ की फिजां इन दिनों बदली-बदली सी दिखाई पड़ रही है। चंबल नदी में जहां देशी और विदेशी प्रवासी पक्षियों का डेरा है। वहीं, चंबल के पानी में इन दिनों दुर्लभ जलीय जीव नन्हे घड़ियालों की मौजूदगी सुखद अहसास दे रही है। घड़ियालों के संरक्षण तथा चंबल में घड़ियाल की संख्या बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य से अब नन्हे घड़ियाल चंबल नदी में छोड़े जा रहे हैं। मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के देवरी में स्थित सेंचुरी से कृत्रिम रूप से हैचिंग के बाद में प्यार से पाले पोसे गए चंबल के राजकुमार कहे जाने वाले घड़ियालों को चंबल में छोड़ने की शासन और सरकार की यह कवायद आने वाले दिनों में चंबल नदी में घड़ियालों के कुनबे में बढ़ोतरी का सबब बनेगी।

मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के देवरी में स्थित सेंचुरी से पहले चरण में चंबल नदी के सरसैनी घाट पर 32 घड़ियाल शावकों को राष्ट्रीय घड़ियाल पालन केंद्र द्वारा छोड़ा गया। इनमें 30 मादा एवं 2 नर नन्हे घड़ियाल शामिल हैं। चंबल में छोड़े गए इन नन्हे घड़ियाल शावकों की घड़ियाल पालन केंद्र में परवरिश की जा रही थी। राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल केंद्र देवरी मुरैना मध्यप्रदेश के अधीक्षक श्याम सिंह चौहान ने बताया कि इससे पूर्व गत 13 जनवरी को भी घड़ियाल केंद्र द्वारा चंबल नदी में 25 घड़ियाल शावकों को रिलीज किया था। दूसरे चरण में बुधवार को 32 छोड़े गए हैं। उन्होंने बताया कि 41 घड़ियाल शावकों की अभी घड़ियाल पालन केंद्र में परिवरिश की जा रही है। जिन्हें फरवरी में चंबल में रिलीज

कर दिया जाएगा।

चंबल इलाके में घड़ियालों के संरक्षण की इस पूरी कवायद पर गौर करें तो चंबल नदी के करीब दो दर्जन घाटों पर घड़ियालों द्वारा नेस्टिंग की जाती है। इनमें धौलपुर एवं मुरैना जिले के समौना, अंडवा पुरैनी, शंकरपुरा, तिघरा, दगरा, बरसला, घेर , सरसेनी, बरई, अटेर, नखलोनी, चिलोंगा तथा बटेश्वरा घाट शामिल हैं। कई बार चंबल के तटों पर अवैध रेत उत्खनन तथा जंगली जानवरों द्वारा बड़े पैमाने पर घड़ियालों के अंडों को नष्ट कर दिया जाता है। यही वजह है कि घड़ियाल संरक्षण के लिए नेचुरल हैचिंग के साथ साथ राष्ट्रीय चंबल अभ्यारण्य घड़ियालों को कुछ अंडों को संग्रहित करके देवरी लाता है। और यहां पर कृत्रिम रूप से हैचिंग कराई जाती है।

देवरी घड़ियाल केंद्र पर हर साल करीब 200 अंडों की हेचिंग कर घड़ियाल के बच्चे निकाले जाते हैं। घड़ियाल के जन्म के समय बच्चों का वजन 125 गाम तक होता है। जन्म के साथ ही बच्चे अपने योक में 10 दिन का भोजन लेकर पैदा होते हैं। इसके बाद में 3 से 4 दिन तक घड़ियालों को जिंदा जीरो साइज फिश कर्मचारी अपने हाथों से खिलाते हैं। इसी क्रम में 4 साल तक इनकी विशेष देखरेख होती है। जिसके बाद ये 120 सेंटीमीटर लंबाई हासिल कर लेते हैं। इस प्रकार 5 वें साल में इन्हें चंबल में छोड़ दिया जाता है। यही वजह है कि बीते सालों से घड़ियाल प्रजाति के कुनबे में बढ़ोतरी हो रही है। घड़ियाल संरक्षण केंद्र देवी के आंकड़ों के मुताबिक वर्तमान में चंबल नदी में घड़ियाल प्रजाति की संख्या 2512 तक पहुंच चुकी है।

राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल केंद्र देवरी मुरैना के अधीक्षक श्याम सिंह चौहान ने बताया कि चंबल के करीब 485 किलोमीटर के एरिया में घड़ियाल और मगरमच्छ क्रीड़ाएं करते हैं। वर्तमान समय में चंबल नदी में 998 मगरमच्छ हैं। इसके अलावा 6 से 8 तक डॉल्फिन का भी मूवमेंट देखा गया है। वहीं, कछुआ प्रजाति में भी भारी वंश वृद्धि देखी जा रही है। चंबल नदी देश की सबसे स्वच्छ एवं साफ पानी की नदी मानी जाती है। चंबल नदी का पानी एवं वातावरण जलीय जीवों के लिए काफी अनुकूल है। नतीजतन चंबल नदी में घड़ियाल, मगरमच्छ, डॉल्फिन एवं कछुआ की प्रजाति में भारी बढ़ोतरी हो रही है।

चंबल नदी में घड़ियालों के कुनबे की बढ़ोतरी के अतीत पर गौर करें तो वर्ष 1970 के दशक में विश्व में कराए सर्वे में कुल 200 घड़ियाल बचे थे। इनमे भारतीय प्रजाति के घड़ियालों के सर्वे में 46 घड़ियाल चंबल में मिले थे। इसके बाद 80 के दशक में चंबल नदी के 485 किमी क्षेत्र को घड़ियाल अभयारण्य घोषित किया गया। इनके संरक्षण व संवर्धन के लिए देवरी पर घड़ियाल केंद्र बनाया गया। ताजा आंकड़ों के मुताबिक चंबल नदी में वर्ष 2019 में 1876 घड़ियाल पाए गए थे। 2020 में चंबल नदी के 435 किमी दायरे में की गई गिनती में घड़ियालों की संख्या 1859 रह गई थी। इसके बाद में वर्ष 2021 में हुई गिनती में चंबल में एक साल में 317 घड़ियाल बढ़े थे, जिससे घड़ियालों की संख्या 2176 हो गई थी। बताते चलें कि घड़ियाल को भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के सूची के तहत संरक्षित किया गया है। इनके अंडे नेचुरल एन्वायर्नमेंट में सर्वाइवल केवल 20 प्रतिशत है। इसे रिसर्च सेंटर में लाने की वजह से इनका सर्वाइवल 90 प्रतिशत हो जाता है। ●

अवैध प्रवासियों की गलत तरीके से वापसी

ललित गर्ग
वरिष्ठ पत्रकार

डंकी रूट यानी गैरकानूनी तरीके से अमेरिका गए करीब 200 भारतीयों को राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने जिस असुविधा एवं अपमानजनक तरीके से अपने सैनिक विमान से बलपूर्वक भारत भेजा है, उससे अनेक प्रश्न खड़े हुए हैं। बेहतर भविष्य की तलाश में आए अवैध प्रवासियों को बेहूदा तरीके से खदेड़ा जाना विडंबनापूर्ण एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। पूरे विश्व को लोकतांत्रिक मूल्यों एवं मानव अधिकारों की नसीहत देने वाले अमेरिका ने जिस तरीके से विभिन्न देशों के कथित अवैध प्रवासियों को उनके देश भेजने की कार्रवाई की है, उस पर अनेक देशों ने आपत्ति जताई है। भले ही भारत ने इसे मुद्दा बनाने से परहेज करते हुए राजनीतिक कूटनीति की दृष्टि से ठीक किया हो, लेकिन भारत लौटे अप्रवासियों की चिन्ता एवं दर्द को समझना भारत-सरकार की प्राथमिकता बननी चाहिए। सुनहरे सपनों की आस में जीवनभर की पूंजी दांव पर लगाकर व एजेंटों को लाखों रुपये लुटाकर अमेरिका पहुंचे युवाओं ने सपने में नहीं सोचा होगा कि उन्हें अपराधियों की तरह वापस उनके देश भेजा जाएगा। ये हमारे नीति-नियंताओं की विफलता एवं विदेश नीति की नाकामी तो है ही, दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश भारत के साथ ऐसा व्यवहार अमेरिका के अहंकारी एवं संकीर्णतावादी सोच को भी दर्शा रहा है। अवैध प्रवासियों की उचित तरीकों से पहचान कर उन्हें उनके देशों को वापस भेजा जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। भारत का इस मामले में शुरू से सहयोगात्मक रुख रहा है। लेकिन एक जायज सवाल वापसी के तौर-तरीके को लेकर उठना असंगत नहीं कहा जा सकता है।

निश्चित रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा से पूर्व जबरन की गई अवैध प्रवासी भारतीयों की निर्वासन उड़ान विसंगतियों व विडंबनाओं की ही घोतक है। हालांकि, भारत ने कूटनीतिक प्रयासों से अवैध अप्रवासन पर समयानुकूल निर्णय लेकर दोनों देशों में संबंध सामान्य बनाने के प्रयास को गलत नहीं कहा जा सकता। गलत तरीकों से अमेरिका में आये लोगों को उनके देश का रास्ता दिखाना भी गलत नहीं कहा जासकता, लेकिन जिस तौर-तरीके से यह कार्रवाई की गयी है, उस पर प्रश्न टंकने स्वाभाविक है। हालांकि यह कोई पहला मौका नहीं है जब अवैध प्रवासी भारतीय वापस भेजे गए हों। लेकिन इस बार कई ऐसी बातें हैं, जो इसे अतीत की ऐसी घटनाओं से अलग एवं चर्चा का विषय बनाती हैं। दरअसल, अमेरिका की हालिया यात्रा के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर ने जमीनी स्तर पर बेहतर कूटनीतिक प्रयास करते हुए ट्रंप प्रशासन को इस बात को लेकर आश्वस्त किया कि भारत अपने भटके हुए नागरिकों की वैध वापसी के लिये तैयार है। निस्संदेह, भारत ने समझदारी से टकराव टालने का सार्थक प्रयास किया ताकि मोदी-ट्रंप की मुलाकात से पहले दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट न घुले। निश्चय ही हटी, अहंकारी एवं तुनक मिजाज ट्रंप व उनके प्रशासन से इस मुद्दे पर अड़ने से दोनों देशों के संबंधों के आहत होने की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता।

हमारे देश के युवा अमीर देशों में पलायन करने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाते रहे हैं, जिनमें बड़ी संख्या गरीबी से छुटकारा पाने वालों एवं आकांक्षाओं से भी जुड़ी है। विशेषज्ञों का मानना है कि भले ही विदेश में निम्न-स्तरीय नौकरियां मिले लेकिन बेहतर वेतन के लोभ में

युवा ऐसी नौकरियां करते हैं। भारत में बेरोजगारी का आलम यह है कि कुछ हजार कर्मियों की भर्ती के लिये लाखों से भी अधिक युवा-प्रार्थी आवेदन करते हैं। थक-हारकर ऐसी एवं अन्य नौकरियों के लिये कोशिशों में नाकाम रहने वाले युवा विदेशों की ओर पलायन करते हैं। कई लोगों की राय में अमेरिका में होने वाली अच्छी कमाई डंकी रूट की जोखिमों, परेशानियों, अपमान एवं कानूनी भय की भरपाई कर देती है। कई परिवारों ने कहा कि उनके बेटे और भतीजे हर महीने कम से कम दो लाख रुपये घर भेजते हैं और वे मुख्य रूप से गैस स्टेशन, मॉल, किराना स्टोर और रेस्तरां में फुल या पार्ट टाइम जॉब करते हैं। इस तरह होने वाली कमाई से न केवल उन्हें कर्ज उतारने, स्कूल की फीस भरने, दहेज, घर की मरम्मत और नई कार खरीदने में मदद मिली, बल्कि इससे उनकी सामाजिक स्थिति भी सुधरी। माना जाता है कि हाल के वर्षों में देखे गए वीजा बैकलॉग ने भी कुछ संभावित प्रवासियों को डंकी रूट अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

भारतीयों का विदेशों में बढ़ता पलायन और विशेषतः डंकी रूट से विदेश जाने की होड भारत के विकास पर एक बदनुमा दाग है। यह सरकार की विफलता ही है कि वह अपने युवाओं को उचित नौकरी नहीं दे पा रही है। इसी कारण अमेरिका जैसे देशों में भारतीय युवा अपने सपनों को पूरा होते हुए देखते है। हालांकि, एक अध्ययन में दावा किया गया है कि भारत, अमेरिका में गए सर्वाधिक अवैध अप्रवासियों वाले देशों में शुमार है। भारत इस तथ्य को समझता है कि मूल मसला इन अवैध प्रवासियों का वापस आना नहीं बल्कि उनका यह मान लेना है कि इस देश में उनका कोई भविष्य नहीं है। तभी तो वे अपनी जमा-पूंजी गंवाकर और जान का जोखिम मोल लेकर भी अमेरिका-कनाडा जैसे देशों का रुख करते हैं। ध्यान रहे, वैध तरीकों से अमेरिका पहुंचे और वहां रह रहे भारतीयों ने मेहनत और प्रतिभा-कौशल के बल पर अपनी अच्छी जगह बनाई है। न केवल अपनी जगह बनाई बल्कि अमेरिका के विकास में योगभूत बने हैं। लाखों भारतवंशियों ने अपनी मेधा व पसीने से अमेरिका की प्रतिष्ठा पर चार-चांद लगाए हैं। यही कारण है कि दो साल पहले वहां एक भारतीय परिवार की औसत आमदनी की तुलना में एक लैटिन अमेरिकी परिवार की औसत आमदनी काफी कम रही है। यही कारण है कि इस बार के अमेरिकी चुनाव में यह एक बड़ा मुद्दा भी बना था और राष्ट्रपति पद की शपथ लेने के बाद डॉनल्ड ट्रंप इस मसले को रेखांकित भी किया, इस वजह से अमेरिका में रह रहे भारतीय समुदाय की छवि भी प्रभावित हुई है।

भारतीयों में विदेश जाकर पढ़ने और नौकरी का क्रेज है, यह सालों से रहा है। पंजाब, गुजरात के लोगों ने अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन में अपनी अच्छी जगह बनाई है लेकिन हाल के सालों में बहुत सारे भारतीय गैर-कानूनी यात्रा के शिकार होकर कुछ ने अपनी जान गवांई है तो कुछ अनेक तकलीफों का सामना कर रहे हैं। अवैध तरीकों से डंकी रूट से अमेरिका आदि देशों में युवाओं को भेजकर जानलेवा अंधी गलियों में धकेलने वाले एजेंटों ने भले ही मोटी कमाई की हो, लेकिन इस काले कारनामों एवं गौरखधंधे पर समय रहते कार्रवाई न होना सरकार की बड़ी विफलता है। मोटी कमाई और चमकीले सपनों का सम्मोहन युवाओं की सोचने-समझने की शक्ति को ही कुंद कर देता है कि वे अपनी जान तक को भी जोखिम में डाल देते हैं। दरअसल, डंकी रूट अमेरिका आदि देशों में जाने का एक ऐसा अवैध रास्ता है, जिसमें सीमा नियंत्रण के प्रावधानों को धता बताकर एक लंबी व चक्करदार यात्रा के माध्यम से दूसरे देश ले जाया जाता है। इतना ही नहीं, कभी उन्हें पूर्वी एशिया के देशों में साइबर अपराधी बंधक बनाकर ऑनलाइन धोखाधड़ी को अंजाम देते हैं, तो कभी उन्हें धोखे से बिचौलिए रूसी सेना में भर्ती करवा देते हैं। कभी उन्हें इस्राइल-हमास के भयावह युद्धग्रस्त इलाके में काम की तलाश में पहुंचा दिया जाता है।

अमेरिका से लौटे भारतीयों के दर्द को कम करना होगा एवं समझना होगा। इसके लिये भारत सरकार को व्यापक प्रयास करने होंगे। एक तो अवैध तरीकों से लोगों को विदेश पहुंचाने वाले गिरोहों के खिलाफ सख्त मुहिम चलानी होगी ताकि इस प्रक्रिया पर रोक लगे। दूसरी बात यह कि इसके साथ-साथ भारत में नौकरियों के नए अवसर बनाने पर भी ध्यान देना होगा। ऐसे में एक अहम सवाल यह भी है कि क्या भारत के पास अमेरिका से निर्वासन के लिये चिन्हित अपने करीब अट्ठारह हजार कथित अवैध प्रवासी नागरिकों के पुनर्वास को लेकर कोई योजना है? सरकार कैसे सुनिश्चित करेगी कि भविष्य में ये लोग फिर किसी आप्रवासन का दुस्साहस नहीं करेंगे? अन्यथा भारत का युवा हर मोर्चे पर ऐसे अपमान, दर्द, परेशानी के दंश को झेलता रहेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

‘आप’ का आपदाकाल

राकेश सैन

सावन में बहुत सी बेल-बूटियां पैदा होती हैं, जिनमें से कई तो विशाल वृक्षों से लिपटती हुई उनसे भी ऊंची उठ कर इतराने लगती हैं पर सभी जानते हैं कि कार्तिक-माघ माह आते-आते हरित सर्पणियों सरीखी ये लताएं प्राणविहीन होने लगती हैं। कारण ढूंढें तो सामने आता है कि वृक्षों के विपरीत इन लताओं की जड़ें गहरी नहीं होतीं। देश की राजनीतिक सनसनी कहे जाने वाली आम आदमी पार्टी भी लगभग उसी मार्ग पर चलती दिखाई दे रही है, जो दीपावली के राकेट की तरह एकदम उठी और कुछ देर रोशनी बिखेर कर आज उतनी ही गति से नीचे आ रही है। दिल्ली जहां पार्टी का श्रीगणेश हुआ, वहां पार्टी को कमरतोड़ पराजय का सामना करना पड़ा है। केवल पार्टी ही चुनाव नहीं हारी बल्कि उन बड़े चेहरों को भी जनता ने घर का रास्ता दिखा दिया है जो पार्टी का चेहरा माने जाते हैं। और तो और पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल भी हार गए। ‘आप’ आज आपदाकाल से गुजर रही है यानी कह सकते हैं कि बेल पीली पड़ रही है लेकिन इस आपदाकाल को आत्मज्ञानकाल बना लिया जाए तो बेल को पूरी तरह झुलसने से बचाया जा सकता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी दल या संगठन को अलोकतांत्रिक पद्धति से नहीं चलाया जा सकता। परन्तु देखने में आता है कि ‘आप’ में आतंरिक लोकतंत्र का पूरी तरह अभाव है। गठन के पहले दिन से ही श्री केजरीवाल ने पार्टी को आत्मकेन्द्रित करना शुरू कर दिया। पार्टी जन्म से लेकर आज तक केवल वो ही राष्ट्रीय संयोजक के पद पर चले आ रहे हैं। अंदर से उन्हें किसी से चुनौती न मिले इसके लिए उन्होंने सबसे पहले अपने उन साथियों को किनारे करना शुरू कर दिया जो अन्ना आंदोलन में उनके साथ रहे। जनरल वीके सिंह, किरण बेदी, कुमार विश्वास, आशुतोष गुप्ता, योगेन्द्र यादव, प्रशांत भूषण आदि आदि बहुत से लोगों की लम्बी शृंखला है जो केजरीवाल के व्यवहार के कारण उनका साथ छोड़ते गए। राष्ट्रीय स्तर पर लोकपाल का वायदा करके आई ह्यआपह्ल ने अपने आंतरिक लोकपाल सेवानिवृत एडमीरल रामदास के साथ जो व्यवहार किया, वह पूरे देश ने देखा। होली-होली आंदोलनकारी दूर हटते गए और सत्ताजीवी लिपटते गए। समय-समय पर वे लोग ‘आप’ का साथ छोड़ गए जो देश में नई तरह की राजनीति करने एक मंच पर आए थे।

केजरीवाल विभव कुमार जैसे उन चापलूसों व संदिग्ध लोगों से घिर गए जो मुख्यमंत्री निवास पर भी पार्टी सांसद स्वाति मालीवाल जैसी वरिष्ठ नेताओं से दुर्व्यवहार करने से नहीं झिझकते। इन 13 वर्षों में केजरीवाल की छवि संयोजक की बजाय पार्टी के मालिक की बन गई और ‘आप’ लोगों को कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल, सपा, बसपा, तृणमूल कांग्रेस सरीखी कुनबावादी पार्टी लगने लगी। अगर मालिकाना हक वाली सोच न

होती तो क्या कभी केजरीवाल अपनी ही पार्टी की मुख्यमंत्री आतिशी को 'टेम्परेरी सीएम' कहने का दुस्साहस करते? अपने पद से इस्तीफा देने के बाद आतिशी को मुख्यमंत्री बना कर केजरीवाल ने उन्हें जो अस्थाई मुख्यमंत्री कहा वह अपने आप में अति अशोभनीय था जिसका बहुत गलत संदेश गया।

दूसरी ओर अपने जन्म के 13 साल बाद भी 'आप' अपना वैचारिक आधार नहीं बना पाई। स. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार पर लगे आरोपों के चलते देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ जनाक्रोश पनपा हुआ था और इसी का लाभ उठा कर आम आदमी पार्टी अस्तित्व में आई परंतु अपनी किशोर अवस्था आने से पहले ही नई नवेली पार्टी इन्हीं आरोपों में घिर गई। पुलवामा में आतंकी हमला हो या भारतीय सेना की पाकिस्तान के खिलाफ कोई कार्रवाई केजरीवाल व उनकी पार्टी कभी भी देश के साथ खड़े दिखाई नहीं दिए। पार्टी में वैचारिक भटकाव इतना कि कभी तो लेफ्ट चलते दिखी तो कभी राइट, कभी उलटी तो कभी सीधी। केन्द्र से टकराव और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अन्धविरोध पार्टी की एकमात्र विचारधारा बन गई।

इसके लिए झूठ-फरेब, षड्यंत्र-अफवाहें, नाटक-नौटंकी सबकुछ आजमाया गया। तुष्टिकरण की राजनीति करते हुए केजरीवाल कांग्रेस के ही बहरूपीए नजर आने लगे। कांग्रेस की ही दुर्दशा देख कर केजरीवाल को समझ जाना चाहिए था कि वैचारिक आधार के बिना या वैचारिक भटकान से उनका भी एक न एक दिन वही हश्र होगा जो कांग्रेस का हुआ है। ह्यआपह्न के पुनरुथान के लिए केजरीवाल को देश की माटी और जनमानस से जुड़े विचारों, सिद्धांतों को पार्टी की विचारधारा बनाना होगा और उन पर चलते हुए दिखना भी होगा। तभी उनका व उनके दल का कल्याण सम्भव है। एक निश्चित विचारधारा के चलते ही आज वो भारतीय जनता पार्टी सफलता की सीढिय़ां दर सीढिय़ां चढ़ती दिखाई दे रही है जिसके कभी दो ही सांसद हुआ करते थे। बिना विचारों के चाहे कोई संगठन सामयिक मुद्दों पर एक-दो बार सफलता हासिल कर ले परन्तु वह ज्यादा समय चल नहीं पाता। दूसरी तरफ वैचारिक संगठन कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी पूरी तरह समाप्त नहीं होते।

वैचारिक आधार वाले भाजपा व वामपंथी दल इसके उदाहरण हैं जो ऊपर-नीचे तो होते हैं परन्तु हाशीए पर नहीं जाते। देश की राजनीति में अगर लम्बा सफर तय करना है तो 'आप' को भी अपनी कोई न कोई विचारधारा समाज के सामने रखनी होगी। केजरीवाल अगर ईमानदारी को अपनी विचारधारा बताते हैं तो उन्हें अपने ऊपर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों का दृढ़ता से सामना करना होगा। ईमानदारी साबित करने के लिए किसी तरह की सर्कस करने से बचना होगा। राजनीति में इस तरह के आरोप बहुत बड़ी बात नहीं, भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी पर भी हवाला घोटाले में शामिल होने के आरोप लगे, परन्तु उन्होंने राजनीतिक शूचिता का उदाहरण पेश करते हुए तत्काल यह घोषणा कर दी कि जब तक वे दोषमुक्त नहीं होते वे कोई पद ग्रहण नहीं करेंगे। इतिहास साक्षी है कि आरोपमुक्त होने के बाद वे अपने नेतृत्व में भाजपा को कहां से कहां तक ले गए। अगर शराब घोटाले के आरोप लगने के बाद केजरीवाल भी ऐसा साहस दिखाते तो आज दिल्ली के चुनाव परिणाम वह नहीं होते जो आज उन्हें देखने पड़ रहे हैं। ●

(ये लेखक के अपनेविचार हैं)

झाड़ू भी 'आप' की साफ भी 'आप'

▶▶ रामस्वरूप रावतसरे
वरिष्ठ पत्रकार

●दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की आंधी में आम आदमी पार्टी हवा हो गई। वो आम आदमी पार्टी जो लगातार दो चुनावों में प्रचंड बहुमत के साथ सरकार बनाई थी लेकिन इस बार भाजपा की कुछ ऐसी हवा चली कि 'आप' के बड़े-बड़े शूरमा उखड़ गए। खुद अरविंद केजरीवाल चुनाव हार गए। मनीष सिसोदिया चुनाव हार गए। आप के तमाम दिग्गज चुनाव हार गए। न फ्री का वादा काम आया, न मुफ्त की रेवड़ियां काम आईं और न ही 'कट्टर ईमानदार' अरविंद केजरीवाल का चेहरा काम आया। आखिर ऐसा क्या हुआ कि कभी 70 में से 67 और 62 सीटें जीतने वाली आम आदमी पार्टी को इस बार बुरी शिकस्त का सामना करना पड़ा? इस संबंध में जानकार लोगों का कहना है कि आप की हार के 7 बड़े कारण क्या रहे।

आम आदमी पार्टी ने अपने जन्म के साथ ही दिल्ली के लोगों के दिल पर राज किया। 2013 के अपने पहले चुनाव में वह भाजपा के बाद दूसरे नंबर पर रही थी लेकिन त्रिशंकु विधानसभा में वह उस कांग्रेस से हाथ मिला लिया, जिसके कथित भ्रष्टाचार के विरोध से राजनीति शुरू की थी। खैर, कांग्रेस के साथ गठबंधन वाली आम आदमी पार्टी की वो सरकार 2 महीने भी नहीं टिकी। उसके बाद 2015 में 70 में से 67 और 2020 में 70 में से 62 सीटों पर जीत के साथ इतिहास रचा। पार्टी लगातार 10 सालों तक दिल्ली की सत्ता में रही। लगातार तीसरी बार जीत दर्ज करना वैसे भी बहुत आसान नहीं होता क्योंकि सत्ताविरोधी रुझान यानी एंटी-इन्कंबेंसी का खतरा बना रहता है। आम आदमी पार्टी को भी इस फैक्टर का नुकसान उठाना पड़ा।

अब इसे विडंबना ही कहेंगे कि जिस पार्टी ने भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन से जन्म लिया, सत्ता में आने पर वह भी अपने दामन को करप्शन की कालिख से नहीं बचा पाई। खुद को कट्टर ईमानदार कहने वाले अरविंद केजरीवाल को करप्शन का दाग भारी पड़ा। भ्रष्टाचार के आरोपों में उन्हें खुद जेल जाना पड़ा। मनीष सिसोदिया को जेल जाना पड़ा। सत्येंद्र जैन को जेल जाना पड़ा। केजरीवाल और आम आदमी पार्टी लगातार खुद के कट्टर ईमानदार होने की दुहाई देते रहे लेकिन दिल्ली की जनता ने उनको नकार दिया।

अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के शिल्पी अरविंद केजरीवाल जब दिल्ली की सत्ता में आए तो एक नई तरह की साफ-सुथरी, ईमानदार और वैकल्पिक राजनीति का वादा किया था। लेकिन किया क्या? सीएजी की रिपोर्ट को विधानसभा की पटल पर नहीं रखा। कभी जिस दिल्ली के एक मुख्यमंत्री मदन लाल खुराना जैन हवाला कांड में अपना नाम लिए जाने पर ही पद से इस्तीफा दे दिया था, उसी दिल्ली में अरविंद केजरीवाल ने आरोप तो छोड़िए, जेल में जाने के बाद भी इस्तीफा नहीं दिया। लालू प्रसाद यादव से लेकर हेमंत सोरेन तक तमाम मुख्यमंत्रियों ने जेल जाने की नौबत आने पर नैतिकता के आधार पर पद से इस्तीफा दिया था। लेकिन ईमानदारी की राजनीति के कथित चैंपियन केजरीवाल ने तो जेल से सरकार चलाने की ऐसी जिद दिखाई जो भारत की राजनीति में कभी नहीं हुआ। जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने इस्तीफा जरूर दिया लेकिन शायद तबतक बहुत देर हो चुकी थी। अगर जेल जाते ही इस्तीफा दिए होते तो षायद कुछ सहानुभूति इनके साथ रहती।

अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी ने पहली बार सत्ता में आने के बाद मुफ्त-बिजली पानी वाला मॉडल पेश किया। सरकारी स्कूलों और अस्पतालों की दशा में भी सुधार का दावा किया। सुधार हुए भी, लेकिन उतने भी नहीं जितना आम आदमी पार्टी ढिंढोरा पीटती रही। इस मॉडल की बदौलत दो बार सरकार भी बनाई लेकिन पार्टी इससे आगे नहीं बढ़ पाई। हर नाकामी का ठीकरा दूसरों पर फोड़ने का चलन चलाया। सड़कें बदहाल रहीं। जगह-जगह गंदगी का अंबार रहा। निगम चुनाव में जीत के बाद साफ-सफाई की जिम्मेदारी से भाग भी नहीं सकते थे। यमुना को साफ करने पर हजारों करोड़ रुपये खर्च किए गए लेकिन पानी आचमन तो छोड़िये पानी नहाने लायक भी नहीं रहा। ये सब चीजें आम आदमी पार्टी के खिलाफ गईं।

दूसरी तरफ, विरोधियों ने भी केजरीवाल के

खिलाफ उसी हथियार का इस्तेमाल किया जो उनकी ताकत थी। ये हथियार था मुफ्त वाली योजनाओं का जिन्हें राजनीति में फ्रीबीज या मुफ्त की रेवड़ियां भी कहा जाता है। केजरीवाल की फ्रीबीज पॉलिटिक्स को मुफ्त की रेवड़ियां बताकर और देश के लिए घातक बताकर खारिज करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा भी इसी होड़ में कूद गए। भाजपा ने भी महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये, त्योहारों पर मुफ्त सिलिंडर, बुजुर्गों के लिए बढ़ी हुई पेंशन, मुफ्त इलाज जैसे लोकलुभावन वादे किए। साथ में ये भी कि आम आदमी पार्टी की सरकार की तरफ से चलाई जा रहीं मुफ्त वाली योजनाओं को भी जारी रखेंगे। इस चुनाव से पहले तक भाजपा दिल्ली में मुफ्त की रेवड़ियों का विरोध किया था लेकिन इस बार उसने केजरीवाल के ही हथियार से केजरीवाल को मात दे दी।

दिल्ली में आम आदमी पार्टी की हार का एक बड़ा कारण खुद के 'अजेय होने का दंभ' भी रहा। इसी दंभ में पार्टी ने गठबंधन के लिए बढ़ाए गए हाथ को झटक दिया। अब कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत कह रही हैं कि उनकी पार्टी ने गठबंधन का प्रस्ताव दिया था लेकिन आप ने ठुकरा दिया। अरविंद केजरीवाल का दंभ बार-बार दिखा। विधानसभा में उनका वो अट्टहास, कश्मीरी पंडितों के नरसंहार पर बनी एक फिल्म को प्रॉपगैंडा बताते हुए 'यू-ट्यूब पर रिलीज कर दो' का तंज भी उनके खुद के अजेय होने के दंभ का ही परिचायक था। फिल्म प्रॉपगैंडा थी या नहीं, लेकिन केजरीवाल ने कश्मीरी पंडितों के नरसंहार को ही एक तरह से झुठलाने की कोशिश की। इससे उन पर एक खास समुदाय के तुष्टीकरण के आरोप लगे। डैमेज कंट्रोल के लिए ही उन्होंने मंदिर के पुजारियों और गुरुद्वारों के ग्रंथियों को भी हर महीने एक निश्चित रकम देने का वादा किया। लेकिन ये भी काम नहीं आया।

अरविंद केजरीवाल ने सियासत में कदम रखते ही अलग तरह की राजनीति के नाम पर बिना किसी सबूत या आधार के बाकी सभी पार्टियों और उनके नेताओं को थोक के भाव में चोर-बेईमान का सर्टिफिकेट बांटना शुरू किया था। ये सिलसिला तब खत्म हुआ जब उन्हें नितिन गडकरी, कपिल सिब्बल, अवतार सिंह भड़ाना जैसे तमाम नेताओं से अदालतों में माफी मांगनी पड़ी। खैर इन सबका उन्हें राजनीतिक नुकसान नहीं उठाना पड़ा, बस ये फर्क पड़ा कि हर विरोधी नेता को चोर बताने की उनकी आदत छूट गई। लेकिन इस बार के दिल्ली चुनाव में अरविंद केजरीवाल ने गैर-जिम्मेदार राजनीति की सारी सीमाएं लांघ दी। उन्होंने सीधे-सीधे हरियाणा की भाजपा सरकार पर यमुना के पानी में जहर डालने और नरसंहार की साजिश का गंभीर आरोप लगा दिया। जब चुनाव आयोग का नोटिस पहुंचा तो उनकी भाषा बदल गई और कहने लगे कि वह तो यमुना के पानी में बढ़े हुए अमोनिया के स्तर की बात कर रहे थे। खैर, जनता सब समझती है। और अब ये बात शायद केजरीवाल को भी समझ में आ गई हो। ●

केजरीवाल की रणनीतिक भूलें

अजीत द्विवेदी
वरिष्ठ पत्रकार

किसी घटना के घटित हो जाने के बाद उसका विश्लेषण सबसे आसान काम होता है। जैसे अरविंद केजरीवाल दिल्ली में विधानसभा का चुनाव क्यों हार गए और क्या किया होता तो नहीं हारते, यह बताने वाले असंख्य लोग हैं।

यह अलग बात है कि इनमें से कम ही लोग होंगे, जो चुनाव के मध्य में या उससे पहले लिख कर या बोल कर बता रहे थे कि केजरीवाल का अमुक काम उनके लिए नुकसानदेह होगा और अमुक काम को अगर वे इस ढंग से करते तो फायदा होता। इसमें कोई संदेह नहीं है कि केजरीवाल को हराने के लिए भारतीय जनता पार्टी और केंद्र सरकार ने पूरा दम लगाया। उसने धारणा के स्तर पर केजरीवाल की छवि भंग कर दी थी और बहुत बारीक चुनाव प्रबंधन किया था।

कांग्रेस पार्टी की भूमिका पर भी संदेह नहीं है। परंतु यह भी सही है कि अरविंद केजरीवाल की रणनीतिक भूलों ने आम आदमी पार्टी की हार का मार्ग प्रशस्त किया।

पिछले 10 साल की संचित भूलों की बात नहीं भी करें तो पिछले एक साल में उन्होंने जो गलतियां कीं उनमें मुख्य रूप से पांच गलतियों को रेखांकित किया जा सकता है, जो उनकी हार का कारण बनीं।

पहली रणनीतिक भूल इस्तीफे की टाइमिंग और उसके तरीके की है। अरविंद केजरीवाल ईमानदारी की राजनीति करके सत्ता में आए थे। उनका समर्थक वर्ग उनसे संपूर्ण ईमानदारी की उम्मीद कर रहा था।

तभी शराब नीति से जुड़े घोटाले में नाम आने और जांच शुरू होने के साथ ही अगर वे इस्तीफा देते तो यह उनकी राजनीति के अनुरूप होता।

वे नैतिकता, शुचिता और ईमानदारी के जिस उच्च मानदंड की बात करते थे उसका अनुपालन अगर उन्होंने खुद नहीं किया तो वे कैसे उम्मीद कर रहे थे कि मतदाता उस पर यकीन करेंगे! उन्होंने वह किया, जो भारतीय राजनीति में पहले किसी ने नहीं किया था। वे मुख्यमंत्री रहते जेल गए और इस्तीफा नहीं दिया। इससे उनके प्रति धारणा बदली। वे सत्तालोलुप माने गए।

केजरीवाल जेल जाकर भी सीएम बने रहने को अपना मास्टरस्ट्रोक मानते होंगे और सहानुभूति की उम्मीद करते होंगे लेकिन उनके इस एक फैसले ने सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया।

दिल्ली के लोगों में यह संदेश गया कि केजरीवाल के लिए नैतिकता, ईमानदारी, शुचिता, परंपरा, कानून नहीं, बल्कि सत्ता सबसे ऊपर है और दूसरे, दिल्ली के लोगों का हित भी उनका सरोकार नहीं है। अगर होता तो वे कामकाज ठप्प करके जेल से मुख्यमंत्री नहीं बने रहते। उनके जेल में होने से पांच महीने तक सारे कामकाज ठप्प रहे। कैबिनेट की बैठकें नहीं होती थीं।

बजट में घोषित फैसलों पर अमल नहीं हुआ। इसके बावजूद भाजपा

विरोधी समूह तो उनके साथ बना रहा परंतु लोकसभा में भाजपा को और विधानसभा में आप को वोट देने वाले 15 फीसदी के करीब का मतदाता समूह उनको छोड़ कर चला गया।

जेल से निकलने के बाद उन्होंने इस्तीफा दिया और आतिशी को मुख्यमंत्री बनाया। लेकिन उसी समय यह घोषणा कर दी कि चुनाव के बाद वे फिर मुख्यमंत्री बनेंगे।

आतिशी ने अपनी स्वामीभक्ति में आगे बढ़ कर मुख्यमंत्री की कुर्सी की बगल में एक दूसरी कुर्सी लगाई और उस पर बैठीं। लोकतंत्र में इस तरह से ऐलानिया तौर पर खड़ाऊ राज चलाने की यह पहली मिसाल थी।

अव्वल तो जब जेल से छूट गए तो इस्तीफा देने की जरुरत नहीं थी और दे दिया तो यह कहने की जरुरत नहीं थी कि चुनाव के बाद फिर हम मुख्यमंत्री बनेंगे। इससे फिर सत्ता का लालच जाहिर हुआ और महिला मुख्यमंत्री आतिशी के कामचलाऊ होने की धारणा बनी, जिससे उनकी कोई ऑथोरिटी नहीं बन पाई।

राजनीतिक गलतियों की भारी कीमत केजरीवाल के जेल जाने से जो कामकाज रूके थे वह जेल से छूटने के बाद भी नहीं हुए। उनके सामने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की मिसाल थी, जो इस्तीफा देकर जेल गए और छूटे तो मुख्यमंत्री बनते ही मइया सम्मान योजना के तहत महिलाओं को पैसे दिए।

केजरीवाल ने पिछले साल फरवरी के बजट में महिलाओं को नकद पैसे देने की घोषणा की थी लेकिन इस साल फरवरी के चुनाव तक महिलाओं को कोई पैसा नहीं मिला।

दूसरी रणनीतिक भूल गठबंधन से इनकार करना थी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी चाहते थे कि दोनों पार्टियां मिल कर लड़ें।

परंतु केजरीवाल को लग रहा था कि दिसंबर 2013 में अपने आठ विधायकों का समर्थन देकर उनको मुख्यमंत्री बनवाने की जो गलती कांग्रेस ने की थी वह गलती उनको नहीं करनी चाहिए।

अगर दिल्ली में तालमेल होता तो कांग्रेस का जो वोट उनके साथ आया है उसके लौटने की शुरूआत हो सकती थी। कांग्रेस को इसका फायदा होता। हो सकता है कि ऐसा होता लेकिन चुनाव नतीजों के बाद तो दिख रहा है कि अगर दोनों पार्टियां साथ लड़ी होतीं तो आम आदमी पार्टी जीतती और केजरीवाल फिर मुख्यमंत्री होते। अब तो वे विधायक भी नहीं हैं तो अब कांग्रेस का वोट वापस उसकी ओर लौटने से कैसे रोकेंगे?

तीसरी रणनीतिक गलती ह्यगैरों पे करम, अपनों पे सितमह्ण की थी। केजरीवाल ने 26 विधायकों की टिकट काट दी और चार विधायकों की सीट बदल दी। इनकी जगह नए लोगों को विधानसभा चुनाव में उतारा गया।

उन्होंने जिन लोगों की टिकट काटी उनमें लगभग सभी उनके पुराने और प्रतिबद्ध सहयोगी थे, जबकि जिनको टिकट दी उनमें से ज्यादातर दूसरी पार्टियों से आए मौकापरस्त नेता थे।

मिसाल के तौर पर आंदोलन के समय से साथी रहे दिलीप पांडेय की टिकट केजरीवाल ने काट दी और दो बार कांग्रेस से विधायक रह चुके सुरेंद्र पाल सिंह बिट्टू को तिमारपुर से टिकट दिया।

नतीजा क्या हुआ? आप के लोगों ने बिट्टू का साथ नहीं दिया और वे चुनाव हार गए। ऐसे ही विधानसभा के स्पीकर रामनिवास गोयल की टिकट काट कर भाजपा से आए जितेंद्र सिंह शंटी को उम्मीदवार बनाया और वे 25 हजार से ज्यादा वोट से हारे।

केजरीवाल ने नौ ऐसे लोगों को टिकट दी, जो भाजपा और कांग्रेस छोड़ से पटपड़गंज सीट से जीत रहे थे।

दावा किया जा रहा था कि उन्होंने दिल्ली में शिक्षा क्रांति की और 18 विभागों का मंत्री रहते उन्होंने दिल्ली का कायाकल्प किया।

सोचें, जो व्यक्ति पूरी दिल्ली की तस्वीर बदल रहा था उसने क्यों अपने चुनाव क्षेत्र की तस्वीर ऐसी नहीं कर दी कि उसे क्षेत्र न छोड़ना पड़े? सिसोदिया के सीट बदलने का बहुत नकारात्मक असर हुआ। आम आदमी पार्टी की 10 साल की सरकार के सारे किए धरे पर पानी फिर गया। क्या होता अगर सिसोदिया वहां जातीय या क्षेत्रीय ध्रुवीकरण में हार जाते? हार तो वे जंगपुरा में भी गए!

अगर वे सीट नहीं बदलते तो हो सकता है कि वे हार जाते लेकिन आप सरकार के कामकाज को लेकर इतनी नकारात्मक धारणा नहीं बनती।

कर आए थे। उनमें से छह लोग चुनाव हारे। उन्होंने जिन 27 नए लोगों को टिकट दी थी उनमें से 20 लोग चुनाव हार गए।

चौथी रणनीतिक भूल सिसोदिया की सीट बदलना थी। अरविंद केजरीवाल 2013 में आधी लड़ाई उसी दिन जीत गए थे, जिस दिन उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के खिलाफ लड़ने का फैसला किया।

उसी तरह 2025 की आधी लड़ाई वे उसी दिन हार गए, जिस दिन उन्होंने अपने नंबर दो मनीष सिसोदिया की सीट बदली। सिसोदिया तीन बार

पांचवीं रणनीतिक भूल मुफ्त की योजनाओं पर अति निर्भरता रही। अरविंद केजरीवाल ने अपने 10 साल के शासन में यह मान लिया कि मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, महिलाओं को मुफ्त बस पास आदि के नाम पर ही चुनाव जीता जा सकता है।

इसके अलावा किसी अन्य बात पर ध्यान देने की जरुरत नहीं है। उन्होंने दिल्ली के लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं की पूरी तरह से अनदेखी कर दी।

यमुना नदी मर चुकी है दिल्ली की सड़कें टूट रही हैं, नई या वैकल्पिक सड़क नहीं बनने से ट्रैफिक की स्थिति बदतर होती जा रही है, यमुना में नाले गिरने और सफाई नहीं होने से यमुना नदी मर चुकी है। जल बोर्ड का पानी इतना दूषित हो गया है कि लोगों को अनेक किस्म की बीमारियां हो रही हैं, सर्दियों में तीन से चार महीने वायु प्रदूषण से लोगों का दम घुट रहा है, सड़कों से लेकर गलियों और कॉलोनियों में बेतहाशा अतिक्रमण बढ़ रहा है। रोजगार बढ़ाने का कोई उपाय नहीं हो रहा है, नए स्कूल और नए अस्पताल नहीं बन रहे हैं, बुनियादी ढांचे के विकास पर सरकार का ध्यान नहीं है, लेकिन केजरीवाल इस मुगालते में रहे मुफ्त की चीजों और सेवाओं के आगे इनकी कोई जरुरत नहीं है।

वे भूल गए कि दिल्ली देश के दूसरे हिस्सों के मुकाबले ज्यादा जागरूक, सजग और समृद्ध लोगों का शहर है, जहां मुफ्त की चीजों से आगे भी कुछ करने की जरुरत थी।

आम लोगों खास कर मध्य वर्ग की तकलीफों से केजरीवाल के तटस्थ हो जाने का बड़ा असर चुनाव पर हुआ। चुनाव बाद के सर्वेक्षणों में से भी पता चलता है कि भ्रष्टाचार के साथ साथ सफाई, साफ पानी और साफ हवा की मांग ने केजरीवाल को हराने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई। ●

सियासत में युवाओं की भागीदारी की जरूरत

डॉ सत्यवान सौरभ
स्तंभकार

राजनीति में युवाओं की भागीदारी न केवल एक लक्ष्य है, बल्कि यह समावेशी और प्रगतिशील लोकतंत्र के लिए एक आवश्यक शर्त भी है। हालांकि, बहुत कम युवा लोग राजनीति में भाग लेना जारी रखते हैं और उनकी आवाज को अक्सर स्थापित सत्ता संरचना दबा देती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में बिना राजनीतिक अनुभव वाले एक लाख युवाओं को राजनीति में प्रवेश करने के लिए आमंत्रित करने का प्रस्ताव दिया है जो विकेंद्रीकरण, समावेशिता और युवा सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। ज्ञान के भंडार वाले अनुभवी नेताओं ने पारंपरिक रूप से भारतीय राजनीति में एक प्रमुख स्थान रखा है। वे अक्सर पारंपरिक ढांचों के भीतर काम करते हैं, जो समकालीन मुद्दों को संभालने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि उनका ज्ञान अमूल्य है। युवा नेता रचनात्मक समाधान, तकनीकी जानकारी और समकालीन शासन मॉडल का योगदान देकर गतिशील और डेटा-संचालित नीति निर्माण की सुविधा प्रदान करते हैं।

एक स्थायी भविष्य की गारंटी के लिए, युवा नेता हरित कानूनों, नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं और जलवायु अनुकूलन रणनीतियों को बढ़ावा दे सकते हैं। युवा-संचालित शासन में उद्यमिता, कौशल विकास और उच्च-गुणवत्ता वाली शिक्षा को प्राथमिकता देकर बेरोजगारी और अल्परोजगार को सम्बोधित करने की क्षमता है। युवाओं की भागीदारी के माध्यम से, भारत पारदर्शी और प्रभावी शासन प्राप्त करने के लिए ब्लॉकचेन, स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बेहतर उपयोग कर सकता है। नागरिक भागीदारी के लिए सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म का उपयोग करके, युवा लोग जवाबदेही में सुधार कर सकते हैं, लोकतांत्रिक मूल्यों को पुनर्जीवित कर सकते हैं और राजनीतिक भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं। युवा जो राजनीतिक रूप से जागरूक और सक्रिय हैं, वे गारंटी देते हैं कि लोकतंत्र जीवित रहेगा और लोगों की मांगों के प्रति उत्तरदायी रहेगा।

भारतीय राजनीति में पारंपरिक रूप से वंशवादी परिवारों का वर्चस्व रहा है, जिससे योग्यता-आधारित और जमीनी स्तर के नेतृत्व के लिए बहुत कम जगह बची है। परिवार या पैसे के समर्थन के बिना, कई युवा उम्मीदवारों को राजनीतिक मंच प्राप्त करना मुश्किल लगता है। युवाओं में अक्सर राजनीतिक प्रशासन, नीति विश्लेषण और शासन में औपचारिक प्रशिक्षण की कमी होती है, भले ही उनमें उच्च स्तर का उत्साह हो। वर्तमान राजनीतिक दलों द्वारा दी जाने वाली सलाह की कमी युवा नेताओं को खुद की रक्षा करने के लिए मजबूर करती है। चूँकि कार्यालय चलाने के लिए महत्त्वपूर्ण वित्तीय निवेश की आवश्यकता होती है, इसलिए पहली पीढ़ी के राजनेताओं के लिए अधिक अनुभवी नेताओं के साथ प्रतिस्पर्धा करना चुनौतीपूर्ण होता है। राजनीति के अपराधीकरण के साथ-साथ पैसा और शारीरिक शक्ति अक्सर शिक्षित युवाओं को सार्वजनिक सेवा में करियर बनाने से रोकती है। प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए, कई राजनीतिक दल युवा नेताओं को निर्णय लेने की शक्ति दिए बिना शामिल करते हैं। इस सतही समावेशन के परिणामस्वरूप युवा राजनेताओं को शासन संरचनाओं में अधिक प्रभाव या परिवर्तन नहीं दिया जाता है।

युवा नेताओं द्वारा समान आर्थिक विकास, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा का समर्थन करने वाली नीतियों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बेरोजगारी, जातिगत भेदभाव और लैंगिक समानता जैसे सामाजिक मुद्दों के लिए प्रगतिशील नीतियों और जमीनी स्तर पर भागीदारी की आवश्यकता होती है। संधारणीय कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा पहल और पर्यावरण के अनुकूल शहरी नियोजन सभी को युवा नेतृत्व द्वारा आगे बढ़ाया जा सकता है। ग्रीन इंडिया और क्लीन इंडिया (स्वच्छ भारत) जैसी पहलों के लिए अधिक मजबूत युवा-संचालित कार्यान्वयन योजनाओं की आवश्यकता होती है। आने वाली पीढ़ी को उन्नत कौशल प्रदान करने के लिए डिजिटल इंडिया, स्टार्ट-अप इंडिया और स्किल इंडिया जैसे कार्यक्रमों का विस्तार करना आवश्यक है। दुनिया में भारत का नेतृत्व जैव प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में इसके निवेश पर बहुत अधिक निर्भर करेगा। लोकतंत्र के पतन को रोकने के लिए, युवा सक्रियता और नागरिक जुड़ाव को खुले, जवाबदेह और लोगों पर केंद्रित शासन की गारंटी देनी चाहिए। सहभागी शासन मॉडल और सूचना के अधिकार (आरटीआई) कानून को मजबूत करके लोकतंत्र को गहरा किया जा सकता है।

राजनीतिक दलों द्वारा उम्मीदवारों का चयन उनकी दूरदर्शिता, योग्यता और नेतृत्व की क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए, जिसमें पक्षपात पर योग्यता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। युवा नेताओं को उनके पारिवारिक सम्बंधों के बजाय उनके प्रदर्शन के आधार पर आगे बढ़ने में सक्षम बनाने के लिए पार्टियों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करना आवश्यक है। मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करके शासन, नीति निर्माण और विधायी प्रक्रियाओं में युवा राजनेताओं को औपचारिक रूप से सलाह दें। युवाओं को प्रशासन और कानून की व्यावहारिक समझ देने के लिए, विश्वविद्यालय और अन्य संस्थान ‡राजनीतिक नेतृत्व और शासन‡ पाठ्यक्रम प्रदान कर सकते हैं। युवाओं को वित्तीय बाधाओं का सामना किए बिना कार्यालय चलाने में सक्षम बनाकर, चुनावों के लिए राज्य वित्त पोषण खेल के मैदान को समतल करने में मदद कर सकता है। भ्रष्टाचार से मुक्त और निष्पक्ष वातावरण स्थापित करने के लिए राजनीतिक अपराधीकरण के खिलाफ सख्त कानून लागू करना आवश्यक है। युवा राजनेताओं की क्षमता बढ़ाने और मतदाताओं को शिक्षित करने के कार्यक्रमों को नागरिक समाज संगठनों द्वारा सक्रिय रूप से आगे बढ़ाया जाना चाहिए। शासन में सफल होने वाले युवाओं की कहानियों को अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए मीडिया में दिखाया जाना चाहिए।

युवाओं की भागीदारी को संस्थागत बनाने के लिए, राजनीतिक दलों और शासन संरचनाओं को युवा प्रतिनिधित्व के लिए न्यूनतम कोटा लागू करना चाहिए। सलाहकार परिषदों, युवा संसदों और मंत्रालय इंटर्नशिप जैसे नेतृत्व के अवसरों को बढ़ाया जाना चाहिए। आज लिए गए निर्णय आने वाले दशकों में भारत के मार्ग को प्रभावित करेंगे क्योंकि देश अपने इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। स्वामी विवेकानंद की सलाह ‡उठो, जागो और आगे बढ़ो‡ आज भी लागू है। ●

रमेश सर्राफ धमोरा
वरिष्ठ पत्रकार

कोटा में आत्महत्याओं के दाग

राजस्थान का कोटा शहर कोचिंग संस्थानों में पढ़ने वाले छात्रों के आत्महत्याओं के कारण अब बदनाम हो रहा है। हालांकि कोटा में छात्र आत्महत्याओं के मामले यहां पर कोचिंग लेने वाले छात्रों की संख्या की तुलना में बहुत कम है। लेकिन यहां पढ़ने वाले छात्रों के लगातार आत्महत्याओं की दुखद घटनाओं को नकारा भी नहीं जा सकता है। पिछले जनवरी माह में ही कोटा में 6 विद्यार्थियों ने आत्महत्या कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली थी। इसी साल 8 जनवरी को हरियाणा के महेंद्रगढ़ निवासी छात्र नीरज, 9 जनवरी को गुना मध्य प्रदेश के अभिषेक लोधा, 15 जनवरी को उड़ीसा के अभिजीत गिरी, 18 जनवरी को बूंदी जिले के मनन जैन, 22 जनवरी को अहमदाबाद गुजरात की अफ्शा शेख और 22 जनवरी को ही नौगांव असम के छात्र पराग ने आत्महत्या कर ली थी। इनमें से पांच छात्र इंजीनियरिंग की व एक छात्रा नीट की तैयारी कर रही थी।

कोचिंग के बड़े केंद्र कोटा में पढ़ने वाले छात्रों की आत्महत्या की घटनाएं शहर के दामन पर दाग लगा रही है। कोटा में 2015 से लेकर अब तक 138 छात्रों ने आत्महत्या कर अपने जीवन लीला समाप्त कर चुके हैं। यहां 2015 में 18, 2016 में 17, 2017 में 7, 2018 में 20, 2019 में 18, 2020 में 4, 2021 में एक, 2022 में 15, 2023 में 26, 2024 में 16 व 2025 में अब तक छह छात्र आत्महत्या कर अपनी जान गंवा चुके हैं। 2020 व 2021 में कोविड के चलते यहां के कोचिंग संस्थाओं के बंद रहने के कारण आत्महत्याओं के आंकड़ों में गिरावट रही थी। कोटा में कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई करने वाले छात्रों द्वारा लगातार की जा रही आत्महत्या की घटनाओं से पूरा देश सकते में है। सरकार व प्रशासन के लाख प्रयासों के उपरांत भी कोटा के छात्रों में आत्महत्या की घटनाएं रूक नहीं पा रही हैं।

कोटा कभी राजस्थान का बड़ा औद्योगिक नगर होता था। मगर श्रमिक आंदोलनो के चलते यहां के उद्योग धंधे बंद होते गए। आज कोटा में नाम मात्र के ही उद्योग रह गए हैं। 1990 के दौरान कोटा शहर में कोचिंग संस्थान खुलने लगे थे। 2005 तक यहां बड़ी संख्या में कोचिंग संस्थान स्थापित हो गए, जिनमें प्रतिवर्ष लाखों छात्र पढ़ने लगे। आज कोटा शहर की पूरी अर्थव्यवस्था इन कोचिंग संस्थानों पर ही निर्भर है। शहर के हर चौक-चौराहों पर छात्रों की सफलता से अटे पड़े बड़े-बड़े होर्डिंग्स बताते हैं कि अब कोटा में कोचिंग ही सब कुछ है।

यह सही है कि कोटा में सफलता की दर तीस प्रतिशत से उपर रहती है। देश के इंजीनियरिंग और मेडिकल के प्रतियोगी परीक्षाओं में टाप टेन में पांच छात्र कोटा के रहते हैं। मगर उसके साथ ही कोटा में एक बड़ी संख्या उन छात्रों की भी है जो असफल हो जाते हैं। एक अनुमान के मुताबिक कोटा के कोचिंग मार्केट का सालाना आठ से दस हजार करोड़ का टर्नओवर है। कोचिंग सेन्टरों द्वारा सरकार को सालाना 800 करोड़ रुपए से अधिक टैक्स के तौर पर दिया जाता है।

कोटा शहर देश में कोचिंग का सबसे बड़ा केन्द्र बन चुका है। यहां प्रतिवर्ष लाखों छात्र कोचिंग करने के लिए आते हैं। जिससे कोचिंग संचालकों को सालाना कई हजार करोड़ रुपए की आय होती है। हालांकि कोटा आने वाले सभी छात्र मेडिकल व इंजीनियरिंग परीक्षा में सफल नहीं होते हैं। मगर देश की शीर्षस्थ मेडिकल व इंजीनियरिंग संस्थानों में चयनित होने वाले छात्रों में कोटा के छात्रों की संख्या काफी होती है। इसी कारण अभिभावक अपने बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं।

कोटा में छात्रो के आत्महत्या करने का मुख्य कारण छात्रों पर पढ़ाई करने के लिए पड़ने वाला

मनोवैज्ञानिक दबाव को माना जा रहा है। कोटा में कोचिंग लेने वाले छात्रों को प्रतिवर्ष लाखों रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बहुत से छात्रों के अभिभावकों की स्थिति इतना खर्च वहन करने की नहीं होती है। यहां पढ़ने वाले छात्रों में अधिकांश मध्यम वर्गीय परिवारों से होते हैं। उनके अभिभावक आर्थिक रूप से अधिक सक्षम नहीं होते हैं। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के लिए वह लोग विभिन्न स्तरों पर पैसों की व्यवस्था कर बच्चों को कोचिंग के लिए कोटा भेजते हैं।

कोटा आने वाले छात्रों को पता है कि उनके अभिभावकों ने कितनी मुश्किल से कोचिंग लेने के लिए उन्हें कोटा भेजा है। ऐसे में यदि वह सफल नहीं होंगे तो उनके अभिभावक जिंदगी भर कर्ज में दबे रह जाएंगे। यही सोचकर छात्र हमेशा मनोवैज्ञानिक दबाव महसूस करता रहता है। इसके अलावा यहां पढ़ने वाले छात्रों पर पढ़ाई का भी बहुत अधिक दबाव रहता है। यहां के कोचिंग संस्थानो में कई शिफ्टों में अलग-अलग बैच में पढ़ाई होती हैं। कोचिंग संस्थान भी अच्छा परिणाम दिखाने के चक्कर में छात्रों को मशीन बनाकर रख देते हैं। छात्रों पर हर दिन पढ़ाई का दबाव बना रहता है तथा साप्ताहिक टेस्ट पास करने के चक्कर में छात्र दिन-रात पढ़ाई करते रहतें हैं। जिससे ना तो उनकी नींद पूरी हो पाती है ना ही वह मानसिक रूप से आराम कर पाते हैं। ऐसे में छात्र जल्दी उठकर कोचिंग संस्थान में जाकर पढ़ाई करने व दिनभर पढ़ाई में व्यस्त रहने के कारण वह तनाव में आ जाता है। इससे कई छात्र पढ़ाई में पिछड़ने के डर से आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं।

कोटा में देश के तमाम नामी गिरामी संस्थानों से लेकर छोटे-मोटे 300 कोचिंग संस्थान चल रहे हैं। दिल्ली, मुंबई के साथ ही कई विदेशी कोचिंग संस्थाएं भी कोटा में अपना सेंटर खोल रही हैं। लगभग ढ़ाई लाख छात्र इन संस्थानों से कोचिंग ले रहे हैं। कोटा में सफलता की बड़ी वजह यहां के शिक्षक हैं। आईआईटी और एम्स जैसे इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेजों में पढने वाले छात्र बड़ी-बड़ी कम्पनियों और अस्पतालों की नौकरियां छोडकर यहां के कोचिंग संस्थाओं में पढ़ा रहे हैं। तनख्वाह ज्यादा होने से कोटा शहर में 75 से ज्यादा आईआईटी पास छात्र पढ़ा रहे हैं।

केंद्र सरकार ने कोचिंग संस्थानों के लिए दिशानिदेर्शों की घोषणा की है। जिनमें कोचिंग संस्थान 16 वर्ष से कम आयु के छात्रों का नामांकन नहीं कर सकते। इसके अलावा न ही वे अच्छी रैंक या अच्छे अंकों की गारंटी दे सकते हैं और न ही गुमराह करने वाले वायदे कर सकते हैं। छात्रों के आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं, कोचिंग सेंटरों में सुविधाओं का अभाव और उनके पढ़ाने के तौर- तरीकों के बारे में शिकायतें मिलने के बाद सरकार ने इनकी घोषणा की है। दिशानिदेर्शों के अनुसार कोई भी कोचिंग सेंटर स्नातक से कम शिक्षा वाले ट्यूटर को नियुक्त नहीं करेगा। छात्रों का नामांकन सिर्फ सेकेंडरी स्कूल परीक्षा देने के बाद हो सकेगा।

कोटा में छात्रों की बढ़ती आत्महत्या की घटनाओं पर राजस्थान उच्च न्यायालय की जयपुर पीठ द्वारा स्व प्रेरित संज्ञान आधारित याचिका की सुनवाई के दौरान राजस्थान सरकार की तरफ से कहा गया है कि विधानसभा के मौजूदा सत्र में इसके लिए एक नया कानून लाया जाएगा। जिससे आत्महत्याओं की घटनाओ पर रोक लगाई जा सकेगी।

सरकार चाहे जितनी कोशिश करे कोटा में पढ़ने वाले छात्र जब तक बिना किसी दबाव के पढाई करेंगे तभी यहां का माहौल सुधरेगा। यहां चल रहे कोचिंग संस्थानों को मशीनी स्तर पर चलाई जा रही प्रतिस्पर्धा को रोककर एक सकारात्मक वातावरण बनाना होगा। तभी छात्र खुद को सुरक्षित महसूस कर पढाई कर पाएंगे। कोटा में संचालित कोचिंग संस्थान अपने काम को पैसे कमाने कि मशीन समझना बंद कर अपने छात्रों के साथ संवेदनशील व्यवहार नहीं करेंगे तब तक कोटा के हालात नहीं सुधर पायेंगे। कोटा के मौजूदा हालातों के कारण ही यहां कोचिंग लेने वाले छात्रों की संख्या में काफी कमी होने लगी हैं। जो कोटा शहर की अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। ●

(लेखक के अपने विचार हैं।)

चीन: विकास यह होता है!

विनीत नारायण

टकलामकन रेगिस्तान को रोकने और हराभरा बनाने की पहल पर अर्से से काम चल रहा था। ग्रीनबेल्ट का पहला 2,761 किलोमीटर का काम कई वर्षों में पूरा हुआ, अंतिम चरण नवंबर 2022 में शुरू हुआ, जिसमें रेगिस्तानी चिनार, लाल विलो और सैक्सौल पेड़ों जैसी लचीली, रेगिस्तान-अनुकूल प्रजातियों को रोपने के लिए छह लाख श्रमिकों को एक साथ लाया गया।

ये पौधे कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैंः वे खिस्कती रेत को सहारा देते हैं, रेगिस्तान के विस्तार को धीमा करते हैं, और स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं।

पड़ोसी देश चीन ने पिछले सप्ताह एक बार फिर से सुर्खियाँ बनाई। इस बार भारत में घुसपैठ की नहीं बल्कि भारत और दुनिया भर के लिए एक उदाहरण के रूप में उसकी सुर्खी है।

चीन ने अपने नवाचार द्वारा एक रेगिस्तान को न सिर्फ.रोका बल्कि उसे हरा-भरा भी कर दिया। चीन का यह विकास कार्य अन दिनों काफी चर्चा में है।

'मौत का सागर' के रूप में जाने जाना वाला टकलामकन रेगिस्तान 3,37,600 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसका आकार लगभग पश्चिमी देश जर्मनी के बराबर का क्षेत्र है।

इसके विशाल रेत के टीलों और बार-बार आने वाले रेतीले तूफानों ने लंबे समय तक मौसम के पैटर्न को बाधित किया है।

कृषि को खतरे में डाला है और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। जवाब में, चीन ने एक व्यापक हरित अवरोध लागू किया है, जिसे रेगिस्तान के किनारों को लॉक करने और इसके नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को स्थिर करने के लिए डिजाइन किया गया है।

इन प्रयासों ने न केवल रेलवे और राजमार्गों जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा की है, बल्कि यह भी प्रदर्शित किया है कि टिकाऊ प्रौद्योगिकियां मरुस्थलीकरण का प्रतिकार कैसे कर सकती हैं।

सौर ऊर्जा से संचालित सिंचाई प्रणालियों को एकीकृत करके, चीन पृथ्वी पर सबसे कठिन वातावरणों में से एक में वनस्पति को बनाए रखने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग कर रहा है।

टकलामकन रेगिस्तान के इस व्यापक पहल पर चार दशकों से काम चलाया गया। ग्रीनबेल्ट का पहला 2,761 किलोमीटर का काम कई वर्षों में पूरा हुआ, अंतिम चरण नवंबर 2022 में शुरू हुआ, जिसमें रेगिस्तानी चिनार, लाल विलो और सैक्सौल पेड़ों जैसी लचीली, रेगिस्तान-अनुकूल प्रजातियों को रोपने के लिए 600,000 श्रमिकों को एक साथ लाया गया, जो शुष्क परिस्थितियों में जीवित रहने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं।

ये पौधे कई उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं: वे खिसकती रेत को सहारा देते हैं, रेगिस्तान के विस्तार को धीमा करते हैं, और स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं।

यह परियोजना इतिहास में सबसे महत्वाकांक्षी पुनर्वनीकरण प्रयासों में से एक का प्रतिनिधित्व करती है, जो दुनिया भर में भूमि क्षरण से निपटने के लिए एक नई मिसाल कायम करती है।

उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में ग्रीनबेल्ट का प्राथमिक लक्ष्य मरुस्थलीकरण को रोकना है, यह परियोजना दीर्घकालिक आर्थिक अवसर भी पैदा कर रही है।

कुछ नए लगाए गए पेड़, जैसे कि रेगिस्तानी जलकुंभी, में औषधीय गुण होते हैं, जो संभावित रूप से हर्बल चिकित्सा के लिए आकर्षक बाजार खोलते हैं।

रेत से राह तक इसके अलावा, 2022 में, चीन ने हॉटन-रुओकियांग रेलवे का उद्घाटन किया, जो रेगिस्तान के चारों ओर दुनिया की पहली पूरी तरह से घिरी हुई रेलवे थी।

2,712 किलोमीटर लंबा रेलवे रेगिस्तानी शहरों को जोड़ता है, जिससे अखरोट और लाल खजूर जैसे स्थानीय कृषि उत्पादों को पूरे चीन के बाजारों तक पहुंचाना आसान हो जाता है, जिससे क्षेत्रीय व्यापार और विकास को और बढ़ावा मिलता है।

खबरों के मुताबिक चीन पुनर्वनरोपण पर रोक नहीं लगा रहा है बल्कि ताकलामाकन रेगिस्तान में एक विशाल नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना भी चल रही है।

चाइना थ्री गोरजेस कॉर्पोरेशन 8.5 गीगावाट सौर ऊर्जा और 4 गीगावाट पवन ऊर्जा स्थापित करने की योजना का नेतृत्व कर रहा है, जिसके अगले चार वर्षों में पूरा होने की उम्मीद है।

झिंजियांग पहले से ही चीन की स्वच्छ ऊर्जा रणनीति में एक ट्रीय ग्रिड में एकीकृत करना है। रेगिस्तान की बहाली को टिकाऊ ऊर्जा उत्पादन के साथ जोड़कर, चीन उस चीज को हरित विकास के अवसर में बदल रहा है जो कभी एक पारिस्थितिक चुनौती थी।

गौरतलब है कि टकलामकन ग्रीनबेल्ट की सफलता मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण से निपटने के वैश्विक प्रयासों के अनुरूप है।

इसी तरह की बड़े पैमाने की परियोजनाएं, जैसे कि अफ्रीका की ग्रेट ग्रीन वॉल, का उद्देश्य पूरे महाद्वीप में 8,000 किलोमीटर लंबे वृक्ष अवरोधक लगाकर सहारा रेगिस्तान के विस्तार को रोकना है।

इस विकास कार्य पर चीन का दृष्टिकोण सौर ऊर्जा, वनीकरण और आर्थिक प्रोत्साहन को एकीकृत करना है। टकलामकन रेगिस्तान का विकास कार्य समान पारिस्थितिक खतरों का सामना करने वाले अन्य देशों के लिए एक खाका के रूप में भी कार्य कर रहा है।

अब जब तकलामाकन ग्रीनबेल्ट पूरा हो गया है, तो अगले चरण में इसकी दीर्घकालिक दक्षता बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा कि यह एक टिकाऊ, आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र बना रहे।

जानकारों के अनुसार यह अभूतपूर्व उपलब्धि नवीन पर्यावरणीय समाधानों के प्रति चीन की प्रतिबद्धता ट्र ने न केवल अपने स्वयं के बुनियादी ढांचे और कृषि को सुरक्षित किया है, बल्कि भविष्य की वैश्विक रेगिस्तान बहाली परियोजनाओं के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया है।

अत्याधुनिक सौर ऊर्जा संचालित रेत नियंत्रण, बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण का संयोजन दर्शाता है कि मरुस्थलीकरण एक अपरिवर्तनीय प्रक्रिया नहीं है। निरंतर अनुसंधान और निवेश के साथ, रेगिस्तानों के अतिक्रमण से जूझ रहे अन्य क्षेत्र जल्द ही चीन के नक्शेकदम पर चल सकते हैं, जिससे यह साबित होगा कि सही तकनीक और रणनीति के साथ, यहां तक कि सबसे कठिन परिदृश्यों को भी संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र में बदला जा सकता है।

भारत सहित सभी विकासशील देशों को चीन से सबक लेते हुए यह सीखना चाहिए कि विषम परिस्थितियों में भी विकास कार्य किए जा सकते हैं। ओछी राजनीति करने से किसी का भी लाभ नहीं होता।

यदि किसी भी प्रदेश में किसी विपक्षी दल ने उस क्षेत्र के विकास के लिए कुछ ठोस कदम उठाए हैं तो उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। यदि केंद्र में और राज्य में दो अलग दलों की सरकार भी हो तो विकास कार्यों पर किसी भी तरह की रोक लगाना आम जनता के साथ धोखा है।

यदि विपक्षी दल की सरकार के चुनाव हारने के बाद किसी अन्य दल की सरकार भी आती है तो उसे भी पुराने विकास के कार्यों को पूरा करना चाहिए।

विकास कार्यों के निष्पादन में अक्सर भ्रष्टाचार का बोल बाला माना जाता है। परंतु कार्यों के निष्पादन में होने वाले भ्रष्टाचार से कहीं बड़ा उस कार्य की योजना में होने वाला भ्रष्टाचार होता है जिसे अनुभवहीन इंजीनियर और आर्किटेक्ट जन्म देते हैं।

इसलिए यदि सही सोच वाला नेतृत्व सही योजनाओं को स्वीकृति करे तो ऐसे भ्रष्टाचार से बचा जा सकता है और ताकलामाकन रेगिस्तान जैसे कई विकास कार्य दोहराया जा सकते हैं। ●

के. पी. मलिक
वरिष्ठ पत्रकार

भारत में बदलती सियासी तस्वीर

पिछले एक दशक में जितनी तेजी से हिंदुस्तान की राजनीतिक तस्वीर बदली है, उससे न सिर्फ हिंदुस्तान का सामाजिक माहौल, बल्कि राजनीतिक माहौल भी नफरत भरा हो गया है। साल 2014 के बाद हमने जिस प्रकार से संसद के भीतर नफरत भरी बयानबाजियों को सुना है, वो माहौल पहले कभी नहीं देखा गया। इसके अलावा देश में छोटी राजनीतिक पार्टियों का राजनीतिक कैरियर खत्म करने का काम भी बहुत तेजी से हो रहा है। मुझे याद आता है कि साल 2014 से पहले संसद और देश में इस प्रकार का माहौल नहीं होता था, ये वो समय था जब सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच नोकझोंक भी होती थी, तो उसमें तीखे सवालों की तल्खी के साथ-साथ मीठापन भी होता था और सवाल-जवाब होते थे। कई बार तो संसद में सरकार को जवाब देना भारी पड़ जाता था, लेकिन किसी ने भी किसी की भावना को आहत नहीं किया और न ही उस तल्खी को बाहर सड़क तक नफरत में नहीं बदला।

बहरहाल, साल 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुले मंच से कहा था कि मेरा देश बदल रहा है। मेरे खयाल से तब लोगों को यही समझ आया था कि देश तरक्की कर रहा है। और ज्यादातर लोगों ने ऐसा ही माना, लेकिन उसी बीच में न सिर्फ देश में अचानक नोटबंदी की घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की, बल्कि रोजगार खत्म होने के अलावा महंगाई तेजी से बढ़ने लगी। छोटी पार्टियों में जो भी केंद्र की मोदी सरकार की आलोचना करने लगीं, उनके नेताओं को ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स अफसरों की छापेमारी के मामले लगातार तेजी से आने लगे और जो साथ हो गए, उनको अंदर ही अंदर इतना कमजोर कर दिया गया कि अब उनके प्रमुखों की कमर ठीक से सीधी नहीं हो पा रही है। उनका हाल ऐसा हो गया कि अब वो न गठबंधन तोड़ने की स्थिति में दिख रहें हैं और न ही गठबंधन में रहने की इच्छुक हैं। सबसे ताजा उदाहरण महाराष्ट्र और बिहार का है, जहां भाजपा के एनडीए गठबंधन का हिस्सा बने एकनाथ शिंदे और नीतीश कुमार की यही हालत है। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे ने शिवसेना में बगावत करके सीएम बनने के चक्कर में भाजपा के साथ मिलकर महाअघाड़ी की सरकार बीच में ही गिराकर एनडीए की सरकार बना तो ली, लेकिन इस बार जैसे ही चुनावों में भाजपा बहुमत के करीब पहुंची, उसने उन्हें उनकी औकात दिखाने में वक्त नहीं लगाया। इसी प्रकार से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जो कि जेडीयू के मुखिया भी हैं, ने लालू प्रसाद की पार्टी से गठबंधन तोड़कर भाजपा के साथ मिलकर एनडीए की साझा सरकार बना तो ली, लेकिन अब वो भी छटपटा रहे हैं। ऐसे कई और उदाहरण भी आज के राजनीतिक दौर में हम देख सकते हैं, जिन्हें भाजपा ने अपनी सरकारों को मजबूत करने का अवसर तो आगे बढ़कर दिया, लेकिन अब उन्हें वहीं बैठना पड़ रहा है, जहां भाजपा चाहती है। दूसरी तरफ विरोधी पार्टियों की नींद ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स के अफसरों ने उड़ा ही रखी है। पिछले साल इस मामले में जब खुलासा हुआ, तो पता चला कि देश में तकरीबन 9 सालों में जिन लोगों के यहां छापेमारी करके उन्हें आरोपी बनाया गया, उनमें से ज्यादातर मामले झूठे निकले थे। हालांकि साल 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद जबसे भाजपा की कम सीटें आने के बाद बैसाखियों के सहारे मोदी सरकार केंद्र में बनी है, तब से ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स के अफसरों की छापेमारी के मामले भी कम हुए तो अब चुनाव आयोग के किस्से चर्चा में हैं कि किस तरीके से चुनाव आयोग वोटिंग के बाद ईवीएम में वोट बढ़ने को लेकर खामोश है और चुनाव जीतने के बाद वो न सिर्फ भाजपा की तरफदारी करता दिखता है, बल्कि साफ तौर पर कोई भी गड़बड़ी होने से मना भी कर देता है। और तो और अब चुनाव आयोग को भाजपा के उम्मीदवारों के द्वारा आचार संहिता की धज्जियां उड़ाने पर भी कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। इसका सबसे बड़ा नमूना दिल्ली में देखा जा सकता है, जहां भाजपा के कई उम्मीदवार और उनके समर्थक लोगों को पैसे बांटते हुए दिख रहे हैं। अब लोगों को समझ में आ ही रहा होगा कि देश कैसे बदल रहा है, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने साल 2016 में कहा था।

बहरहाल, किसी ने नहीं सोचा होगा कि देश आखिर किस तरीके से बदलेगा और इतना बदल जाएगा कि मौजूदा सरकार के आगे सारी राजनीतिक पार्टियां न सिर्फ लाचार हो जाएंगी, बल्कि केंद्र की मोदी सरकार का विरोध तक नहीं कर पाएंगी। हिंदुस्तान में इस बदलती राजनीति और बढ़ती नफरत ने न सिर्फ सामाजिक, बल्कि आर्थिक रूप से भी देश को इतना कमजोर कर दिया है कि अब तक देश पर तकरीबन तीन गुने से ज्यादा न सिर्फ कर्ज हो गया है, बल्कि लोगों की दाल-रोटी भी छिनती नजर आ

रही है। लेकिन भाजपा और उसकी मातृ सत्ता संघ को अभी भी पूरे देश पर हुकूमत करना इतना भी आसान नहीं है और ये बात भाजपा और संघ के सभी बड़े नेता बखूबी समझ भी रहे हैं। क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी अपनी भाजपा टीम के साथ आईटी सेल के सहारे जिस प्रकार से कांग्रेस मुक्त भारत का नारा लगाकर आगे बढ़ रहे थे और उन्हें उम्मीद थी कि साल 2030 के आने से पहले ही वो कांग्रेस को राजनीति से बाहर कर देंगे, उनका वो सपना तब टूट गया, जब साल 2022 में पहली बार राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा का अचानक ऐलान करके दो बार में तकरीबन पूरे हिंदुस्तान को पैरों से नाप लिया। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा इतनी सफल हो सकती है कि अगले ही लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 99 सीटें ले जाएगी, ये बात न तो भाजपा, खास तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सोची थी और न ही संघ प्रमुख मोहन भागवत और दूसरे संघ के बड़े नेताओं ने ही सोची थी। लेकिन राहुल गांधी की भारत छोड़ो यात्रा और उसके बाद लोकसभा में कांग्रेस के एक मजबूत विपक्ष के रूप में उभरने के बाद भाजपा और संघ के नेताओं को ये एहसास हो गया कि हिंदुस्तान में एकतरफा शासन करना अभी बहुत दूर की बात है। दरअसल, राहुल गांधी न सिर्फ लोगों के बीच उठने-बैठने लगे हैं, बल्कि वो राजनीतिक परिस्थितियों को भी भांपने लगे हैं और यही वजह है कि उनकी तरफ लोग अब एक उम्मीद की नजर से देखने लगे हैं। हालांकि इस बीच न सिर्फ इंडिया गठबंधन टूटा है, बल्कि कांग्रेस ऐसे नेताओं की छंटनी भी करती नजर आ रही है, जो कहीं न कहीं भितरघात करने का काम करते नजर आ रहे थे। माना जा रहा है कि इन्हीं कुछ वजहों के चलते कांग्रेस ने न सिर्फ हरियाणा और महाराष्ट्र में करारी हार का सामना किया, बल्कि जम्मू कश्मीर और झारखंड में भी कुछ खास नहीं कर सकी, जिससे उसके राजनीतिक अस्तित्व पर संकट गहराता नजर आने लगा है। हालांकि इस बार दिल्ली के विधानसभा चुनाव में पिछली दो बार से ज्यादा मेहनत कांग्रेस नेता कर रहे हैं और राहुल गांधी पिछले कई चुनावों की तरह ही दिल्ली में लगातार सक्रिय दिखने लगे हैं।

देश में इस दौर की राजनीति ने न सिर्फ एक नई राजनीतिक जमीन तैयार कर दी है, बल्कि इस राजनीति में सत्ता के समर्थन वाली पार्टियों के नेता और चंदा देने वाले व्यापारी भी मालामाल हो रहे हैं। पूंजीपतियों और सरकार के बीच एक ऐसा गठजोड़ कामय होता देखा जा रहा है, जहां एक कार्पोरेट प्रधानमंत्री के भी कंधे पर हाथ रखकर बात कर सकता है और सरकार आपदा में अवसर ढूंढने की बात कह रही है। सवाल ये उठता है कि आज के राजनीतिक दौर में क्या वाकई राजनीतिक शून्यता इस कदर गहराती जा रही है कि विपक्ष होते हुए भी विपक्ष नहीं बचा है? आखिर क्यों विपक्षी पार्टियों को इतना डर है कि वो आज के माहौल का खुलकर विरोध तक नहीं कर पा रहे हैं? मौजूदा परिस्थितियों में कौन कहां पर खड़ा है, ये भी किसी को पता नहीं चल पा रहा है यानि किसी भी पार्टी प्रमुख को ये तक पता नहीं चल पा रहा है कि उसकी पार्टी में कौन अपना है और कौन पराया है? हालांकि ये हालत सिर्फ विपक्ष की ही नहीं है, बल्कि सत्ता पक्ष यानि कि भाजपा की भी है। लेकिन इसके बावजूद सत्ता होने की वजह से भाजपा के भीतर का विरोध का खुलकर सामने नहीं आ पा रहा है। लेकिन ये तय है कि जिस प्रकार से सत्ता में मजबूती न मिलने के चलते इंडिया गठबंधन टूटा है, उसी प्रकार सत्ता न रहने पर एनडीए गठबंधन ही नहीं, बल्कि भाजपा भी टूट सकती है। उसी प्रकार से, जिस प्रकार से यूपीए की सरकार के खिस्कते ही कांग्रेस में बागियों ने न सिर्फ मौका मिलते ही अपना-अपना किनारा पकड़ लिया, बल्कि यूपीए की सरकार की कमियां भी उजागर कीं और तरह-तरह के आरोप भी लगाए। इंडिया गठबंधन के टूटते ही राहुल गांधी अदानी को भूल गए, जिसे वो राष्ट्रीय मुद्दा बनाकर प्रधानमंत्री मोदी को घेरने की कोशिश साल 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले कर रहे थे। आखिर उनका ये साहस कहां चला गया। मुझे लगता है कि इंडिया गठबंधन की ज्यादातर पार्टियों के इन मसलों से दूरी बनाने और संघ की तरफ उनके झुकाव ने राहुल गांधी को खामोश करा दिया है। क्योंकि इंडिया गठबंधन के कई नेता संघ के खिलाफ कुछ भी नहीं बोलना चाहते हैं। खास तौर पर शरद पवार तो संघ का गुणगान करने में बहुत पहले से लगे हैं। उनके अपने भतीजे ने जबसे भाजपा के साथ गठबंधन किया है, तबसे शरद पवार की विचारधारा में बदलाव साफ नजर आ रहा है। पिछले दिनों जिस प्रकार से शरद पवार ने संघ की तारीफ की और उसके कार्यकताओं में संघ के प्रति समर्पण और एकता का जिस प्रकरा से हवाला देते हुए इशारा किया कि यही समर्पण राकांपा के नेताओं और कार्यकताओं में होना चाहिए। उन्होने अपने कार्यकताओं और नेताओं से साफ कहा कि हमें संघ से सीख हासिल करनी चाहिए और छत्रपति शाहूजी महाराज, महात्मा फुले, बीआर अंबेडकर और पहले मुख्यमंत्री महाराष्ट्र के यशवंत राव चौहान उनकी विचारधारा को कहीं न कहीं साथ लेकर एक कैडर उनकी पार्टी का भी खड़ा करना होगा। इससे साफ हो गया है कि उनके भतीजे अजित पवार ने तो भाजपा से खुले तौर पर गठबंधन किया है, शरद पवार भी कहीं न कहीं भाजपा और संघ के साथ मन से बंधे हुए नजर आते हैं।

बहरहाल, अब देखना होगा कि किस प्रकार से भाजपा अपनी मंशा में कामयाब हो पाएगी और किस प्रकार से विपक्षी पार्टियां अपनी साख बचा पाएंगीं? ऐसा माना जा रहा है कि अगर इन गंभीर परिस्थियों और तमाम समस्याओं के बावजूद अगर नरेंद्र मोदी की सरकार इसी तरह केंद्र सत्ता में पांच साल टिकी रही, तो फिर विपक्षी पार्टियों को अपनी जमीन जनता के बीच जमीन पर उतरकर ही टटोलनी पड़ेगी, क्योंकि ये कहावत गलत नहीं है कि राजनीति में कोई किसी का सगा नहीं, सब मौका परस्त होते हैं। दिल्ली के चुनाव के कुछ महीने बाद बिहार के विधानसभा चुनाव होने है और उसके बाद अगले साल यानि साल 2026 में तकरीबन पांच राज्यों पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी के विधानसभा चुनाव होने हैं। उसके बाद लोकसभा सीटों के लिहाज से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के साल 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसलिए विपक्ष को राजनीति में आज की परिस्थितियों के हिसाब से न सिर्फ नए प्रयोग करने होंगे, बल्कि जमीन पर उतरकर अपनी जमीन तैयार करनी होगी। ●

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं। ये लेखक के अपने विचार हैं)

भूटान को मिला सबसे ज्यादा लेकिन बांग्लादेश-मालदीव को क्या मिला?

राजेश जैन

भारत हमेशा से अपने पड़ोसी देशों से अच्छे संबंधों का हामी रहा है। उनके सुख-दुःख में भागीदार रहता आया है। उनके लिए हमारे आम बजट में भी प्रावधान रखा जाता है। अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकारों का मानना है कि यह आर्थिक जुड़ाव लंबे समय के लिए किए जाने वाले निवेश जैसा है। किसी देश को जब हम मदद करते हैं तो वो वहां के लोगों तक पहुंचती है और उस देश में भारत की छवि बहुत हद तक बदलती है। दूसरे देशों को मदद देने से हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती भी नजर आती है कि हमारे पास इतनी पावर है कि हम मदद देते हैं। सरकार दूसरे देशों को सहायता बजट में बढ़ोतरी या कटौती कर यह संकेत देने की कोशिश भी करती नजर आती है कि दोनों देशों के रिश्ते किस और जा रहे हैं।

वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में विदेशी सहायता के लिए संशोधन आवंटन 5 हजार 806 करोड़ रुपये था। इस साल यह 5 हजार 483 करोड़ रुपये रहा है। इसके बावजूद भारत ने अपने पड़ोसी देशों का पूरा ध्यान रखा है। बजट 2025 के फंड आवंटन में मालदीव को फायदा हुआ है। दोनों देशों के बीच पिछले कुछ समय संबंधों में खटास के बाद इसे अहम माना जा रहा है। इसी प्रकार बांग्लादेश से रिश्तों में तल्खियों के बावजूद सहायता राशि में कटौती नहीं की गई है। आइए जानते हैं 2025-26 के बजट में भारत ने अपने पड़ोसी देशों में से किसके लिए कितनी राशि का प्रावधान किया है और इसकी क्या वजह रही है।

मालदीव को 2024 के अंतरिम बजट में 600 करोड़ रुपए आवंटित किए गए थे। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू का झुकाव चीन की ओर होने की वजह से भारत से मालदीव के रिश्ते खराब होने से जुलाई में पेश हुए पूर्ण बजट में मालदीव के लिए आवंटन घटाकर 400 करोड़ रुपए कर दिया गया। बाद में आवंटन को संशोधित कर 470 करोड़ रुपए कर दिया गया। इसे उस समय दोनों देशों के बीच बढ़ी तनातनी से जोड़ा गया था लेकिन उसके बाद के 12 महीनों में दोनों देशों ने पहल कर रिश्ते सुधारने की कोशिश की है। रिश्तों में नरमी के संकेत मिले। सबसे बड़ा संकेत तो

दूसरा मत
महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं
पढ़ें और पढ़ाएं दूसरा मत
एक शुभचिंतक, दिल्ली

खुद मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने भारत दौरे पर आकर दिया। बीते साल मुइज्जू 6 से 10 अक्तूबर तक भारत के आधिकारिक दौरे पर आए थे। इसका असर मालदीव को दी जाने वाली आर्थिक सहायता में दिख रहा है। वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में 28 प्रतिशत की वृद्धि कर इसको बढ़ाकर 600 करोड़ रुपये कर दिया है।

बांग्लादेश में बीते साल पाँच अगस्त को शेख हसीना की सरकार का पतन हुआ और वो भागकर भारत आईं। इसके बाद वहां मोहम्मद यूनुस की अगुवाई में बनी अंतरिम सरकार लगातार भारत के प्रति कड़ा रुख अपनाती दिखी है लेकिन भारत चूंकि बड़ा देश है इसलिए वो ये देखता है कि पांच या 10 साल बाद ये जरूरी नहीं कि बांग्लादेश में भारत के खिलाफ ऐसा ही रुख रहेगा। समाज बहुत हद तक निवेश से ही चलता है। ऐसे में पिछले साल बांग्लादेश के लिए संशोधित बजट में 120 करोड़ रुपए की राशि आवंटित हुई थी जो इस बार भी यह 120 करोड़ ही रखी गई है।

भूटान और भारत के बीच पिछले कुछ सालों में करीबी बढ़ी है। भारत

सबसे ज्यादा भूटान की आर्थिक मदद करता है। भारत ने 2025-26 के बजट में भूटान के लिए 2150 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है जबकि पिछले वित्त वर्ष के दौरान इसके लिए संशोधित बजट 2543 करोड़ रुपए का था। भारत भूटान को इन्फ्रास्ट्रक्चर, पनबिजली परियोजनाओं और आर्थिक सहयोग से जुड़ी परियोजनाओं के लिए मदद देता है।

म्यांमार इस समय गृहयुद्ध से गुजर रहा है। पूर्वोत्तर के राज्यों की सीमा म्यांमार से जुड़ी है और गृह युद्ध के असर को लेकर भारत आशंकित है। भारत ने म्यांमार के लिए सहायता राशि को 400 करोड़ से घटाकर 350 करोड़ रुपए कर दिया है। यह कटौती ऐसे समय में की गई है जब म्यांमार में सैनिक शासन और विद्रोहियों में संघर्ष चल रहा है हालांकि म्यांमार में सशस्त्र संघर्ष की वजह से पूर्वोत्तर में अशांति फैलने की आशंका को लेकर भारत सतर्क है। हाल में भारत ने भारत-म्यांमार सीमा पर आवाजाही को सीमित करने के लिए कड़े नियम बनाए हैं।

नेपाल पर हाल के दिनों में चीन का असर बढ़ा है लेकिन भारत नेपाल के साथ लगातार संबंध सुधारने की कोशिश में लगा है। भारत ने हाल में ऐसा कोई कदम नहीं उठाया है, जिससे चीन के साथ नेपाल की नजदीकी बढ़े। वित्त वर्ष 2024-25 में नेपाल के लिए संशोधित बजट 700 करोड़ रुपये का था। वित्त वर्ष 2025-26 में भी इसमें कोई कटौती नहीं की गई है और इसे 700 करोड़ ही रखा गया है।

श्रीलंका को दी जाने वाली सहायता राशि 300 करोड़ रुपये को बरकरार रखा गया है। इस बार इस राशि में कोई कटौती नहीं की गई है। हाल के दिनों में श्रीलंका ने भारत से अपने रिश्ते सुधारने की कोशिश की है। श्रीलंका के राष्ट्रपति हाल में भारत दौरे पर आए थे। इसके साथ ही अफ्रीकी देशों के लिए सहायता राशि बढ़ाकर 225 करोड़ रुपए कर दी गई है जो पहले 200 करोड़ रुपए थी।

अफगानिस्तान के लिए भारत ने पिछले साल (2024-25) के बजट में पहले 200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था लेकिन संशोधित बजट में ये राशि घटाकर 50 करोड़ रुपये कर दी गई थी। अब वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में इसे बढ़ाकर 100 करोड़ रुपये कर दिया गया है। हाल ही में भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने दुबई में तालिबान के कार्यकारी विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी से मुलाकात की थी। माना जा है कि ये भारत ने अफगानिस्तान से ऐसे समय में दोस्ती का हाथ बढ़ाया है, जब पाकिस्तान के साथ उसके रिश्ते अच्छे नहीं चल रहे हैं।

हालांकि लेटिन अमेरिकी देशों के लिए सहायता राशि 90 करोड़ रुपए से घटाकर 60 करोड़ रुपए कर दी गई है। ईरान के चाबहार बंदरगाह के लिए 100 करोड़ रुपए और मॉरिशस के लिए भी 500 करोड़ की राशि तय की गई है। ●

बजट पर बेगूसराय के बुद्धिजीवियों की मिलीजुली प्रतिक्रिया

एस आर आजमी

कांग्रेस की वरिष्ठ नेता एवं बेगूसराय की पूर्व विधायक श्रीमती अमिता भूषण ने केंद्रीय बजट पर अपनी राय जाहिर करते हुए कहा कि मंहगाई, बेरोजगारी और डूबती अर्थव्यवस्था के बीच वित्तमंत्री की औपचारिकता से भरी बजट ने निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों को फिर से निराश ही नहीं किया है बल्कि नाउम्मीद भी किया है। पिछले वर्ष ऐलान की गई राशि पूरी खर्च नहीं हुई। और ऊपर से इस साल कैपिटल एक्सपेंडिचर कम कर दी गईं। फिसकल डेफिसिट ऐसा लगता है, जैसे कागज पर ओवर रायटिंग करके सुधार दिया गया हो। इनकम टैक्स स्लैब में बदलाव एक सही दिशा में उठाया गया कदम तो कहा जा सकता है, जिसपर तालियां भले ही बजाई जा रही हो, पर मंहगाई और बेरोजगारी के अनुपात में यह पर्याप्त नहीं है। गृहणियों और युवाओं के लिए वित्तमंत्री जी के पास शब्द और कागज दोनों ही नहीं थे। किसान और लघु मध्यम उद्योग से जुड़े लोगों के हित की कोई चर्चा शायद इस सरकार के लिए कोई मायने नहीं रखता है। किसान चाहे कितनी ही गुहार और आंदोलन कर लें, सरकार ने एमएसपी पर कोई कदम ना उठाने की कसम खा ली है। अर्थव्यवस्था में कंजप्सशन और ग्रोथ बढ़ाने के लिए कोई प्रयास नजर नहीं आता। कुल मिलाकर यह बजट, बजट न होकर महज एक औपचारिकता है, जहां आम आदमी का सपना फिर से कॉपोर्रेट की चकाचौंध में कुचल दिया गया है।

शहर मुख्यालय स्थित ईश्वर अस्पताल के निदेशक डॉक्टर संजय कुमार ने मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के दूसरे बजट 2025 पर अपनी राय जाहिर करते हुए कहा कि केंद्रीय बजट में बहुत कुछ बातें आई हैं। आम जनों की स्वास्थ्य सेवा के तहत कैंसर की दवाइयां सहित अन्य जीवन रक्षक उपयोगी दवाइयों को कर मुक्त किया जाना, मेडिकल कॉलेज में सीट की वृद्धि एक सराहनीय कदम है। साथ ही 12 लाख की वार्षिक आमदनी पर टैक्स फ्री किया जाना भी देश के मध्यम वर्गीय लोगों को फायदा पहुंचाएगा। देश के अनेक क्षेत्रों के लिए यह बजट प्रभावी है।

डॉ. संजय कुमार ने आगे कहा कि बजट 2025 में बेरोजगारी दूर करने के लिए व्यापक तौर पर धरातली और ठोस योजना का अभाव दिखता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि आधारित उद्योग और खाद्य प्रसंस्करण के लिए ठोस योजना का अभाव दिखता है। कुल मिलाकर बजट लोक कल्याणकारी है। खासकर गरीब तबके और मध्यम वर्गीय लोगों को इसका फायदा मिलेगा।

बेगूसराय जिला बीजेपी के पूर्व जिलाध्यक्ष राजकिशोर सिंह ने इस बजट की सराहना करते हुए कहा कि यह बजट आम लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। अब 12 लाख तक के आमदनी पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। किसानो के हितों का ख्याल रखा गया है। इस बजट में बिहार के लिए खास ऐलान किया गया। 100 जिलों में धन्य-धान्य योजना की शुरूआत की गई। 75000 मेडिकल की सीट बढ़ाने की घोषणा की गई। बिहार में फूड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट खोले जाने की घोषणा हुई है। सस्ते ब्याज पर किसानों को 5 लाख तक के लोन का ऐलान किया गया। बिहार में मखाना व्यापार के लिए मखाना बोर्ड बनाया जाएगा। जीवन रक्षक दवाओं पर कस्टम ड्यूटी को खत्म किया जाएगा।

बेगूसराय सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के वाइस चेयरमैन कमल किशोर सिंह का मानना है कि केंद्रीय सरकार ने जो लोकसभा में बजट उपस्थित किया है, उसमें 12 लाख की आयकर में छूट देना निश्चित रूप से सराहनीय कदम है। लेकिन पंडित नेहरू के कार्यकाल से इसकी तुलना करना न्याय संगत नहीं है। उस समय 12 लाख की आमदनी पर तकरीबन 2 लाख

श्रीमती अमिता भूषण

डॉक्टर संजय कुमार

राजकिशोर सिंह

कमल किशोर सिंह

का टैक्स लगता था, लेकिन आज के समय में यह 12 लाख के बराबर नहीं है। सरकार को चाहिए कि 12 लाख की वार्षिक आय को कर मुक्त कर बढाकर 50 लाख करना चाहिए। किसानों को इस बजट में कुछ नहीं मिला है। सिर्फ झुनझुना बजाया गया है। किसान भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह बिहार का चुनावी बजट है। और बिहार में भी किसी बड़े काम की शुरूआत इस बजट में नहीं है।

नावकोठी प्रखंड के पहसारा गांव निवासी व सामाजिक कार्यकर्ता प्रमोद प्रसाद सिंह ने केंद्रीय बजट पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा कि एनडीए सरकार का यह बजट आश्चर्यचकित करने वाला है। यह कैसी विडंबना है कि हर एक घर में जीवन उपयोगी दूध दही पर 8% का टैक्स और डायमंड पर डेढ़ प्रतिशत व सोने पर 3% का टैक्स निश्चित हुआ है। सरकार को इस ओर गंभीरता पूर्वक सोचना चाहिए कि बजट में 12 लाख की आमदनी पर कर माफी की घोषणा की गई है, वहीं अगर किसी की आमदनी 12 लाख एक हजार होती है, उसका कितना बड़ा भुगतान करना होगा। यह सलैब देखकर आंका जा सकता है। सरकारी कर्मियों के वेतन बढ़ोतरी के लिए आठवां वेतन आयोग का गठन किया गया है, जबकि देश के किसानों की दशा सुधारने के लिए कृषि और कृषक को उन्नतशील बनाने के लिए कितने आयोग का गठन किया गया, यह विचारणीय सवाल है? केंद्रीय बजट में बिहार के चुनाव को ध्यान में रखकर कुछ चीज दी गई है। लेकिन बिहार राज्य को न तो विशेष राज्य का दर्जा मिला है और ना ही कोई बड़ा आर्थिक पैकेज अब तक मिला है। इस बजट में अनेक विसंगतियां हैं, जिन पर सुधार की अथवा पुनर्विचार की सख्त जरूरत है।

मटिहानी प्रखंड के सिहमा गांव निवासी शंकर प्रसाद सिंह का मानना है कि केंद्र सरकार का पेश किया गया यह बजट जनहितकारी है। यह संतुलित बजट देश के आम अवाम को लाभ पहुंचाते हुए विकसित भारत की संरचना में सार्थक कदम बढ़ाएगी। इस बजट में युवा, किसान, मजदूर और व्यवसायी वर्ग को काफी सहूलियत दी गई है। खासकर बिहार में हवाई अड्डे का विकास, मखाना बोर्ड का गठन और पटना के आईआईटी संस्थान की संरचना को बढ़ाने का काम किया गया है। केंद्रीय बजट में कृषि, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़क जैसे मानवीय आवश्यकताओं की हितों का विशेष ख्याल रखा गया है।

मंझौल अनुमंडल के अंतर्गत बरियारपुर निवासी व सामाजिक कार्यकर्ता विपिन कुमार सिंह ने केंद्रीय बजट पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए कहा कि 2025 का यह बजट मोदी सरकार के तीसरे टर्म का पहला पूर्ण बजट है, जो आम जनों के लिए हितकारी और दूरगामी परिणाम देने वाला है। इस बजट में गरीब तबके और मध्यम वर्गीय लोगों के लिए काफी घोषणाएं की गई है। खासकर रक्षा, स्वास्थ्य सेवा, शैक्षणिक विस्तार, हवाई उड़ान और सड़क परिवहन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। कृषि और कृषक के कल्याण हेतु भी काफी राशि दी गई है। बिहार प्रांत के चतुर्दिक विकास हेतु विशेष पैकेज दिया गया है। आयकर की भारी छूट का लाभ देश के आम जनजीवन को सहूलियत प्रदान करेगा। इस संतुलित केंद्रीय बजट की सराहनीय करना चाहिए।

मटिहानी प्रखंड के नया गांव निवासी सामाजिक कार्यकर्ता राम रतन सिंह कुंवर ने केंद्रीय बजट पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि केंद्रीय बजट में आयकर में 12 लाख की छूट केंद्रीय सरकार का यह एक सराहनीय कदम है। इसमें गरीब तबके और मध्यवर्गीय लोगों को राहत मिलेगी। घोषणा अगर हकीकत में लागू हो जाए तो यह बहुत ही अच्छा बजट साबित होगा। किसानों के बारे में सरकार की सकारात्मक सोच है। मिला-जुला के हम कह सकते हैं यह बजट आम लोगों का बजट है।

बीरपुर प्रखंड के डीह ग्राम निवासी कृषक व सामाजिक कार्यकर्ता अशोक सिंह ने अपनी मनसा जाहिर करते हुए कहा कि केंद्रीय बजट यूं तो

राम रतन कुंवर

उमेश प्रसाद सिंह

विपिन कुमार सिंह

कमल किशोर सिंह

मध्यमवर्गीय लोगों के लिए अनेकानेक सौगात लेकर आया है। लेकिन किसानों को और भी सहूलियत दी जानी चाहिए थी। बैंक का कर्ज, सहकारिता ऋण, जल पलावित भूमि का विकास, सिंचित भूमि का उन्नयन परम आवश्यक है। इसके लिए सरकार को व्यापक प्रबंध की व्यवस्था के साथ की जानी चाहिए। 12 लाख की आमदनी पर आयकर की छूट एक प्रभावी कदम है। लेकिन निम्न तबके के लोगों को हाथ में रोजगार भी उपलब्ध कराने का ठोस उपाय की जानी चाहिए थी। इलेक्ट्रॉनिक सामानों में कर की कमी करना स्वागत योग्य है। वहीं जन उपयोगी दवा का मूल्य कम किया जाना एक सराहनीय बात है। मिला-जुला कर यह बजट संतुलित माना जाएगा।

बेगूसराय कांग्रेस पार्टी के जिला उपाध्यक्ष उमेश प्रसाद सिंह ने केंद्रीय बजट को डपोरशंखी बताया है। उन्होंने कहा कि 12 लाख की आय पर कर मुक्ति की घोषणा तो हुई लेकिन पूर्व में जो 15 लाख रुपए की हर एक खाता पर देने की घोषणा की गई थी, उसका क्या हुआ? कांग्रेस नेता ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होती जा रही है। रोजगार के अभाव में मजदूर महानगरों और विदेशों की ओर लगातार पलायन कर रहे हैं, जहां उनका शोषण व दोहन भारी पैमाने पर हो रहा है। इन मजदूरों के हाथ में हथकड़ी और पैर में बेड़िया बांधकर हवाई जहाज से वापस लौटाया जा रहा है। अगर देश के भीतर उद्योग धंधों को

डॉ. शगुफ्ता ताजवर

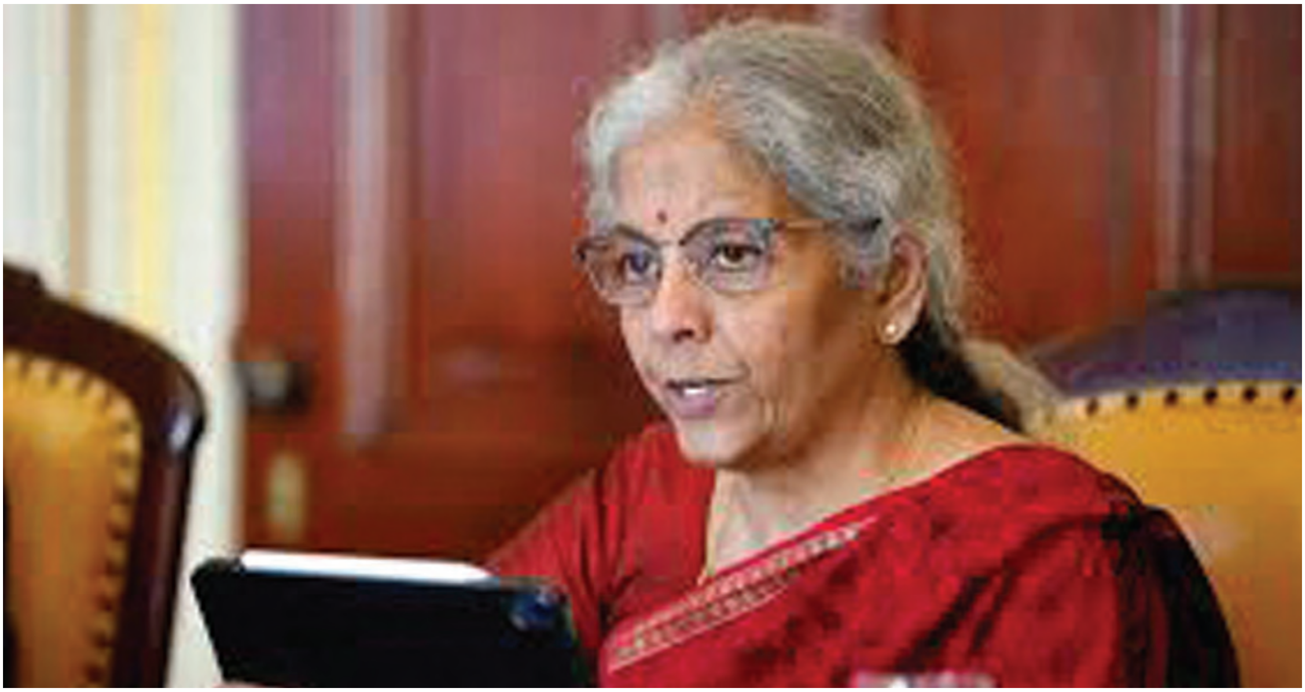

खड़ा कर इन मजदूरों को लगाया जाता, तो बेहतरीन बात होती है। उन्होंने कहा कि कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और रक्षा बजट में पूर्व से चली आ रही प्रावधानों को तोड़कर दी गई। राशि में कटौती कर दी गई है। यह घोर निंदा का विषय है। बजट में देश के युवा और उनके बेरोजगारी पर कोई ठोस तवज्जो नहीं दिया गया है। बजट में अपना डफली, अपना राग अलापते हुए पेश किया गया है, जो जन विरोधी है।

केंद्रीय बजट 2025 पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए नगर निगम वार्ड की पार्षद एवं सीपीआई कार्यकर्ता डॉ. शगुफ्ता ताजवर का मानना है कि केंद्रीय बजट सुनने में बहुत अच्छा लग रहा है। बजट में 12 लाख रुपए तक की टैक्स में छूट की बात कही गई है। लेकिन समस्या तो यह है कि 12 लाख रुपए आएगा कहां से? आय का स्रोत तो बताया नहीं गया है। बजट में देश के किसानों, महिलाओं और मध्यम वर्गों के कल्याण के लिए कोई बात नहीं कही गई है। इस बजट से गरीब और अधिक गरीब होंगे। यह अमीरों के लिए सरकारी खजाने को खोल देने वाला बजट है। किसानों के लिए एमएसपी पर कोई बात नहीं की गई है। देश में गरीबी और महंगाई चरम सीमा पर है। महंगाई से लोगों का जीना मुश्किल हो रहा है। पूरे बजटभाषण में मैडम केवल 10 बार महंगाई का जिक्र करती हैं। बजट में कहीं भी अल्पसंख्यकों के कल्याण लिए कुछ भी नहीं कहा गया। बिहार की बात करें तो एक बार फिर बिहार को ठगा गया। विशेष राज्य का दर्जा नहीं दिया गया। बेगूसराय में गढ़हारा यार्ड की जमीन पड़ी हुई है। हवाई अड्डे एवं एम्स की बात नहीं की गई है। हम कह सकते हैं यह बजट निराशा जनक है।

डंडारी प्रखंड अंतर्गत कटरमाला दक्षिणी पंचायत केनिवासी भाजपा नेता राजेश कुमार उर्फ लोहा सिंह ने केंद्रीय बजट को आम लोगों के लिए वरदान बताया है। उन्होंने कहा है कि शिक्षित लोगों के लिए अनेक घोषणाएं की गई हैं। मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कॉलेज में सीट बढ़ोतरी और नए विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना में आर्थिक मदद की घोषणा सराहनीय है। बजट में खेती, खाद, सिंचाई, कीटनाशक दवा तथा बाजार मूल्य पर उपज का मूल्य निर्धारण करना किसानों के लिए काफी लाभकारी रहेगा। कैंसर मरीजों को निशुल्क दवा उपलब्ध करवाना और 70 वर्ष से ज्यादा लोगों को आयुष्मान भारत का लाभ देना एक प्रशंसनीय बात है। केंद्र सरकार के बजट में समाज के सभी तत्वों की कल्याण भावना जुड़ी हुई है।

एआईएसएफ के बिहार प्रदेश सचिव व छात्र नेता अमीन हमजा ने केंद्रीय बजट को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि 2025 का आम बजट पूरी तरह से छात्र विरोधी है। यह बजट शिक्षा से गरीब-गुर्बों और मेहनतकश तबके को दूर करने की साजिश है। सरकारी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की स्थिति को सुधारने के बजाय सरकार शिक्षा के निजीकरण को और तेजी से बढ़ावा दे रही है। छात्रवृत्तियों मेघावृतियों में कोई ठोस बढ़ोतरी नहीं की गई, जिससे आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए उच्च शिक्षा एक सपना बनती जा रही है। इस बजट में बेरोजगारी की गंभीर समस्या को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया है। सरकार युवाओं को अंधकार में धकेलने की नीति पर चल रही है, जहां शिक्षा केवल अमीरों के लिए सुलभ होगी। और गरीब छात्रों को हाशिए पर डाल दिया जाएगा। यह बजट शिक्षा के अधिकार पर सीधा हमला है, जिसे एआईएसएफ पूरी तरह खारिज करता है और कड़ी निंदा करता है। एआईएसएफ का मानना है कि यह बजट शिक्षा के बाजारीकरण और छात्रों के हक को खत्म करने की गहरी साजिश है। एआईएसएफ इस अन्याय को स्वीकार नहीं करेगा और सड़कों पर उतरकर संघर्ष करेगा। ●

किताबों के मेले

विवेक रंजन श्रीवास्तव

कलमकार जी अपने गांव से दिल्ली आये हुए थे किताबो के मेले में। दिल्ली का प्रगति मैदान मेलो के लिए नियत स्थल है, तारीखें तय होती हैं। एक मेला खत्म होता है , दूसरे की तैयारी शुरू हो जाती है। सरकार में इतने सारे मंत्रालय हैं। देश इतनी तरक्की कर रहा है। कुछ न कुछ प्रदर्शन के लिये मेले की जरूरत होती ही है । साल भर मेले चलते रहते हैं। मेले क्या चलते रहते हैं, लोग आते जाते रहते हैं तो चाय वाले की, पकौड़े वाले की, फुग्गे वाले की आजीविका चलती रहती है। इन दिनो किताबों का मेला चल रहा है। चूंकि मेला किताबों का है, शायद इसलिए किताबें ज्यादा हैं, आदमी कम। जो आदमी हैं भी, वे लेखक या प्रकाशक, प्रबंधक ज्यादा हैं, पाठक कम। लगता है कि पाठको को जुटाने के लिए पाठको का मेला लगाना पड़ेगा। मेले में तरह तरह की किताबें हैं।

कलमकार जी को सबसे पहले मिलीं रायल्टी देने वाली किताबें। ये ऐसी किताबें हैं जिनके लिखे जाने से पहले ही उनकी खरीद तय होती है। इनके लेखक बड़े नाम वाले होते हैं। कुछ के नाम उनके पद के चलते बड़े बन जाते हैं, कुछ विवादों और सुर्खियो में रहने के चलते अपना नाम बड़ा कर डालते हैं। ये लोग आत्मकथा टाइप की पुस्तकें लिखते हैं, जिनमें वे अपने बड़े पद के बड़े राज खोलते हैं, खोलते क्या हैं, किताबों के पन्नो में हमेशा के रिफरेंस के लिये बंद कर डालते हैं। इन किताबों का मूल्य कुछ भी हो, किताब बिकती है। लेखक के नाम के कांधे पर बिकती है। सरकारी खरीद में बिकती है। लेखक को रायल्टी देती है ऐसी किताब। प्रकाशक भी ऐस तरह की किताबें सजिल्द छापते हैं, भव्य विमोचन करवाते हैं, नामी पत्रिकाएं इन किताबों की समीक्षा छापती हैं।

दूसरे तरह की किताबें होती हैं बच्चो की किताबें, अंग्रेजी की राइम्स से लेकर विज्ञान के प्रयोगो और इतिहास व एटलस की, कहानियों की, सुस्थापित साहित्य की ये किताबें प्रकाशक के लिये बड़ी लाभदायक होती हैं। इन रंगीन , सचित्र किताबों को खरीदते समय पिता अपने बच्चो में

संस्कार, ज्ञान, प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण होने के सपने देखता है। बच्चे बड़ी उत्सुकता से ये किताबें खरीदते हैं, पर कम ही बच्चे इन्हें पूरा पढ़ पाते हैं, और उनमें से भी बहुत कम इनमें लिखा समझ पाते हैं , पर जो जीवन में इन किताबो को उतार लेता है , ये किताबें उन्हें सचमुच महान बना देती हैं। कुछ बच्चे इन किताबों के स्टाल्स के पास लगी रंगीन नोटबुक, डायरी, स्टेशनरी, गिफ्ट आइटम्स की चकाचौंध में ही खो जाते हैं, वे इन किताबों तक पहुंच ही नही पाते,ऐसे बच्चे बड़े होकर व्यापारी तो बन ही जाते हैं।

कलमकार जी ज्यों ही धार्मिक किताबो के स्टाल के पास से निकले तो ये किताबें पूछ बैठी हैं, उनके आस पास सीनियर सिटिजन्स ही क्यों नजर आते हैं ? वह तो भला हो रेसिपी बुक्स ट्रेवलाग , काफी टेबल बुक्स , गार्डनिंग ,गृह सज्जा और सौंदर्य शास्त्र के साथ घरेलू नुस्खों की किताबों के स्टाल का जहां कुछ नव यौवनायें भी दिख गईं कलमकार जी को ।

एक बड़ा सेक्शन देश भर से पधारे ,अपने खर्चे पर किताबें छपवाने वाले झोला धारी कलमकार जी जैसे कवियों और लेखको के प्रकाशको का था। ये प्रकाशक लेखक को अगले एडीशन से रायल्टी देने वाले होते हैं ।करेंट एडीशन के लिये इन प्रकाशको को सारा व्यय रचनाकार को ही देना होता है , जिसके एवज में वे लेखक की डायरी को किताब में तब्दील करके स्टाल पर लगा देते हैं । किताब का बढ़िया सा विमोचन समारोह संपन्न होता है , विमोचन के बाद भी जैसे ही घूमता हुआ कोई बड़ा लेखक स्टाल पर आता है, किताब का पुनः लोकार्पण करवा कर हर हाथ में मोबाईल होने का सच्चा लाभ लेते हुये लेखक के फेसबुक पेज के लिये फोटो ले ली जाती है ।ऐसा रचनाकार आत्ममुग्ध किताबों के मेले का आनन्द लेता हुआ , कोने के टी स्टाल पर इष्ट मित्रो सहित चाय पकौड़ो के मजे लेता मिलता है ।

मेले के बाहर फुटपाथ पर भी विदेशी अंग्रेजी उपन्यासों का मेला लगा होता है, पुस्तक मेले की तेज रोशनी से बाहर बैटरी की लाइट में बेस्ट सेलर बुक्स सस्ती कीमत पर यहां मिल जाती हैं । दुनियां में हर वस्तु का मूल्य मांग और सप्लाई के इकानामिक्स पर निर्भर होता है किंतु किताबें ही वह बौद्धिक संपदा है , जिनका मूल्य इस सिद्धांत का अपवाद है , किसी भी किताब का मूल्य कुछ भी हो सकता है । इसलिये अपने लेखक होने पर गर्व करते और कुछ नया लिख डालने का संकल्प लिए कलमकार जी लौट पड़े किताबों के मेले से। ●

विजय गर्ग
स्तंभकार

यूनेस्को जिसे 11 फरवरी को मनाता है

2025 विज्ञान विषय में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवसः यह वर्ष विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के दसवें अंतर्राष्ट्रीय दिवस को 'अनपैकिंग स्टेम करियरः हिज वॉयस इन साइंस' के विषय के साथ चिह्नित करता है।

'अनपैकिंग स्टेम करियर': 11 फरवरी को विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है? संयुक्त राष्ट्र इसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) क्षेत्रों में महिलाओं की पूर्ण और समान पहुंच और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए मनाता है। विज्ञान 2025 में महिलाओं और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवसः जैसा कि यूनेस्को ने उल्लेख किया है, 21 वीं शताब्दी में विज्ञान गतिशील, सहयोगी और विविध है, जो प्रयोगशालाओं से परे वैश्विक चुनौतियों को संबोधित करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में सेवारत है। इस वर्ष विज्ञान में महिलाओं और लड़कियों के 10 वें अंतर्राष्ट्रीय दिवस का प्रतीक है, जिसमें 'अनपैकिंग स्टेम करियरः उसकी आवाज इन साइंस' का विषय है।

विज्ञान में महिला और लड़कियों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस हर फरवरी 11 को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र इस दिन को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) क्षेत्रों में महिलाओं की पूर्ण और समान पहुंच और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए देखता है।

14 मार्च, 2011 को, अपने 55 वें सत्र के दौरान, महिला स्थिति आयोग ने एक रिपोर्ट को मंजूरी दी जिसमें शिक्षा, प्रशिक्षण और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं और लड़कियों की

भागीदारी के बारे में सहमत निष्कर्ष शामिल थे।

विज्ञान की वेबसाइट में संयुक्त राष्ट्र की महिला और लड़कियों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अनुसार, रिपोर्ट ने पूर्ण रोजगार और निष्पक्ष कार्य स्थितियों को हासिल करने में महिलाओं के लिए समान अवसरों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

इसके अतिरिक्त, 20 दिसंबर, 2013 को, महासभा ने विकास के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार पर एक प्रस्ताव पारित किया, यह स्वीकार करते हुए कि सभी उम्र की महिलाओं और लड़कियों की समान पहुंच है और इन क्षेत्रों में भागीदारी लिंग समानता को आगे बढ़ाने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 'लैंगिक समानता और महिलाओं और लड़कियों का सशक्तिकरण न केवल दुनिया के आर्थिक विकास के लिए, बल्कि 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट के सभी लक्ष्यों और लक्ष्यों में प्रगति करने के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान देगा'

(ये लेखक के अपने विचार हैं। लेखक सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार हैं)

शिक्षा में सकारात्मक बदलाव

विजय गर्ग

हाल ही में भारत में स्कूली शिक्षा की स्थिति, उपलब्धियों और चुनौतियों को समझने के लिए दो महत्त्वपूर्ण रपटें जारी हुईं। पहली, राष्ट्रीय शिक्षा रपट (2023-24) और दूसरी 'असर' 2024 ये दोनों देश में शिक्षा की वर्तमान स्थिति सुधारों और चुनौतियों पर प्रकाश डालती हैं। इसमें एक तरफ पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर बच्चों का रुझान बढ़ता हुआ दिखता है, वहीं माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बच्चों के नामांकन में कमी होती दिख रही है। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों बच्चों के नामांकन में साढ़े सैंतीस लाख की कमी दर्ज की गई। उच्च शिक्षा तक बच्चों का पहुंचना तो दूर, आज भी लाखों बच्चे स्कूली शिक्षा से वंचित हैं और कई कारणों से हर साल अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़ देते हैं। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली की एक रपट के अनुसार, वर्ष 2022-23 स्कूलों में कुल 25.17 करोड़ विद्यार्थी नामांकित जो 2023-24 में घट कर 24.80 करोड़ रह गए। यानी पिछले चार वर्षों में नामांकित बच्चों की संख्या 1.64 करोड़ कम हो गई। साथ ही, इस अवधि में स्कूलों की संख्या 37 हजार की कमी के साथ 1,509, 1 9,136 डु से घट कर 1,471,891 हो गई। शिक्षा से वंचित बच्चों में ज्यादातर समाज के कमजोर और वंचित वर्गों आते हैं।

'असर' (एएसईआर) 2024 की रपट देश में पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की एक बेहतर तस्वीर प्रस्तुत करती है। रपट बताती है कि कैसे देश के सुदूर इलाकों में भी शिक्षा की रोशनी पहुंच रही है और पहले की तुलना में अधिक बच्चे स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों से जुड़ रहे हैं विशेष रूप से तीन से पांच वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है, जो किसी न किसी शिक्षण संस्थान नामांकित हुए हैं। यह बड़ी उपलब्धि है, खासकर उन इलाकों के लिए, जहां शिक्षा को अब तक प्राथमिकता नहीं मिल पाई थी।

इस वर्ष 'असर' का सर्वेक्षण देश के 605 ग्रामीण जिलों के 17,997 गांवों तक पहुंचा और इसमें 6,49,491 बच्चों को शामिल किया गया। रपट दर्शाती है कि पहली से तीसरी कक्षा तक के बच्चों की पढ़ने और गणित के सवाल हल करने की क्षमता में 2022 2022 की तुलना में उल्लेखनीय सुधार हुआ हैं।

छह वर्ष के बच्चों को लेकर दो अहम निष्कर्ष सामने आए पहला,

इस बात पर जोर दिया गया कि सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। इस शिक्षा यात्रा में आंगनबाड़ी केंद्रों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण है। असर 2024 की रपट बताती है कि बड़ी संख्या में बच्चे आंगनबाड़ी रहे हैं, लेकिन गुणवत्ता सुधार की अब भी आवश्यकता है। आंगनबाड़ी कार्यकताओं को केवल पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित न रखते हुए उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे बच्चों के समग्र विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकें। मगर इसके उलट देश में बच्चों का स्कूल छोड़ने की स्थिति भी चिंताजनक है। हाल में जारी शिक्षा मंत्रालय की रपट बताती है कि नौवीं से बा-

2018 से 2024 के 1 के बीच प्री-` प्री-स्कूल नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। दूसरा, 2024 तक तीन वर्ष की आयु के 77.4 1 फीसद ग्रामीण बच्चे किसी न किसी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम (आंगनबाड़ी, नर्सरी) में नामांकित हैं। खास बात यह है कि यह प्रगति केवल शहरी क्षेत्रों तक नहीं है, बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी स्पष्ट रूप से देखी गई है। गौरतलब है कि इस बार 'असर 2024' ने डिजिटल साक्षरता जैसे महत्त्वपूर्ण पहलू पर भी ध्यान केंद्रित किया है। रपट के मुताबिक, 15-16 वर्ष के 90 फीसद ग्रामीण किशोरों के पास स्मार्टफोन है, लेकिन सवाल यह है कि क्या वे इसका सही उपयोग कर पा रहे हैं? जब बच्चों को आनलाइन जानकारी खोजने या अलार्म सेट करने जैसे छोटे-छोटे कार्य दिए गए, तो पाया गया कि डिजिटल तकनीक के उपयोग में लड़के, लड़कियों की तुलना में थोड़े आगे हैं। हालांकि, कुछ राज्यों में लड़कियां भी इस अंतर को तेजी से पाट रही हैं और डिजिटल कौशल में बराबरी पर आ रही हैं।

शिक्षा की इस नई लहर के पीछे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भी उल्लेखनीय योगदान है। नीति इस बात पर जोर देती है कि स्कूल में दाखिले के पहले तीन वर्ष जो आमतौर पर आंगनबाड़ी या नर्सरी स्तर पर होते हैं, बच्चे के सीखने की बुनियाद बनाते हैं। इसी दृष्टिकोण को साकार करने के लिए सरकार ने निपुण भारत मिशन की शुरूआत की, जिसका लक्ष्य है कि 2026-27 तक तीसरी कक्षा तक के सभी बच्चे बुनियादी तौर पर पढ़ने और गणना करने की दक्षता हासिल कर लें।

'असर' के सर्वेक्षण के मुताबिक 83 फीसद स्कूलों ने बताया कि उन्हें सरकार से एफएलएन (फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरसी) गतिविधियों लागू करने के लिए निर्देश मिले थे। लगभग 78 फौसद स्कूलों ने कहा कि स्कूल में कम से कम एक शिक्षक को एफएलएन पर प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था, जबकि 75 फीसद को संबंधित अध्ययन सामग्री भी प्राप्त हुई थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने खासकर तीन से छह वर्ष के आयुवर्ग को शिक्षा के व्यापक ढांचे में शामिल करके संरचनात्मक परिवर्तन किए। शिक्षा नीति में

रहवीं कक्षा के बच्चे सबसे ज्यादा स्कूल छोड़ रहे हैं। देशभर में बच्चों के स्कूली शिक्षा के नामांकन में लाख से अधिक की गिरावट आई है। इसका सबसे ज्यादा असर माध्यमिक स्तर पर पड़ा है। विशेषकर अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग और लड़कियों के वर्ग में यह गिरावट अधिक देखने को मिली है। शिक्षा मंत्रालय की रपट के मुताबिक, पूर्व प्राथमिक स्तर पर 3.7 फीसद, मिडिल स्कूल तक 5.2 फीसद और सैकेंडरी स्तर पर यह फीसद 10.9 हो जाता है। समग्र शिक्षा कार्यक्रम 2023-24 रपट के अनुसार भारत में बच्चों के स्कूल छोड़ने की औसत दर 12.6 फीसद है, जिसमें बिहार, आंध्र प्रदेश, असम, गुजरात, कर्नाटक, मेघालय और पंजाब जैसे राज्यों में यह दर अधिक है।

हालांकि देश के कई राज्यों ने शिक्षा क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या में कमी लाने के लिए अब भी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। बच्चों के स्कूल छोड़ देने की समस्या से निपटने के लिए भारत को अन्य देशों की प्रभावी नीतियों से सीखने की आवश्यकता है। फिनलैंड ने निशुल्क शिक्षा, व्यक्तिगत शिक्षण सहायता और समावेशी नीति अपना कर इस समस्या को काफी हद तक हल किया है। इसी तरह नार्वे, जर्मनी और जापान ने भी लचीली शिक्षा व्यवस्था बनाई है, जिससे वहां स्कूल छोड़ने की दर न्यूनतम है।

इन रपटों के निष्कर्ष यह दशार्ते हैं कि देश में शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक बदलाव हो रहे हैं, लेकिन अभी भी कई क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। यह सफर अभी पूरा नहीं हुआ है। जब हर बच्चा बिना किसी बाधा के स्कूल जाने लगेगा और सीखना केवल एक औपचारिक प्रक्रिया न होकर आनंददायक अनुभव बनेगी, तब हम वास्तव में एक शिक्षित भारत की मजबूत नींव रखने का दावा कर सकेंगे। ●

(ये लेखक के अपने विचार हैं। लेखक सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार हैं)

ओ हरामजादे

भीष्म साहनी

घुमक्कड़ी के दिनों में मुझे खुद मालूम न होता कि कब किस घाट जा लगूंगा। कभी भूमध्य सागर के तट पर भूली बिसरी किसी सभ्यता के खण्डहर देख रहा होता, तो कभी युरोप के किसी नगर की जनाकीर्ण सड़कों पर घूम रह होता। दुनिया बड़ी विचित्र पर साथ ही अबोध और अगम्य लगती, जान पड़ता जैसे मेरी ही तरह वह भी बिना किसी धुरे के निरुद्देश्य घूम रही है।

ऐसे ही एक बार मैं यूरोप के एक दूरवर्ती इलाक़े में जा पहुंचा था। एक दिन दोपहर के वक्त होटल के कमरे में से निकल कर मैं खाड़ी के किनारे बैंच पर बैठा आती जाती नावों को देख रहा था, जब मेरे पास से गुज़रते हुए अधेड़ उम्र की एक महिला ठिठक कर खड़ी हो गई। मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया, मैंने समझा उसे किसी दूसरे चेहरे का मुग़ालता हुआ होगा। पर वह और निकट आ गयी।

भारत से आये हो?' उसने धीरे से बड़ी शिष्ट मुसकान के साथ पूछा।

मैंने भी मुस्कुरा कर सिर हिला दिया।

मैं देखते ही समझ गई थी कि तुम हिंदुस्तानी होगे।' और वह अपना बड़ा सा थैला बैंच पर रख कर मेरे पास बैठ गई।

नाटे क़द की बोझिल से शरीर की महिला बाज़ार से सौदा ख़रीद के लौट रही थी। खाड़ी के नीले जल जैसी ही उसकी आंखें थी। इतनी साफ नीली आंखे किवल छोटे बच्चों की ही होती हैं। इस पर साफ गौरी त्वचा। पर बाल खिचड़ी हो रहे थे और चेहरे पर हल्की हल्की रेखायें उतर आई थीं, जिनके जाल से, खाड़ी हो या रेगीस्तान, कभी कोई बच नहीं सकता। अपना ख़रीदारी का थैला बैंच पर रख कर वह मेरे पास तनिक सुस्ताने के लिये बैठ गई। वह अंग्रेज़ नहीं थी पर टूटी फूटी अंग्रेज़ी में अपना मतलब अच्छी तरह से समझा लेती थी।

मेरा पति भी भारत का रहने वला है, इस वक्त घर पर है, तुम से मिलकर बहुत खुश होगा।'

मैं थोड़ा हैरान हुआ, इंगलैंड और फ्रांस आदि देशों में तो हिन्दुस्तानी लोग बहुत मिल जाते हैं। वहीं पर सैंकड़ों बस भी गये हैं, लेकिन युरोप के इस दूर दराज़ के इलाक़े मैं कोई हिन्दुस्तनी क्यों आकर रहने लगा होगा। कुछ कोतुहल वश, कुछ वक्त काटने की इच्छा से मैं तैयार हो गया।

चलिये, ज़रूर मिलना चाहूंगा।' और हम दोनों उठ खड़े हुए।

सड़क पर चलते हुये मेरी नज़र बार बार उस महिला के गोल मटोल शरीर पर जाती रही। उस हिंदुस्तानी ने इस औरत में क्या देखा होगा जो घर बार छोड़ कर यहां इसके साथ बस गया है। संभव है, जवानी में चुलबुली और नटखट रही होगी। इसकी नीली आंखों ने कहर ढाये होंगे। हिन्दुस्तानी मरता ही नीली आंखों और गोरी चमड़ी पर ही है। पर अब तो समय उस पर क़हर ढाने लग था। पचास पचपन की रही होगी। थैला उठाये हुए सांस बार बार फूल रहा था। कभी उसे एक हाथ में उठाती और कभी दूसरे हाथ में। मैने थैला उसके हाथ से ले लिया और हम बतियाते हुए उसके घर की ओर जाने लगे।

आप भी कभी भारत गई हैं?' मैंने पूछा।

एक बार गई थी, लाल ले गया था, पर इसे तो अब लगता है बीसियों बरस बीत चुके हैं।'

लाल साहब तो जाते रहते होंगे?'

महिला ने खिचड़ी बालों वाला अपना सिर झटक कर कहा 'नहीं, वह भी नहीं गया। इसलिये वह तुम से मिल कर बहुत खुश होगा, यहां हिंदुस्तानी बहुत कम आते हैं।'

तंग सीढ़ियां चढ़ कर हम एक फ़्लैट में पहुंचे, अंदर रोशनी थी और एक खुला सा कमरा जिसकी चारों दिवारों के साथ किताबों से ठसाठस भरी अलमारियां रखीं थीं। दिवार पर जहां कहीं कोई टुकड़ा खाली मिल था, वहां तरह तरह के नक़्शे और मानचित्र टांग दिये गये थे। उसी कमरे

में दूर, खिड़की के पास वाले कमरे में काले रंग का सूट पहने , सांवले रंग और उड़ते सफेद बालों वाला एक हिंदुस्तानी बैठा कोई पत्रिका बांच रह था।

लाल, देखो तो कौन आया है? इनसे मिलो। तुम्हारे एक देशवासी को ज़बर्दस्ती खींच लायी हूं।' महिला ने हँस कर कहा।

वह उठ खड़ा हुआ और जिज्ञासा और कोतुहल से मेरी और देखता हुआ आगे बढ़ आया।

आइए-आइए! बड़ी खुशी हुई। मुझे लाल कह्ते हैं, मैं यहां इंजीनियर हूं। मेरी पत्नी ने मुझ पर बड़ा एहसान किया है जो आपको ले आई हैं।'

ऊँचे, लंबे क़द का आदमी निकला। यह कहना कठिन था कि भारत के किस हिस्से से आया है। शरीर का बोझिल और ढीला ढाला था। दोनों कनपटियों के पास सफेद बालों के गुच्छे से उग आये थे जबकि सिर के ऊपर गिने चुने सफेद बाल उड़ से रहे थे।

दुआ-सलाम के बाद हम बैठे ही थे कि असने सवालों की झड़ी लगा दी। 'दिल्ली शहर तो अब बहुत कुछ बदल गया होगा?' उसने बच्चों के से आग्रह के साथ पूछा।

हाँ। बदल गया है। आप कब थे दिल्ली में?'

मैं दिल्ली का रहने वाला नहीं हूं। यों लड़कपन में बहुत बार दिल्ली गया हूं। रहने वाला तो मैं पंजाब का हूँ, जालन्धर का। जालन्धर तो आपने कहां देखा होगा।'

ऐसा तो नहीं, मैं स्वंय पंजाब का रहने वाला हू। किसी ज़माने में जालन्धर में रह चुका हूं।'

मेरे कहने की देर थी कि वह आदमी उठ खड़ा हुआ और लपक कर मुझे बाहों में भर लिया।

ओ लाजम! तूं बोलना नहीं एँ जे जलन्धर दा रहणवाला एँ?'

मैं सकुचा गया। ढीले ढाले बुजुर्ग को यों उत्तेजित होता देख मुझे अटपटा सा लगा। पर वह सिर से पाँव तक पुलक उठा था। इसी उत्तेजना में वह आदमी मुझे छोड़ कर तेज तेज़ चलता हुआ पिछले कमरे की ओर चला गया और थोड़ी देर बाद अपनी पत्नी को साथ लिये अंदर दाखि़ल हुआ जो इसी बीच थैला उठाए अंदर चली गई थी।

हेलेन, यह आदमी जलन्धर से आया है, मेरे शहर से, तुमने बताया ही नहीं।'

उत्तेजना के कारण उसका चेहरा दमकने लगा था और बड़ी बड़ी आँखों के नीचे गुमड़ों में नमी आ गई थी।

मैंने ठीक ही किया ना,'महिला कमरे में आते हुए बोली। उसने इस बीच एप्रन पहन लिया था और रसोई घर में काम करने लग गई थी। बड़ी शालीन, स्निग्ध नज़र से उसने मेरी और देखा। उसके चेहरे पर वैसी ही शालीनता झलक रही थी जो दसियों वर्ष तक शिष्टाचार निभाने के बाद स्वभाव का अंग बन जती है। वह मुस्कुरती हुई मेरे पास आकर बैठ गई।

लाल, मुझे भारत में जगह जगह घुमाने ले गया था। आगरा, बनारस, कलकत्ता, हम बहुत घूमे थे।'

वह बुजुर्ग इस बीच टकटकी बांधे मेरी और देखे जा रहा था। उसकी आँखों में वही रुमानी कि़स्म का देशप्रेम झलकने लगा था जो देश के बाहर रहने वाले हिन्दुस्तानी की आँखों में, अपने किसी देशवासी से मिलने पर चमकने लगता है। हिन्दुस्तानी पहले तो अपने देश से भागता है और बाद से उसी हिन्दुस्तानी के लिये तरसने लगता है।

भारत छोड़ने के बाद आप बहुत दिन से भारत नहीं गये, आपकी श्रीमती बता रही थी। भारत के साथ आपका संपर्क तो रहता ही होगा?'

और मेरी नज़र किताबों से ठसाठस भरी अल्मारियों पर पड़ी। दिवारों पर टंगे अनेक मानचित्र भारत के ही मानचित्र थे।

उसकी पत्नी अपनी भारत यात्रा को याद करके कुछ अनमनी सी हो गयी थी, एक छाया सी मानो उसके चेहरे पर डोलने लगी हो।

लाल के कुछ मित्र संबंधी अभी भी जालन्धर में रहते हैं। कभी-कभी उनका ख़त आ जाता है।' फिर हँसकर बोली, 'उनके खत मुझे पढ़ने के लिये नहीं देता। कमरा अन्दर से बंद करके उन्हें पढ़ता है।'

तुम क्या जानो कि उन ख़तों से मुझे क्या मिलता है!' लाल ने भावुक होते हुए कहा।

इस पर उसकी पत्नी उठ खड़ी हुई।

तुम लोग जालन्धर की गलियों में घूमो, मैं चाय का प्रबंध करती हूं।' उसने हँसके कहा और उन्हीं क़दमों रसोई घर की और घूम गई।

भारत के प्रति उस आदमी की अत्यधिक भावुकता को देख कर मुझे अचन्भा भी हो रहा था। देश के बाहर दशाब्दियों तक रह चुकने के बाद भी कोई आदमी बच्चों की तरह भावुक हो सकता है, मुझे अटपटा लग रहा था।

मेरे एक मित्र को भी आप ही कि तरह भारत से बड़ा लगाव था,' मैंने आवाज़ को हल्का करते हुए मज़ाक़ के से लहज़े में कहा, 'वह भी बरसों तक देश के बाहर रहता रहा था। उसके मन में ललक उठने लगी कि कब मैं फिर से अपने देश की धरती पर पाँव रख पाऊँगा।'

कहते हुए मैं क्षण भर के लिये ठिठका। मैं जो कहने जा रहा हूं, शायद मुझे नहीं कहना चाहिये। लेकिन फिर भी घृष्टता से बोलता चल गया, 'चुनांचे वर्षों बाद सचमुच वह एक दिन टिकट कटवाकर हवाई जहाज़ द्वारा दिल्ली जा पहुंचा। उसने खुद यह कि़स्सा बाद में मुझे सुनाया था। हवाई जहाज़ से उतर कर वो बाहर आया, हवाई अड्डे की भीड़ में खड़े-खड़े ही वह नीचे की और झुका और बड़े श्रद्धा भाव से भारत की धरती को स्पर्श करने के बाद खड़ा हुआ तो देखा, बटुआ गायब था'

बुजुर्ग अभी भी मेरी ओर देखे जा रहा था। उसकी आंखों के भाव में एक तरह की दूरी आ गयी थी, जैसे अतीत की अंधियारी खोह में से दो आँखें मुझ पर लगी हों।

उसने झुक कर स्पर्श तो किया यही बड़ी बात है,' उसने धीरे से कहा, 'दिल की साध तो पूरी कर ली।'

मैं सकुचा गया। मुझे अपना व्यवहार भोंडा सा लगा, लेकिन उसकी सनक के प्रति मेरे दिल में गहरी सहानुभूति रही हो, ऐसा भी नहीं था।

वह अभी भी मेरी और बड़े स्नेह से देखे जा रहा था। फिर वह सहसा उठ खड़ा हुआ- ऐसे मौक़े तो रोज़ रोज़ नहीं आते। इसे तो हम सेलिब्रेट करेंगे।' और पीछे जा कर एक अलमरी में से कोन्याक शराब की बोतल और दो शीशे के जाम उठा लाया।

जाम में कोन्याक उड़ेली गई। वह मेरे साथ बगलगीर हुआ, और हमने इस अनमोल घड़ी के नाम जाम टकराये।

आपको चाहिये कि आप हर तीसरे चौथे साल भारत की यात्रा पर जाया करें। इससे मन भरा रहता है।' मैंने कहा।

इसने सिर हिलाया 'एक बार गया था, लेकिन तभी निश्चय कर लिया था कि अब कभी भारत नहीं आऊँगा।' शराब के दो एक जामों के बाद ही वह खुलने लगा था, और उसकी भावुकता में एक प्रकार की अत्मीयता का पुट भी आने लगा था। मेरे घुटने पर हाथ रख कर बोला, 'मैं घर से भाग कर आया था। तब मैं बहुत छोटा था। इस बात को अब लगभग चालीस साल होने को आये हैं,' वह ठोड़ी देर के लिये पुरानी यादों में खो गया, पर फिर, अपने को झटका सा देकर वर्तमान में लौटा लाया। 'ज़िदगी में कभी कोइ बड़ी घटना ज़िंदगी का रुख़ नहीं बदलती, हमेशा छोटी तुच्छ

सी घटनायें ही ज़िंदगी का रुख बदलती हैं। मेरे भाई ने केवल मुझे डाँटा था कि तुम पढ़ते लिखते नहीं हो, आवारा घूमते रहते हो, पिताजी का पैसा बरबाद करते हो। और मैं उसी रात घर से भाग गया था।'

कहते हुये उसने फिर से मेरे घुटने पर हाथ रखा और बड़ी आत्मीयता से बोला 'अब सोचता हूं, वह एक बार नहीं , दस बार भी मुझे डाँटता तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझता। कम से कम कोई डाँटने वाला तो था।'

कहते कहते उसकी आवाज़ लड़खड़ा गयी, 'बाद में मुझे पता चला कि मेरी माँ ज़िन्दगी के आखिरी दिनों तक मेरा इन्तज़ार करती रही थी। और मेरा बाप, हर रोज़ सुबह ग्यारह बजे, जब डाकिये के आने का वक़्त होता तो वह घर के बाहर चबूतरे पर आकर खड़ा हो जाता था। और इधर मैंने यह दृढ़ निश्चय कर रखा था कि जब तक मैं कुछ बन ना जाऊं घर वालों को ख़त नहीं लिखुंगा।'

एक क्षीण सी मुस्कान उसके होंठों पर आयी और बुझ गई,'फिर मैं भारत गया। यह लगभग पंद्रह साल बाद की बात रही होगी। मैं बड़े मंसूबे बांध कर गया था.'

उसने फिर जाम भरे और अपना क़िस्सा सुनाने को मुँह खोला ही था कि चाय आ गयी। नाटे क़द की उसकी गोलमटोल पत्नी चाय की ट्रे उठाये, मुस्कुराती हुई चली आ रही थी। उसे देख कर मन में फिर से सवाल उठा, क्या यह महिला ज़िन्दगी का रुख़ बदलने का कारण बन सकती है?

चाय आ जाने पर वार्तालाप में औपचारिकता आ गई।

जालन्धर में हम माई हीराँ के दरवाज़े के पास रहते थे। तब तो जालन्धर बड़ा टूटा फूटा सा शहर था। क्यों, हनी? तुम्हे याद है, जालन्धर में हम कहाँ पर रहे थे?'

मुझे गलियों के नाम तो मालूम नहीं, लाल, लेकिन इतना याद है कि सड़कों पर कुत्ते बहुत घूमते थे, और नालियां बड़ी गंदी थीं, मेरी बड़ी बेटी - तब वह डेढ़ साल की थी- मक्खी देख कर डर गई थी। पहले कभी मक्खी नहीं देखी थी। वहीं पर हमने पहली बार गिलहरी को भी देखा था। गिलहरी उसके सामने से लपक कर एक पेड़ पर चड़ गयी तो वह भागती हुई मेरे पास दोड़ आयी थी। और क्या था वहाँ?'

हम लाल के पुश्तैनी घर में रहे थे'

चाय पीते समय हम इधर उधर कि बातें करते रहे। भारत की अर्थ्व्यावस्था की, नये नये उद्योग धंधों की, और मुझे लगा कि देश से दूर रहते हुए भी यह आदमी देश की गतिविधि से बहुत कुछ परिचित है।

मैं भारत में रहते हुए भी भारत के बारे में बहुत कम जानता हू, आप भारत से दूर हैं, पर भारत के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।'

उसने मेरी और देखा और होले से मुस्कुरा कर बोला 'तुम भारत में रहते हो, यही बड़ी बात है।'

मुझे लगा जैसे सब कुछ रहते हुए भी, एक अभाव सा, इस आदमी के दिल को अन्दर ही अन्दर चाटता रहता है- एक खला जिसे जीवन की उपलब्धियां और आराम आसायश, कुछ भी नहीं पाट सकता, जैसे रह रह कर कोई जख़्म सा रिसने लगता हो।

सहसा उसकी पत्नी बोली, 'लाल ने अभी तक अपने को इस बात के लिये माफ़ नहीं किया कि उसने मेरे साथ शादी क्यों की।'

हेलेनत

मैं अटपटा महसूस करने लगा। मुझे लगा जैसे भारत को लेकर पति पत्नी के बीच अक्सर झगड़ा उठ खड़ा होता होगा, और जैसे इस विषय पर झगड़ते हुए ही ये लोग बुड़ापे की दहलीज़ तक आ पहुंचे थे। मन में आया कि मैं फिर से भारत की बुराई करूँ ताकि यह सज्जन आपनी भावुक परिकल्पनाओं से छुटकारा पाये लेकिन यह कोशिश बेसूद थी।

सच कहती हूं,' उसकी पत्नी कहे जा रही थी, 'इसे भारत में शादी करनी चाहिये थी। तब यह खुश रहता। मैं अब भी कहती हूं कि यह भारत चला जाये, और मैं अलग यहां रहती रहूंगी। हमारी दोनो बेटियां बड़ी हो गई हैं। मैं अपना ध्यान रख लूंगी।'

वह बड़ी संतुलित, निर्लिप्त आवाज़ में कहे जा रही थी। उसकी आवाज़ में न शिकायत का स्वर था, न क्षोभ का। मानो अपने पति के ही हित की बात बड़े तर्कसंगत और सुचिन्तित ढंग से कह रही हो।

पर मैं जानती हूं, यह वहां पर भी सुख से नहीं रह पायेगा। अब तो वहां की गर्मी भी बर्दाश्त नहीं कर पायेगा। और वहां पर अब इसका कौन बैठा है? माँ रही, न बाप। भाई ने मरने से पहले पुराना पुश्तैनी घर भी बेच दिया था।'

हेलेन, प्लीज' बुजुर्ग ने वास्ता डालने के से लहज़े में कहा।

अब की बार मैंने स्वंय इधर उधर की बातें छेड़ दीं। पता चला कि उनकी दो बेटियां हैं, जो इस समय घर पर नहीं थीं, बड़ी बेटी बाप की ही तरह इंजीनियर बनी थी, जबकी छोटी बेटी अभी यूनीवर्सिटी में पढ़ रही थी, कि दोनो बड़ी समझदार और प्रतिभासंपन्न हैं। युवतियां हैं।

क्षण भर के लिये मुझे लगा कि मुझे इस भावुकता की ओर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये, इसे सनक से ज़्यादा नहीं समझना चाहिये, जो इस आदमी को कभी कभी परेशान करने लगती है जब अपने वतन का कोई आदमी इससे मिलता है। मेरे चले जाने के बाद भावुकता का यह ज्वार उतर जायेगा और यह फिर से अपने दैनिक जीवन की पटरी पर आ जायेगा।

आख़िर चाय का दौर ख़त्म हुआ.और हमने सिगरेट सुलगाया। कोन्याक का दौर अभी भी थोड़े थोड़े वक़्त के बाद चल रहा था। कुछ देर सिगरेटों सिगारों की चर्चा चली, इसी बीच उसकी पत्नी चाय के बर्तन उठा कर किचन की ओर बढ़ गई।

हां, आप कुछ बता रहे थे कि कोई छोटी सी घटना घटी थी।'

वह क्षण भर के लिये ठिठका, फिर सिर टेढ़ा करके मुस्कुराने लगा, 'तुम अपने देश से ज़्यादा देर बाहर नहीं रहे इस लिये नहीं जानते कि परदेश में दिल की कैफ़ियत क्या होती है। पहले कुछ साल तो मैं सब कुछ भूले रहा पर भारत से निकले दस-बारह साल बाद भारत कि याद रह रह कर मुझे सताने लगी। मुझ पर इक जुनून सा तारी होने लगा। मेरे व्यवहार में भी इक बचपना सा आने लगा। कभी कभी मैं कुर्ता पायजाम पहन कर सड़कों पर घूमने लगता था, ताकि लोगों को पता चले कि मैं हिन्दूस्तानी हूं, भारत का रहने वाला हूं। कभी जोधपुरी चप्पल पहन लेता, जो मैंने लंदन से मंगवायी थी, लोग सचमुच बड़े कोतुहल से मेरी चप्पल की ओर देखते, और मुझे बड़ा सुख मिलता। मेरा मन चाहता कि सड़कों पर पान चबाता हुआ निकलूं, धोती पहन कर चलूं। मैं सचमुच दिखाना चाहता था कि मैं भीड़ में खोया अजनबी नहीं हूं, मेरा भी कोई देश है, मैं भी कहीं का रहने वाला हूं। परदेस में रहने वाले हिन्दुस्तानी के दिल को जो बात सबसे ज़्यादा सालती है, वह यह कि वह परदेश में एक के बाद एक सड़क लांघता चला जाये और उसे कोई जानता नहीं, कोई पहचानता नहीं, जबकि अपने वतन में हर तीसरा आदमी वाक़िफ़ होता है। दिवाली के दिन मैं घर में मोमबत्तियाँ लाकर जला देता, हेलेन के माथे पर बिंदी लगाता, उसकी माँग में लाल रंग भरता। मैं इस बात के लिये तरस तरस जाता कि रक्षा बन्धन का दिन हो और मेरी बहिन अपने हाथों से मुझे राखी बांधे, और कहे 'मेरा वीर जुग जुग जिये!' मैं 'वीर' शब्द सुन पाने के लिये तरस तरस जाता। आख़िर मैंने भारत जाने का फैसला कर लिया। मैंने सोचा, मैं हेलेन को भी साथ ले चलुंगा और अपनी डेढ़ बरस की बची को भी। हेलेन को भारत की सैर कराउंगा और यदि उसे भारत पसंद आया तो वहीं

छोटी मोटी नौकरी करके रह जाऊंगा।'

पहले तो हम भारत में घूमते घामते रहे। दिल्ली, आगरा, बनारस.मैं एक एक जगह बड़े चाव से इसे दिखाता और इसकी आँखों में इसकी प्रतिक्रिया देखता रहता। इसे कोई जगह पसन्द होती तो मेरा दिल गर्व से भर उठता।'

फिर हम जलन्धर गये।' कहते ही वह आदमी फिर से अनमना सा होकर नीचे की और देखने लगा और चुपचाप सा हो गया, मुझे जगा जैसे वह मन ही मन दूर अतीत में खो गया है और खोता चला जा रहा है। पर सहसा उसने कंधे झटक दिये और फर्श की ओर आँखे लगाये ही बोला, 'जालन्धर में पहुंचते ही मुझे घोर निराशा हुई। फटीचर सा शहर, लोग ज़रूरत से ज़्यादा काले और दुबले। सड़कें टूटी हुइं। सभी कुछ जाना पहचाना था लेकिन बड़ा छोटा छोटा और टूटा फूटा। क्या यही मेरा शहर है जिसे मैं हेलेन को दिखाने लाया हूं? हमारा पुशतैनी घर जो बचपन में मुझे इतना बड़ा बड़ा और शानदार लग करता था, पुराना और सिकुड़ा हुआ। माँ बाप बरसों पहले मर चुके थे। भाई प्यार से मिला लेकिन उसे लगा जैसे मैं जायदाद बाँटने आया हूं और वह पहले दिन से ही खिंचा खिंचा रहने लगा। छोटी बहन की दस बरस पहले शादी हो चुकी थी और वह मुरादाबाद में जाकर रहने लगी थी। क्या मैं विदेशों में बैठा इसी नगर के स्वप्न देखा करता था? क्या मैं इसी शहर को देख पाने के लिये बरसों से तरसता रहा हूं? जान पहचान के लोग बूढ़े हो चुके थे। गली के सिरे पर कुबड़ा हलवाई बैठा करता था। अब वह पहले से भी ज़्यादा पिचक गया था, और दुकान में चौकी पर बैठने के बजाये, दुकान के बाहर खाट पर उकडूं बैठा था। गलियां बोसीदा, सोयी हुई। मैं हेलेन को क्या दिखाने लाया हूं? दो तीन दिन इसी तरह बीत गये। कभी मैं शहर से बाहर खेतों में चल जाता, कभी गली बाज़ार में घूमता। पर दिल में कोई स्फूर्ति नहीं थी, कोई उत्साह नहीं था। मुझे लगा जैसे मैं फिर किसी पराये नगर में पहुंच गया हूं।

तभी एक दिन बाज़ार में जाते हुए मुझे अचानक ऊँची सी आवाज़ सुनायी दी - 'ओ हरामज़ादे !' मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया। यह हमारे शहर की परम्परागत गाली थी जो चौबिसों घंटे हर शहरी की ज़बान पर रहती थी। केवल इतना भर विचार मन में उठा कि शहर तो बूढ़ा हो गया है लेकिन उसकी तहज़ीब ज्यों की त्यों क़ायम है।

ओ हरामज़ादे! अपने बाप की तरफ देखता भी नहीं?'

मुझे लगा जैसे कोई आदमी मुझे ही सम्बोधन कर रहा है। मैंने घूम कर देखा। सड़क के उस पार, साईकिलों की एक दुकान के चबूतरे पर खड़ा एक आदमी मुझे ही बुला रहा था।

मैंने ध्यान से देखा। काली काली फनियर मूँछों, सपाट गंजे सिर और आँखों पर लगे मोटे चश्मे के बीच से एक आकृति सी उभरने लगी। फिर मैंने झट से उसे पहचान लिया। वह तिलकराज था, मेरा पुराना सहपाठी।

हरामज़ादे! अब बाप को पहचानता भी नहीं है!' दूसरे क्षण हम दोनो एक दूसरे की बाहों में थे।

ओ हरामज़ादे! बाहर की गया, साहब बन गया तूं?' तेरी साहबी विच मैं.' और उसने मुझे ज़मीन पर से उठा लिया। मुझे डर था कि वह सचमुच ही ज़मीन पर मुझे पटक न दे। दूसरे क्षण हम एक दूसरे को गालियां निकाल रहे थे।

मुझे लड़कपन का मेरा दोस्त मिल गया था। तभी सहसा मुझे लगा जैसे जालन्धर मिल गया है, मुझे मेरा वतन मिल गया है। अभी तक मैं अपने शहर में अजनबी सा घूम रहा था। तिलक राज से मिलने की देर थी कि मेरा सारा पराया पन जाता रहा। मुझे लगा जैसे मैं यहीं का रहने वाला हूं। मैं सड़क पर चलते किसी भी आदमी से बात कर सकता हूं, झगड़ सकता हूं। हर इन्सान कही का बन कर रहना चाहता है। अभी तक मैं अपने शहर में लौट कर भी परदेसी था, मुझे किसी ने पहचाना नहीं था। अपनाया नहीं था। यह गाली मेरे लिये वह तन्तू थी, सोने की वह कड़ी थी जिसने मुझे मेरे वतन से, मेरे लोगों से, मेरे बचपन और लड़कपन से, फिर से जोड़ दिया था।

तिलकराज की और मेरी हरकतों में बचपना था, बेवकूफ़ी थी। पर उस वक्त़ वही सत्य था, और उसकी सत्यता से आज भी मैं इन्कार नहीं कर सकता। दिल दुनिया के सच बड़े भध्ंडे पर बड़े गहरे और सच्चे होते हैं।

चल, कहीं बैठ्कर चाय पीते हैं, तिलकराज ने फिर गाली देकर कहा। वह पंजाबी दोस्त क्या जो गाली देकर, फक्कड़ तोलकर बगलगीर न हो जाये।

हम दोनों, एक दूसरे की कमर में हाथ डाले। ख़रामा ख़रामा माई हीरां के दरवाज़े की ओर जाने लगे। मेरी चाल में पुराना अलसाव आ गया। मैं जालन्धर की गलियों में यूं घूमने लगा जैसे कोई जागीरदार अपनी जागीर में घूमता है। मैं पुलक पुलक रहा था। किसी किसी वक्त मन में से आवज उठती, तुम यहां के नहीं हो, पराये हो, परदेसी हो, पर मैं अपने पैर और भी ज़ोर से पटक पटक कर चलने लगता।

चुच्चा हलवाई अभी भी वहीं पर बैठता है?

और क्या, तूं हमें धोखा दे गया है, और लोगों ने तो धोखा नहीं दिया।

इसी अल्हड़पन से, एक दूसरे की कमर में हाथ डाले, हम किसी जमाने में इन्हीं सड़कों पर घूमा करते थे। तिलकराज के साथ मैं लड़कपन में पहुंच गया था, उन दिनों का अलबेलापन महसूस करने लग था।

हम एक मैले कुचौले ढाबे में जा बैठे। वही मक्खियों और मैल से अटा गन्दा मेज़, पर मुझे परवाह नहीं थी, यह मेरे जालन्धर के ढाबे का मेज़ था। उस वक्त़ मेरा दिल करता कि हेलेन मुझे इस स्थिति में आकर देखे, तब वह मुझे जान लेगी कि मैं कौन हूं, कहां का रहने वाला हूं,कि दुनिया में एक कौना ऐसा भी है जिसे मैं अपना कह सकता हूं, यह गन्दा ढाबा, यह धूंआधारी फटीचर खोह।

ढाबे से निकल कर हम देर तक सड़कों पर मटरगश्ती करते रहे यहां तक कि थककर चूर हो गये। वह उसी तरह मुझे अपने घर के सामने तक ले गया। जैसे लड़कपन में मैं उसके साथ चलता हुआ, उसे उसके घर तक छोड़ने जाता था, फिर वह मुझे मेरे घर तक छोड़ने आता था।

तभी उसने कहा, कल रात खाना तुम मेरे घर पर खाओगे। अगर इन्कार किया तो साले, यहीं तुझे गले से पकड़ कर नाली में घुसेड़ दूंगा।

आऊंगा, मैंने झट से कहा।

अपनी मेम को भी लाना। आठ बजे मैं तेरी राह देखूंगा। अगर नहीं आया तो साले हराम दे.

और पुराने दिनों की ही तरह उसने पहले हाथ मिलाया और फिर घुटना उठा कर मेरी जांघ पर दे मारा। यही हमारा विदा होने का ढंग हुआ करता था। जो पहले ऐसा कर जाये कर जाये। मैंने भी उसे गले से पकड़ लिया और नीचे गिराने का अभिनय करने लगा।

यह स्वाँग था। मेरी जालन्धर की सारी यात्रा ही छलावा थी। कोई भावना मुझे हांके चले जा रही थी और मैं इस छलावे में ही खोया रहना चाहता था।

दूसरे रोज़, आठ बजते न बजते, हेलेन और मैं उसके घर जा पहूंचे। बच्ची को हमने पहले ही खिलाकर सुला दिया था। हेलेन ने अपनी सबसे बढिया पोशाक पहनी, काले रंग का फ्राक, जिसपर सुनहरी कसीदाकारी

हो रही थी, कंधों पर नारंगी रंग का स्टोल डाला, और बार बार कहे जाती:-

तुम्हारा पुराना दोस्त है तो मुझे बन सँवर कर ही जाना चाहिये ना।

मैं हां कह देता पर उसके एक एक प्रसाधन पर वह और भी ज़्यादा दूर होती जा रही थी। न तो काला फ्राक और बनाव सिंगार और न स्टोल और इत्र फुलेल ही जालन्धर में सही बैठते थे। सच पूछो तो मैं चाहता भी नहीं था कि हेलेन मेरे साथ जाये। मैंने एकाध बार उसे टालने की कोशिश भी की, जिस पर वह बिगड़ कर बोली, वाह जी, तुम्हारा दोस्त हो और मैं उससे न मिलूं? फिर तुम मुझे यहां लाये ही क्यों हो?

हम लोग तो ठीक आठ बजे उसके घर पहुंच गये लेकिन उल्लू के पट्ठे ने मेरे साथ धोखा किया। मैं समझे बैठा था कि मैं और मेरी पत्नी ही उसके परिवर के साथ खाना खायेंगे। पर जब हम उसके घर पहुंचे तो उसने सारा जालन्धर इकट्ठा कर रखा था, सारा घर मेहमानों से भरा था। तरह तरह के लोग बुलाये गये थे। मुझे झेंप हुई। अपनी ओर से वह मेरा शानदार स्वागत करना चाहता था। वह भी पंजाबी स्वभाव के अनुरूप ही। दोस्त बाहर से आये और वह उसकी ख़ातिरदारी न करे। अपनी ज़मीन जायदाद बेचकर भी वह मेरी ख़ातिरदारी करता। अगर उसका बस चलता तो वह बैंड बाजा भी बुला लेता। पर मुझे बड़ी कोफ्त हुई। जब हम पहुंचे तो बैठक वाला कमरा महमानों से भरा था, उनमें से अनेक मेरे परिचित भी निकल आये और मेरे मन में फिर हिलोर सी उठने लगी।

पत्नी से मेरा परिचय कराने के लिये मुझे बैठक में से रसोईघर की ओर ले गया। वह चुल्हे के पास बैठी कुछ तल रही थी। वह झट से उठ खड़ी हुई दुप्पटे के कोने से हाथ पोंछते हुए आगे बढ़ आयी। उसका चेहरा लाल हो रहा था और बालों की लट माथे पर झूल आयी थी। ठेठ पंजाबिन, अपनत्व से भरी, मिलनसार, हँसमुख। उसे यों उठते देखकर मेरा सारा शरीर झनझना उठा। मेरी भावज भी चुल्हे से घ्से ही उठ आया करती थी, दुप्पटे के कोने से हाथ पोंछती हुई, मेरी बड़ी बहनें भी, मेरी माँ भी। पंजाबी महिला का सारा बांकापन, सारी आत्मियता उसमें जैसे निखर निखर आयी थी। किसी पंजाबिन से मिलना हो तो रसोईघर की दहलीज पर ही मिलो। मैं सराबोर हो उठा। वह सिर पर पल्ला ठीक करती हुई, लजाती हुई सी मेरे सामने आ खड़ी हुई।

भाभी, यह तेरा घरवाला तो पल्ले दर्जे का बेवकूफ है, तुम इसकी बातों में क्यों आ गईं?

इतना आडम्बर करने की क्या ज़रूरत थी? हम लोग तो तुमसे मिलने आये हैं

फिर मैंने तिलकराज की और मुख़ातिब होकर कह, उल्लू के पट्ठे, तुझे मेहमाननवाज़ी करने को किसने कहा था? हरामी, क्या मैं तेरा मेहमान हूं? मैं तुझसे निबट लूंगा।

उसकी पत्नी कभी मेरी ओर देखती, कभी अपने पति की ओर फिर धीरे से बोली, आप आयें और हम खाना भी न करें? आपके पैरों से तो हमारा घर पवित्र हुआ है।

वही वाक्य जो शताब्दियों से हमारी गृहणियाँ मेहमानों से कहती आ रही हैं।

फिर वह हमें छोड़ कर सीधा मेरी पत्नी से मिलने चली गई और जाते ही उसका हाथ पकड़ लिया और बड़ी आत्मीयता से उसे खींचती हुई एक कुर्सी की ओर ले गयी। वह यों व्यवहार कर रही थी जैसे उसका भाग्य जागा हो। हेलेन को कुर्सी पर बैठाने के बाद वह स्वँय नीचे फ़र्श पर बैठ गयी। वह टूटी फूटी अंग्रेज़ी बोल लेती थी ओर बेधड़क बोले जा रही थी। हर बार उनकी आँखें मिलतीं तो वह हंस देती। उसके लिये हेलेन तक अपने विचार पहुंचाना कठिन था लेकिन अपनी आत्मीयता और स्नेह भाव उस तक पहुंचाने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई।

उस शाम तिलक राज की पत्नी हेलेन के आगे पीछे घूमती रही। कभी अन्दर से कढ़ाई के कपड़े उठा लाती और एक एक करके हेलेन को दिखाने लगती। कभी उसका हाथ पकड़ कर उसे रसोईघर में ले जाती, और उसे एक एक व्यंजन दिखाती कि उसने क्या क्या बनाया है और कैसे कैसे बनाया है। फिर वह अपनी कुल्लू की शाल उठा लायी और जब उसने देखा कि हेलेन को पसंद आयी है, तो उसने उसके कंधों पर डाल दी।

इस सारी आवभगत के बावजूद हेलेन थक गयी। भाषा की कठिनाई के बावजूद वह बड़ी शालीनता के साथ सभी से पेश आयी। पर अजनबी लोगों के साथ आख़िर कोई कितनी देर तक शिष्टाचार निभाता रहे? अभी ड्रिंक्स ही चल रहे थे जब वह एक कुर्सी पर थक कर बैठ गयी। जब कभी मेरी नज़र हेलेन की ओर उठती तो वह नज़र नीची कर लेती, जिसक मतलब था कि मैं चुपचाप इस इन्तज़ार में बैठी हूं कि कब तुम मुझे यहां से ले चलो।

रात के बारह बजे के क़रीब पार्टी ख़त्म हुई और तिलक राज के यार दोस्त नशे में झूमते हुये अपने अपने घर जाने लगे। उस वक़्त तक काफी शोर गुल होने लगा था, कुछ लोग बहकने भी लगे थे। एक आदमी के हाथ से शराब का गिलास गिरकर टूट गया था।

जब हम लोग भी जाने को हुए और हेलेन भी उठ खड़ी हुई तो तिलक राज ने पंजाबी दस्तूर के मुताबिक़ कहा - बैठ जा, बैठ जा, कोई जाना वाना नहीं है।

नहीं यार, अब चलें। देर हो गयी है।

उसने फिर मुझे धक्का देकर कुर्सी पर फेंक दिया।

कुछ हल्का हल्का सरूर, कुछ पुरानी याद, तिलक राज का प्यार और स्नेह उसकी पत्नी का आत्मीयता से भरा व्यवहार, मुझे भला लग रहा था। सलवार कमीज़ पहने बालों का जूड़ा बनाये, चूड़ियां खनकाती एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती हुई तिलक राज की पत्नी मेरे लिये मेरे वतन का मुजस्समा बन गयी थी, मेरे देश की समुची संस्कृति उसमें सिमट आयी थी। मेरे दिल में, कहीं गहरे में, एक टीस सी उठी कि मेरे घर में भी कोई मेरे ही देश की महिला एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमा करती, उसी की हंसी गूंजती, मेरे ही देश के गीत गुनगुनाती। वर्षों से मैं उन बोलों के लिये तरस गया था जो बचपन में अपने घर में सुना करता था।

हेलेन से मुझे कोई शिकायत नहीं थी। मेरे लिये उसने क्या नहीं किया था। उसने चपाती बनाना सीख लिया था। दाल छोंकना सीख लिया था। शादी के कुछ समय बाद ही वह मेरे मुंह से सुने गीत टप्पे भी गुनगुनाने लगी थी। कभी कभी सलवार कमीज़ पहन कर मेरे साथ घूमने निकल पड़ती। रसोईघर की दीवार पर उसने भारत का एक मानचित्र टांग दिया था जिस पर अनेक स्थानों पर लाल पेंसिल से निशान लगा रखे थे कि जालन्धर कहां है और दिल्ली कहां है और अमृतसर कहां है जहां मेरी बड़ी बहन रहती थी। भारत सम्बंधी जो किताब मिलती, उठा लाती, जब कभी कोई हिन्दुस्तानी मिल जाता उसे आग्रह अनुरोध करके घर ले आती। पर उस समय मेरी नज़र में यह सब बनावट था, नक़ल थी, मुलम्मा था - इन्सान क्यों नहीं विवेक और समझदारी के बल पर अपना

जीवन व्यतीत कर सकता? क्यों सारा वक्त तरह तरह के अरमान उसके दिल को मथते रहते हैं?

फिर? मैंने आग्रह से पूछा।

उसने मेरी ओर देखा और उसके चेहरे की मांसपेशियों में हल्का सा कम्पन हुआ। वह मुस्कराकर कहने लगा, तुम्हे क्या बताऊं। तभी मैं एक भूल कर बैठा। हर इन्सान कहीं न कहीं पागल होता है और पागल बना रहना चाहता है जब मैं विदा लेने लगा और तिलक राज कभी मुझे गलबहियां देकर और कभी धक्का देकर बिठा रहा था और हेलेन भी पहले से दरवाज़े पर जा खड़ी हुई थी, तभी तिलकराज की पत्नी लपककर रसोईघर की ओर से आई और बोली, हाय, आपलोग जा रहे हैं? यह कैसे हो सकता है? मैंने तो ख़ास आपके लिये सरसों का साग और मक्के की रोटियां बनाई हैं।

मैं ठिठक गया। सरसों का साग और मक्की की रोटियां पंजाबियों का चहेता भोजन है।

भाभी, तुम भी अब कह रही हो? पहले अंट संट खिलाती रही हो और अब घर जाने लगे हैं तो

मैं इतने लोगों के लिये कैसे मक्की की रोटियां बना सकती थी? अकेली बनाने वाली जो थी। मैंने आपके लिये थोड़ी सी बना दी। यह कहते थे कि आपको सरसों का साग और मक्की की रोटी बहुत पसंद है.

सरसों का साग और मक्की की रोटी। मैं चहक उठा, और तिलक राज को सम्बोधन करके कहा. ओ हरामी, मुझे बताया क्यों नहीं? और उसी हिलोरे में हेलेन से कहा, आओ हेलेन, भाभी ने सरसों का साग बनाया है। यह तो तुम्हे चखना ही होगा।

हेलेन खीज उठी। पर अपने को संयत कर मुस्कुराती हुई बोली, मुझे नहीं, तुम्हे चखना होगा। फिर धीरे से कहने लगी, मैं बहुत थक गयी हूं। क्या यह साग कल नहीं खाया जा सकता?

सरसों का साग, नाम से ही मैं बावला हो उठा था। उधर शराब का हल्का हल्का नशा भी तो था।

भाभी ने ख़ास हमारे लिये बनाया है। तुम्हे ज़रूर अच्छा लगेगा।

फिर बिना हेलेन के उत्तर का इन्तज़ार किये, साग है तो मैं तो रसोईघर के अन्दर बैठ कर खाऊंगा। मैंने बच्चों की तरह लाड़ से कहा, चल बे, उल्लू के पट्ठे, उतार जूते, धो हाथ और बैठ जा थाली के पास ! एक ही थाली में खायेंगे।

छोटा सा रसोईघर था। हमारे अपने घर में भी ऐसा ही रसोईघर हुआ करता था जहां मां अंगीठी के पास रोटियां सेंका करती थी और हम घर के बच्चे, साझी थालियों में झुके लुकमे तोड़ा करते थे।

फिर एक बार चिरपरिचित दृश्य मानों अतीत में से उभर कर मेरी आंखों के सामने घूमने लगा था और मैं आत्मविभोर होकर उसे देखे जा रहा था। चुल्हे की आग की लौ में तिलक राज की पत्नी के कान का झूमर चमक चमक जाता था। सोने के कांटे में लाल नगीना पंजाबियों को बहुत फबता है। इस पर हर बार तवे पर रोटी सेंकने पर उसकी चूडघ्यिां खनक उठतीं और वह दोनो हाथों से गरम गरम रोटी तवे पर से उतार कर हंसते हुए हमारी थाली में डाल देती।

यह दृश्य मैं बरसों के बाद देख रहा था और यह मेरे लिये किसी स्वपन से भी अधिक सुन्दर और हृदयग्राही था। मुझे हेलेन की सुध भी नहीं रही। मैं बिल्कुल भूले हुए था कि बैठक में हेलेन अकेली बैठी मेरा इन्तज़ार कर रही है। मुझे डर था कि अगर मैं रसोईघर में से उठ गया तो स्वपन भंग हो जायेगा। यह सुन्दरतम चित्र टुकड़े टुकड़े हो जायेगा। लेकिन तिलक राज की पत्नी उसे नहीं भूली थी। वह सबसे पहले एक तशतरी में मक्की की रोटी और थोड़ा सा साग और उस पर थोड़ा सा मक्खन रख कर हेलेन के लिये ले गयी थी। बाद में भी, दो एक बार बीच बीच में उठ कर उसके पास कुछ न कुछ ले जाती रही थी।

खाना खा चुकने पर, जब हम लोग रसोईघर में से निकल कर बैठक में आये तो हेलेन कुर्सी में बैठे बैठे सो गयी थी और तिपाई पर मक्की की रोटी अछूती रखी थी। हमारे क़दमों की आहट पाकर उसने आंखें खोलीं और उसी शालीन शिष्ट मुस्कान के साथ उठ खड़ी हुई।

विदा लेकर जब हम लोग बाहर निकले तो चारों ओर सन्नाटा छाया था। नुक्कड़ पर हमें एक तांगा मिल गया। तांगे में घूमे बरसों बीत चुके थे, मैंने सोचा हेलेन को भी इसकी सवारी अच्छी लगेगी। पर जब हम लोग तांगे में बैठे कर घर की ओर जाने लगे तो रास्ते में हेलेन बोली, कितने दिन और तुम्हारा विचार जालन्धर में रहने का है?

क्यों अभी से ऊब गयीं क्या? आज तुम्हे बहुत परेशान किया ना, आई एम सारी।

हेलेन चुप रही, न हूं, न हां।

हम पंजाबी लोग सरसों के साग के लिये पागल हुए रहते हैं। आज मिला तो मैंने सोचा जी भर के खाओ। तुम्हे कैसे लगा?

सुनो, मैं सोचती हूं मैं यहां से लौट जाऊं, तुम्हारा जब मन आये, चले आना।

यह क्या कह रही हो हेलेन, क्या तुम्हे मेरे लोग पसंद नहीं हैं?

भारत में आने पर मुझे मन ही मन कई बार यह ख़्याल आया था कि अगर हेलेन और बच्ची साथ में नहीं आतीं तो में खुल कर घूम फिर सकता था। छुट्टी मना सकता था। पर मैं स्वंय ही बड़े आग्रह से उसे अपने साथ लाया था। मैं चाहता था कि हेलेन मेरा देश देखे, मेरे लोगों से मिले, हमारी नन्ही बच्ची के संस्कारों में भारत के संस्कार भी जुड़ें और यदि हो सके तो मैं भारत में ही छोटी मोटी नौकरी कर लूं।

हेलेन की शिष्ट, सन्तुलित आवाज़ में मुझे रुलाई का भास हुआ। मैंने दुलार से उसे आलिंगन में भरने की कोशिश की। उसमे धीरे से मेरी बांह को परे हटा दिया। मुझे दूसरी बार उसके इर्द गिर्द अपनी बांह डाल देनी चाहिये थी, लेकिन मैं स्वंय तुनक उठा।

तुम तो बड़ी डींग मारा करतीं हो कि तुम्हे कुछ भी बुरा नहीं लगता और अभी एक घंटे में ही कलई खुल गई।

तांगे में हिचकोले आ रहे थे। पुराना फटीचर सा तांगा था, जिसके सब चुल ढीले थे। हेलेन को तांगे के हिचकोले परेशान कर रहे थे। ऊबड़ खाबड़, गड्ढों से भरी सड़क पर हेलेन बार बार संभल कर बैठने की कोशिश कर रही थी।

मैं सोचती हूं, मैं बच्ची को लेकर लौट जाऊंगी। मेरे यहां रहते तुम लोगों से खुलकर नहीं मिल सकते। उसकी आवाज़ में औपचारिकता का वैसा ही पुट था जैसा सरसों के साग की तारीफ़ करते समय रहा होगा, झूठी तारीफ़ और यहां झूठी सद्‌भावना।

तुम खुद सारा वक्त गुमसुम बैठी रही हो। मैं इतने चाव से तुम्हे अपना देश दिखाने लाया हूं।

तुम अपने दिल की भूख मिटाने आये हो, मुझे अपना देश दिखाने नहीं लाये, उसने स्थिर, समतल, ठण्डी आवाज़ में कहा और अब मैंने तुम्हारा देश देख लिया है।

मुझे चाबुक सी लगी।

इतना बुरा क्या है मेरे देश में जो तुम इतनी नफ़रत से उसके बारे में बोल रही हो? हमार देश ग़रीब है तो क्या, है तो हमारा अपना।

मैंने तुम्हारे देश के बारे में कुछ नहीं कहा।

तुम्हारी चुप्पी ही बहुत कुछ कह देती है। जितनी ज़्यादा चुप रहती हो

उतना ही ज़्यादा विष घोलती हो।

वह चुप हो गयी। अन्दर ही अन्दर मेरा हीन भाव जिससे उन दिनों हम सब हिन्दुस्तानी ग्रस्त हुआ करते थे, छटपटाने लगा था। आक्रोश और तिलमिलाहट के उन क्षणों में भी मुझे अन्दर ही अन्दर कोई रोकने की कोशिश कर रहा था। अब बात और आगे नहीं बढ़ाओ, बाद में तुम्हे अफ़सोस होगा, लेकिन मैं बेक़ाबू हुआ जा रहा था। अंधेरे में यह भी नहीं देख पाया कि हेलेन की आंखें भर आयी हैं और वह उन्हें बार बार पोंछ रही है। तांगा हिचकोले खाता बढ़ा जा रहा था और साथ साथ मेरी बौखलाहट भी बढ़ रही थी। आख़िर तांगा हमारे घर के आगे जा खड़ा हुआ। हमारे घर की बत्ती जलती छोड़कर घर के लोग अपने अपने कमरों में आराम से सो रहे थे। कमरे मे पहुंच कर हेलेन ने फिर एक बार कहा, तुम्हे किसी हिन्दुस्तानी लड़की से शादी करनी चाहिये थी। उसके साथ तुम खुश रहते। मेरे साथ तुम बंधे बंधे महसूस करते हो।

हेलेन ने आंख उठा कर मेरी ओर देखा। उसकी नीली आंखें मुझे कांच कि बनी लगी, ठन्डी, कठोर, भावनाहीन, तुम सीधा क्यों नही कहती हो कि तुम्हे एक हिन्दुस्तानी के साथ ब्याह नहीं करना चाहिये था।

मुझ पर इस बात का दोष क्यों लगती हो?

मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, बह बोली और पार्टीशन के पीछे कपड़े बदलने चली गयी।

दीवार के साथ एक ओर हमारी बच्ची पालने में सो रही थी। मेरी आवाज़ सुन कर वह कुनकुनाई, इस पर हेलेन झट से पार्टीशन के पीछे से लौट आयी और बच्ची को थपथपाकर सुलाने लगी। बच्ची फिर से गहरी नींद में सो गई। और हेलेन पार्टीशन की ओर बढ़ गई। तभी मैंने पार्टीशन की और जाकर गुस्से से कहा, जब से भारत आये हैं, आज पहले दिन कुछ दोस्तों से मिलने का मौक़ा मिला है, तुम्हे वह भी बुरा लगा है। लानत है ऐसी शादी पर!

मैं जानता था पार्टीशन के पीछे से कोई उत्तर नहीं आयेगा। बच्ची सो रही हो तो हेलेन कमरे में चलती भी दबे पांव थी। बोलने का तो सवाल ही नहीं उठता।

पर वह उसी समतल आवाज़ में धीरे से बोली, तुम्हे मेरी क्या परवाह। तुम तो मज़े से अपने दोस्त के बीवी के साथ फ्लर्ट कर रहे थे।

हेलेन! मुझे आग लग गयी, क्या बक रही हो।

मुझे लगा जैसे उसने एक अत्यंत पवित्र, अत्यंत कोमल और सुन्दर चीज़ को एक झटके में तोड़ दिया हो।

तुम समझती हो मैं अपने मित्र की बीवी के साथ फ्लर्ट कर रहा था?

मैं क्या जानूं तुम क्या कर रहे थे। जिस ढंग से तुम सारा वक़्त उसकी ओर देख रहे थे।

दूसरे क्षण मैं लपक कर पार्टीशन के पीछे जा पहुंचा और हेलेन के मूंह पर सीधा थप्पड़ दे मारा।

उसने दोनो हाथों से अपना मूंह ढांप लिया। एक बार उसकी आंखें टेड़ी हो कर मेरी ओर उठीं। पर वह चिल्लायी नहीं। थप्पड़ परने पर उसका सिर पार्टीशन से टकराया था। जिससे उसकी कनपटी पर चोट आयी थी।

मार लो, अपने देश में लाकर तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार करोगे, मैं नहीं जानती थी।

उसके मुंह से यह वाक्य निकलने की देर थी कि मेरी टांगे लरज गयीं और सारा शरीर ठंडा पड़ गया। हेलेन ने चेहरे पर से हाथ हटा लिये थे। उसके गाल पर थप्पड़ का गहरा निशान पड़ गया था। पार्टीशन के पीछे वह केवल शमीज पहने सिर झुकाये खड़ी थी क्योंकि उसने फ्राक उतार दिया था। उसके सुनहरे बाल छितराकर उसके माथे पर फैले हुए थे।

यह मैं क्या कर बैठा था? यह मुझे क्या हो गया था? मैं आंखें फाड़े उसकी ओर देखे जा रहा था और मेरा सारा शरीर निरुद्ध हुआ जा रहा था। मेरे मुंह से फटी फटी सी एक हुंकार निकली, मानो दिल का सार क्षोभ और दर्द अनुकूल शब्द न पाकर मात्र क्रंदन में ही छटपटाकर व्यक्त हो पाया हो। मैं पार्टीशन के पीछे से निकल कर बाहर आंगन में चला गया। यह मुझसे क्या हो गया है? यही एक वाक्य मेरे मन में बार बार चक्कर काट रहा था

इस घटना के तीन दिन बाद हमने भारत छोड़ दिया। मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया कि अब लौट कर नहीं आऊंगा। उस दिन जो जालन्धर छोड़ा तो फिर लौट कर नहीं गया।

सीढ़ियों पर क़दमों की आवाज़ आयी। उसी वक़्त रसोईघर से हेलेन भी एप्रेन पहने चली आयी। सीढ़ियों की ओर से हंसने चहकने और तेज तेज़ सीढ़ियां चढ़ने की आवाज़ आयी। ज़ोर से दरवाज़ा खुला और हांफ़ती हांफ़ती दो युवतियां - लाल साहब की बेटियां- अन्दर दाख़िल हुईं। बड़ी बेटी ऊंची लम्बी थी, उसके बाल काले थे और आंखें किरमिची रंग की थीं। छोटी के हाथ में किताबें थीं, उसका रंग कुछ कुछ सांवला था, और आंखों में नीली नीली झाईयां थीं। दोनों ने बारी बारी से मां और बाप के गाल चूमे, फिर झट से चाय की तिपायी पर से केक के टुकड़े उठा उठा कर हड़पने लगीं। उनकी मां भी कुर्सी पर बैठ गयी और दोनो बेटियां दिन भर की छोटी छोटी घटनायें अपनी भाषा में सुनाने लगीं। सारा घर उनकी चहकती आवाज़ों से गूंजने लगा। मैंने लाल की ओर देखा। उसकी आंखों में भावुकता के स्थान पर स्नेह उतर आया था।

यह सज्जन भारत से आये हैं। यह भी जालन्धर के रहने वाले हैं।

बड़ी बेटी ने मुस्कुरा कर मेरा अभिवादन किया। फिर चहक कर बोली, जालन्धर तो अब बहुत कुछ बदल गया होगा। जब मैं वहां गयी थी, तब तो वह बहुत पुराना पुराना सा शहर था। क्यों मां? और खिलखिलाकर हंसने लगी।

लाल का अतीत भले ही कैसा रहा हो, उसका वर्तमान बड़ा समृद्ध और सुन्दर था।

वह मुझे मेरे होटल तक छोड़ने आया। खाड़ी के किनारे ढलती शाम के सायों में देर तक हम टहलते बतियाते रहे। वह मुझे अपने नगर के बारे में बताता रहा, अपने व्यवसाय के बारे में, इस नगर में अपनी उपलब्धियों के बारे में। वह बड़ा समझदार और प्रतिभासंपन्न व्यक्ति निकला। आते-जाते अनेक लोगों के साथ उसकी दुआ सलाम हुई। मुझे लगा शहर में उसकी इज़्ज़त है। और मैं फिर उसी उधेड़बुन में खो गया कि इस आदमी का वास्तविक रूप कौन सा है? जब वह यादों में खोया अपने देश के लिये छटपटाता है, या एक लब्धप्रतिष्ठ और सफल इंजीनियर जो कहां से आया और कहां आकर बस गया और अपनी मेहनत से अनेक उपलब्धियां हासिल कीं?

विदा होते समय उसने मुझे फिर बांहों में भींच लिया और देर तक भींचे रहा, और मैंने महसूस किया कि भावनाओं का ज्वार उसके अन्दर फिर से उठने लगा है, और उसका शरीर फिर से पुलकने लगा है।

यह मत समझना कि मुझे कोई शिकायत है। ज़िंदगी मुझपर बड़ी मेहरबान रही है। मुझे कोई शिकायत नहीं है, अगर शिकायत है तो अपने आप से। फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह हंस कर बोला, हां एक बात की चाह मन में अभी तक मरी नहीं है, इस बुढ़ापे में भी नहीं मरी है कि सड़क पर चलते हुए कभी अचानक कहीं से आवाज़ आये 'ओ हरामजादे!' और मैं लपक कर उस आदमी को छाती से लगा लूं, कहते हुए उसकी आवाज़ फिर से लड़खड़ा गयी। ●

बेटी : एक ग़ज़ल

बेटी : एक ग़ज़ल
दूसरा मत प्रकाशन
नई दिल्ली-110059
Rs. 299
ISBN:978-81-959547-8-0
ए आर आज़ाद
डा. विश्वनाथ त्रिपाठी

ज़िद दिल की
Rs. 250
दूसरा मत प्रकाशन
नई दिल्ली-110059

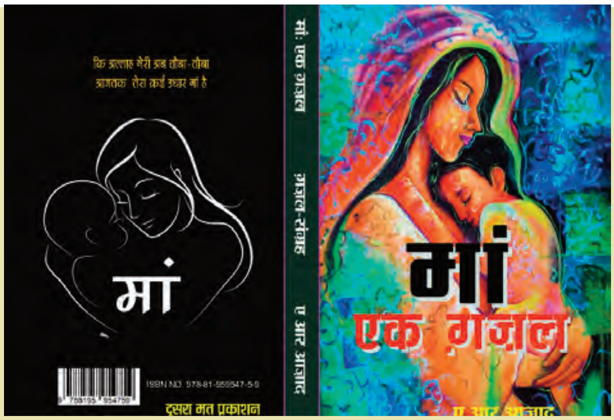
मां
मां एक ग़ज़ल
दूसरा मत प्रकाशन

रेल की पटरियां
ए आर आज़ाद

तस्वीर
ए आर आज़ाद

तुम कहो न
ए आर आज़ाद

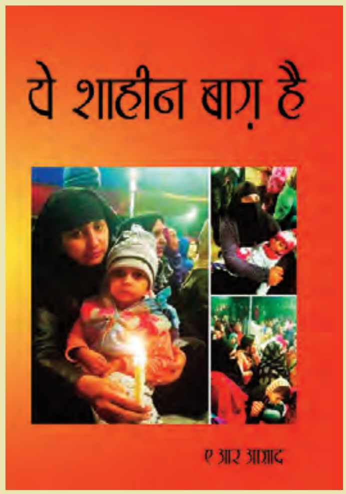
ये शाहीन बाग़ है
ए आर आज़ाद

'दूसरा मत' प्रकाशन

'आमने-सामने' अपने-आप में एक ऐतिहासिक इंटरव्यू-संग्रह है। इस संग्रह में देश की 62 अहम शख्सियतों एवं हस्तियों के साक्षात्कार शामिल हैं। यह संग्रह देश ही नहीं विदेशों में भी खासा चर्चित रहा है।

देश के जाने-माने प्रकाशन 'राजपाल' के प्रकाशक एवं डीएवी मैनेजमेंट कमिटी के वायस प्रेसिडेंट विश्वनाथ जी ने अपने पत्र में स्पष्ट लिखा है, -"इस तरह के विशाल इंटरव्यू-संग्रह देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अभी तक नहीं आए हैं।

आमने-सामने (मूल्य 750/)

सामना (मूल्य 1100/)

'सामना' भी एक महत्वपूर्ण इंटरव्यू-संग्रह के तौर पर 'आमने-सामने' की तरह सामने आया है। इसे भी शख्सियतों एवं साक्षात्कार की कला को कुबुल करने वाले लोगों ने हाथों-हाथ लिया है। इस संग्रह में देश की विभिन्न क्षेत्रों की 82 हस्तियों की इंटरव्यू की शक्ल में लेखा-जोखा एवं उनकी हस्ती की पड़ताल है।

अपने-अपने क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होने वाले और देश व दुनिया के सामने अपना लोहा मनवाने वाले लोगों के एक समूह विशेष इस अंक में शामिल हैं।

45 YEARS OF EXCELLENCE
महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं
!! RADHA SOAMI JI !!
Kasturi Jewellers®
SINCE 1978
100% HALLMARK JEWELLERY SHOWROOM
#GOLD #DIAMOND JEWELLERY #SOLITAIRES
100% Lifetime Maintenance Free
100% Buy Back Diamond Jewellery
100% Certified Diamond Jewellery
Shop No. 15, 16, 17, 18, SDM Market, Mangal Bazar Road, Uttam Nagar, New Delhi-110 059
Shop No. 54-55, Main Pankha Road, Opp. Sagar Pur Police Station, New Delhi-110 046
Kasturi Lal Ph. 98186 09444 | Manish (Monu) Ph. 98186 11313

विगत 23 वर्षों से देशहित में समाज-निर्माण के संकल्प के साथ

न हम डरते है न डराते हैं
हम देशप्रेम की भावना जगाते हैं

अगर आप में है जोश और
देश से प्यार

तो आइए दिल्ली से प्रकाशित
राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका
दूसरा मत
के साथ

अगर शिक्षक, प्रोफेसर, इंजीनियर और डॉक्टर बनते हो तो हमेशा एक ही काम करोगे लेकिन पत्रकार बनते हो तो दुनिया समझने को मिलेगी, दुनिया समझाने को मिलेगी। दुनिया को पढ़ने का मौक़ा मिलेगा, दुनिया को पढ़ाने का मौक़ा मिलेगा

हम आपके हाथ में देते हैं क़लम
समाज-निर्माण की ताक़त के साथ।

योग्यता
खबरों की समझ
और देश के साथ
सच्ची प्रेम-भावना

सोचो, समझो और **दूसरा मत** से जुड़ो

संपर्क : +91-9643709089